# सो बूझे जिस आप बुझाए
# भाग - म तों ड़

(निहकलंक हरि शब्द भंडार चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

**मन** : अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणा के। विच्च आपणी जोत जगा के। मन मति बुद्धि उपा के। जीव दी काया बणा के। (६ भादरों २००६ बि)

सतिगुर किरपा मन जाए टिक, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। इष्ट स्वामी बणे इक्क, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जो वसे सरीर सदा नित्त, नवित्त आपणी कार कमाईआ। जगत नेत्र ना पए दिस, निझ लोचन नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया लाहे विस, अमृत रस बूंद सवांती आप चवाईआ। जन्म विच्चों जन्म दा लेखा लए लिख, कर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। बज़र कपाटी पाड़ के इट्ट, पाहन पाथर दूर कराईआ। दरस दिखाए घर आत्म निझ, गृह मन्दर वज्जे वधाईआ। शब्द शब्द सतिगुर सतिगुर शब्द मन बंनूण दी साची बिध, अवतार पैगम्बर गुर सारे गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा मेल मिलाईआ।

मनुआ मन ना जाए नट्ठ, सतिगुर डोरी शब्द बौनाईआ। वेख वखाणे तत्त अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मत बुद्ध खोज खुजाईआ । सुरती सुरती देवे हठ, मेहरवान सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। निझ नेत्र खोल्ल के अक्ख, प्रतक्ख मिले बेपरवाहीआ। आत्मा रहण ना देवे वक्ख, परमात्म आपणा नूर जोत करे रुशनाईआ। हकीकत दा भेव खुल्लाए हक़, होका हक़ हक़ सुणाईआ। जैकारा लाए नाद शब्द धुन अलक्ख, अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। उस वेले मन मनसा मनुआ जाए ढठ्ठ, बलहीन निव निव लागे पाईंआ। फेर प्रकाश होवे जोती लट लट, गृह मन्दर डगमगाईआ। मेल मिलाए पुरख समरथ, समरथ स्वामी आपणा गृह विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा मन मनसा मन ही विच्च समाईआ।

मनुआ चार कुण्ट ना सके दौड़, दिवस रैण भज्जे ना वाहो दाहीआ। सतिगुर किरपा रस

रहे कोई ना कौड़, अमृत रस दए भराईआ। सच दवारे ला के धर्म धार दा पौड़, पौड़ी डण्डा इक्को दए वखाईआ। जिथ्थे निर्मल धार ब्राह्मण गौड़, गौड़ी राग जिस नूं सीस निवाईआ। मनसा मन ना होवे चोर, ठग्गी चोरी ना कोई कमाईआ। अंदरों मिटे अन्धेरा घोर, नूरी चन्द करे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर बंने आपणी नाम दी डोर, डोरी आपणे हत्थ रखवाईआ। तिन्नां गुरमुखां भगतां सन्तां भाग होण मथोर, मिथ्या दिसे लोकाईआ। मन पा ना सके शोर, उच्ची कूक ना कोई सुणाईआ। झगढ़ा ना रहे ज़र ज़ोरू ज़ोर, ज़र्रा ज़र्रा इक्को नूर नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा घर, गृह मन्दर वज्जदी रहे वधाईआ।

मनुआ मन बड़ा चलाक, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। किसे दा अंदरों खुल्हण ना देवे ताक, बजर कपाट पर्दा ना कोई खुल्हाईआ। चार कुण्ट धूड़ उडावे ख़ाक, ख़ाकी बन्दे मानस वेख वखाईआ। कल्पणा दी चढ़या रहे राक, मनसा जगत जहान भवाईआ। कूड़ कुड़िआर दी अन्धेरी रक्खे रात, नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। सति सच दी मिले किसे ना दात, वस्त अमोलक झोली कोई ना पाईआ। जिन्नां उत्ते सतिगुर किरपा करे आप, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म देवे जाप, साचा ढोला अगम्म अथाहीआ। त्रैगुण माया मेट के ताप, त्रैभवन धनी आपणा रंग रंगाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक कर के पाक, पत्तत्त पुनीत साचा रंग रंगाईआ। निरगुण धार सरगुण हो के पुच्छे वात, पर्दा उहला आप उठाईआ। मनुआ मन मन तों मिले नजात, मनसा मन ना कोई भवाईआ। सो हरिजन गुरमुख पारजात, पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। जिन्नां दा लेखा नाल कमलापात, पतिपरमेश्वर आपणा भेव दए खुल्हाईआ। मन कहे मैं उन्नां गुरमुखां दे चरनी जाणा लाग, जिन्नां दा मालक इक्को इक्क अगम्म अथाहीआ। जिस गृह दीपक जोत जगे चराग, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ।

मन कहे मैनूं गाउँदे चार जुग दे मुनी रिखी, सूफ़ी सन्त फ़कीर देण गवाहीआ। ग्रन्थ शास्त्र वेद पुरान अञ्जील कुरान मेरी धार लिखी, कलम छाही नाल वडयाईआ। मेरी खेल आदि दी आदि जुग दी जुग सदा सदा निक्की, निक्कयां वड्डयां दिआं सुणाईआ। मेरी समझ सके कोई ना मिती, दिवस रैण परविष्टा सके ना कोई समझाईआ। मैं घर अंदर काया मन्दर सरीर विच्च संदेशा देवां बिनां लिखी होई चिठ्ठी, पत्रका मनसा वाली समझाईआ। जगिआसूओ संसारीओ जगत विभचार पंच विकार वाली प्रभ तों मिठ्ठी, सच दा रस हत्थ किसे ना आईआ। मेरी खेल सदा अनडिठ्ठी, जगत नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी मेरा मालक बेपरवाहीआ। मन कहे जद डिग्गा मैं ते डिग्गा हरि के दवार, गुरू गुरदेव सीस निवाईआ। जो सदा सदा सद बख्शणहार, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। जिस दी धार विच्च तेई अवतार, रामा कृष्ना रंग रंगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खेल कीता अपार, अपरम्पर आपणी कल वरताईआ। नानक गोबिन्द खेल विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। मन कहे मैं बड़ा बलकार, बलधारी इक्क अखवाईआ। मेरा नूर जोत अकार, निराकार नज़री आईआ। मैं नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप समुंद सागराँ धरनी धरत धवल धौल खेल खेलां अपर अपार, अपरम्पर

हो के आपणी कार भुगताईआ। मन कहे बिनां सतिगुर शब्द तों मैनूं देवे कोई ना हार, मेरा सीस झुकण कदे ना पाईआ। जिन्नां उत्ते किरपा करे आप निरँकार, निरवैर मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तिन्नां भगतां मन कहे मैं निउँ निउँ करां निमस्कार, डण्डावत विच्च धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हत्थ रखाईआ। (२१ सावण शहनशाही सम्मत ८)

**मनमत :** मनमत करे बेमुख, गुरमत भुल्ली जगत लोकाईआ। मन वासना लग्गा दुःख, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। माणस जन्म मिल्या मनुख, हँस रूप नज़र ना आईआ। कूड़ी क्रिया रक्खी चुग, जिह्वा काग वांग कुरलाईआ। अन्तर आत्म गई ना झुक, जग माटी सीस झुकाईआ। प्रेम प्रीती अंदर लिआ ना पुच्छ, प्रभ दस्से बेपरवाहीआ। बिन अमृत बूटा रिहा सुक, गुर गोबिन्द गिआ समझाईआ। निरवैर पुरख अंदर बैठा लुक, कलिजुग जीव नज़र ना आईआ। मन हँकारी रिहा बुक्क, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । गुर शब्दी हिरदे हरि वसाई ना साची तुक, तुख्म हक़ ना कोई अखवाईआ। माया ममता आसा तृसना लग्गी भुक्ख, सतिगुर चरन प्रीत ना कोई वधाईआ। जूठ झूठ बूटा दित्ता ना पुट्ट, सच सुच्च नज़र किसे ना आईआ। ठग्ग चोर यार काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहे लुट्ट, खण्डा नाम हत्थ ना कोई चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद रिहा समझाईआ। मनमुख जीव जगत विकार, कूड़ी क्रिया बंधन पाईआ। जिन्नां अन्तर आत्म इक्क प्यार, सो गुरमुख रूप वटाईआ। सतिगुर चरन करन निमस्कार, निमख निमख आपणा मन कटाईआ। इक्को ओट पुरख अकाल, दूजी आस ना कोई रखाईआ। शब्द गुरू चले सद नाल, निरगुण सरगुण विछड़ कदे ना जाईआ। पुच्छणहारा मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। त्रैगुण माया तोड़नहार जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। जो गुरसिख काया मन्दर अंदर वड़े सच्ची धर्मसाल, तिन्नां मनमुख कोई कहण ना पाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। अमृत आत्म मारे इक्क उछाल, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ।
पढ़ पढ़ सुण सुण ना आए यकीन, यक्के बाअद दीगरे लए जणाईआ। नानक निरगुण कर के गिआ तलकीन, चार वरन समझाईआ। हरि का मार्ग इक्क महीन, पान्धी कोई चल ना सके राहीआ। जो जन साहिब सतिगुर होए मस्कीन, मन वासना मेट मिटाईआ। आस प्यास रक्खे जिउँ जल मीन, नेत्र नैण इक्को इक्क तकाईआ। बुध मत गुर शब्दी होए अद्धीन, सुरती सतिगुर सरन सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिलासा तन जणाईआ। (२६ जेठ २०२० बिक्रमी)

मनमत जगत वपार, सृष्ट सबाईआ। मनमत बेमुहार, दिस किसे ना आईआ। मनमत ना कोई सके विचार, उलटी धारा इक्क रखाईआ। मनमत तन मन्दर करे खुआर, भरम भुलेखे रही भुलाईआ। मनमत कलिजुग वासा अंदरे अंदर, कूड़ भरवासा रही दवाईआ। मनमत करे अन्धेर काया कंदर, झूठा जंदा रही लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, अचरज माया कल वरताईआ।

मनमत मत प्रधान। किसे ना रक्खे कोई पत्त, चारों कुण्ट जीव शैतान। आत्म धीरज तुटा सति, दिवस रैण बेईमान। जूठी झूठी उबले रत्त, माया झूठा पीण खाण। सृष्ट सबाई लथ्थी सथ, जूठा झूठा पवण मसाण। पंच पंचाइणी रिहा मथ, लोभ हँकारा फड़ वदान। गुरमुख विरला चढ़े साचे रथ, जिस किरपा करे आप भगवान। जगत वसूरे जाइण लथ, दर घर साचे दर्शन पाण । लेखा चुके सीआं साढ़े तिन्न हत्थ, अन्तम अन्त ना फेर पछताण। जोती जामा हरि समरथ, आपे गोपी आपे काहन। आप चलाए आपणी रथ, सोहँ शब्द सच निशान। प्रगट होए जिउँ रामा घर दसरथ, शब्द फड़े तीर कमान। राज राजानां पाए नथ, बली बलवाना विच मैदान। एका सोहँ सुरती भथ्थ, रसना चिल्ला तीर कमान। पुरख अबिनाशी अकथ्थना अकथ्थ, प्रगट होए वाली दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग दित्ता इक्क वर, मनमत होई जगत प्रधान।

मनमत वड्ड गवारन, बेमुखां कल परनाईआ। ना कोई जाणे साची धारन, जूठा झूठा वणज कराईआ। ना कोई सके पैज सवारन, आत्म हँकारन इक्क रखवाईआ। आपे जाणे आपणी कारन, कलिजुग काला वेस वटाईआ। चारों कुण्ट शाह सवारन, भौंदी फिरदी वाहो दाहीआ। गुरमुख साचे दर दुरकारन, दर दवारा लंघ ना पाईआ। दूरों जोड़ करे निमस्कारन, प्रभ शब्द खण्डा रिहा वखाईआ। आपे मारे साची मारन, तीर निशाना इक्क लगाईआ। सोहँ शब्द जै जैकारन, गुरसिख काया मन्दर भाग लगाईआ। इक्क वखाए पार किनारन, शब्द बेड़े रिहा चढ़ाईआ। जोती नूर कर उजिआरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा रिहा लिखाईआ।

मनमत जगत ललकारन, नौजवानया। आपे वेखे शाह सवारन, जीव जंत जंत निधानया। घर घर बैठे सर्ब विचारन, दर दवारा किसे ना साचा माणिआ। वेले अन्तम आए हारन, ना कोई किसे छुडाणिआ। गुरमत होए मात उजिआरन, वड झुलाए नाम निशानया । भगत सुहेला पाए सारन, साचा मेला वाली दो जहानया। ना कोई करे मात उधारन, अमृत बरखे साचा सावण, धार ठंडी ठार रखानया। नेड़ ना आए कामनी कामन, पुरख अबिनाशी धुर दरगाही सच्चा जामन, ठंडी छाएं एका राह सच वखानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा आपे देवे गुर मत करे प्रधानया। (१२ जेठ २०१२ बिक्रमी)

मनमत जगत विभचार, गुरमत हरि शरनाईआ। पंज तत्त विकारा जगत हँकार, नाम वथ वड्डी वडयाईआ। जूठ झूठ मोह प्यार, चरन कँवल सहज सुखदाईआ। गुरसिख साची सच विचार, अन्तर मंत्र हरि लिव लाईआ। मेटे गढ़ काया हँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दुरमत मैल धवाईआ।

मन अन्धला माया मत, दिवस रैण अन्धेरा। गुर सतिगुर पूरा जाणे मित गत, सद वसण नेरन नेरा। जिस जन दया कमाए कराए साचा हित्त, चुकाए हेरा फेरा। दरस दिखाए नित नवित्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे तारे कर कर मेहरा। (४ मध्घर २०१५ बि)

पूरन मेला कृष्ना काहन, रूप आप अखवाइंदा। साची गोपी कर परवान, आपणे अंग लगाइंदा। अठ्ठे पहर वेखे मार ध्यान, आलस निंदरा विच्च ना आइंदा। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। पूरन पूरा देवे माण, दर घर साचे माण आपणा आप रखाइंदा। शब्द जणाई धुर फ़रमाण, लोकमात डंक वजाइंदा। साध सन्त जीव जंत पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मुल्लां शेख़ मुसाइक कोई ना सके पछाण, नेत्र दिस किसे ना आइंदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान पा पा दस्सण रवाण, हत्थ ना कोई फड़ाइंदा। उच्ची कूकण वड विद्वान, हरि का रूप नज़र ना आइंदा। लक्ख चुरासी कलिजुग अन्तम घटा रही छाण, नाम अनमुलड़ा साचा लाल हत्थ किसे ना आइंदा। जगत प्रीती पीण खाण, आत्म तृप्त ना कोई कराइंदा। घर घर मनमत वेसवा नार दुकान, कूड़ कुड़िआरी सेज हंढाइंदा। पीर फकीरां भुलया हरि मेहरवान, जगत पनाह ना कोई सुणाइंदा। दीन मज़हब ईमान आपणा आप रहे वखाण, साचा कलमा अमाम ना कोई पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, पूरन पूरन मेल मिलाइंदा। (१ फग्गण २०१५ बि)

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची डाइण इक्क समझाइंदा। साची डाइण मनमत, जीवां जंतां रही सताईआ। गुरमुख विरला जाणे ब्रह्ममत, पारब्रह्म जिस विद्या इक्क पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा चरन कँवल बंधाए साचा नत, शब्द खण्डा हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। (६ जेठ २०१७ बि)

कलिजुग अन्तम गुर नानक लग्गी सट्ट, गुरमुख कोई नज़र ना आईआ। जिन्हां दे के आया नाम सति, नाम सति गए भुलाईआ । जिन्हां जणाई ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या कर पढ़ाईआ। जिन्हां अंदर रखाया धीरज सति, सतिवाद नींह रखाईआ। तिन्हां भुलया कमलापत, बैठे मुख छुपाईआ। मैं कह के आया कलिजुग औणा पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जो सरनी जाए ढठ्ठ, वेले अन्त लए बचाईआ। जो दर तों जाए नट्ठ, गुर नानक ना दए गवाहीआ। गोबिन्द आपणी लाई लेखे रत, गुरसिख रती मुल ना पाईआ। घर घर आई मनमत, गुरमत गए भुलाईआ । आपणा बैठे सत्थर घत, यारड़ा सथर गए भुलाईआ। अन्तम खेड़ा होणा भट्ठ, ना सके कोई बचाईआ। मैं दूई द्वैत मेट के आया फट, मेरयां सिखां मेरा फट दित्ता चराईआ। मैं खोल्ह के आया साचा हट्ट, राम दास सेवा लाईआ। ओथे नफ़ा सके ना कोई खट, जो आए जाए पत गवाईआ। मेरे प्रेम प्यार ज़ख़म उत्ते विकार लूण रहे घत, कुकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जे कोई सच्ची देवे दस्स, अगों बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण मिल्या हरि, हरि नानक रूप वटाईआ।

नानक फट लगा घा, घाओ सके ना कोई मिटाईआ। लोकमात आया बेपरवाह, परवाह ना कोई रखाईआ। जिस चलाए आपणे राह, सो राह गए भुलाईआ। अन्त कौण पकड़े बांह, बिन हरि ना कोई छुडाईआ। जो हरि गए भुल्ला, नानक गुर ना दए सफ़ाईआ। कलिजुग अन्त फट लगा आ, मनमुखता आपणा वार रही चलाईआ। गुरमुख वेख चढ़या चा, सतिगुर

नानक खुशी मनाईआ । सिँघ गिरधार सेव रिहा कमा, जिस दी सार किसे ना पाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सीस आपणे लए उठा, बिन हत्थां सेव कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेशा आप जणाईआ। (१८ कत्तक २०१८ बि)

धरनी कहे मनमत देवे होका, कूक कूक सुणाईआ। फिरे दरोही चौदां लोकां, चौदां तबक वेख वखाईआ। जगत जहान होया होछा, सति सन्तोख ना कोई धराईआ। ऐस वेले इक्क कलिजुग उत्ते रोसा, जो कलकाती घर घर डेरा लाईआ। जिस तन शरीरां अंदर मार के गोता, माणक मोती बाहर दित्ता कढ्ढाईआ। तन वजूद कर के थोथा, माटी भाण्डे खाली दित्ते चमकाईआ। अंदर मनुआ माणदा मौजा, आपणी लै अंगढ़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रला के फौजा, फौजदार हो के वेख वखाईआ। सति धर्म नूं कीता मूधा, सदी चौधवीं चल्लण देवे ना कोई चतुराईआ। दीनां मज़हबां भाउ वखाया दूजा, एका रंग ना कोई समाईआ। सति दी नींद कोई ना सौंदा, गफ़लत कूड़ ना कोई मिटाईआ। मन मनसा अंदर जगत जहान भौंदा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस रूप बणाया काउँ दा, काग वांग कुरलाईआ। वणजारा होया आपणे गाउँ दा, मतलब आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ। (७ फग्गण श सं ८)

**मनमुख :** एका बंधन हरि करतारा, लक्ख चुरासी पाइंदा। लक्ख लक्ख गेड़ा विच्च संसारा, जून अजूनी आप भुआइंदा। गुरमुख मनमुख आप चलाए दोवें धारा, माणस मानुख खेल खलाइंदा। आपे डोबे आपे होए तारनहारा, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। (२२ जेठ २०१८ बि)

हरिजन करे नाम परवान, मनमुख नेड़ कदे ना आईआ। हरिजन सुणे जस भगवान, मनमुख गूड़ी नीद सवाईआ। हरिजन मंगे एका दान, पुरख अबिनाशी घट घट वासी तेरा नाउँ मेरी वडयाईआ। मनमुख मंगे नाता पंज शैतान, जूठ झूठ वज्जे वधाईआ । दोहां खेल विच्च जहान, दो जहानां वाली आप खलाईआ। कलिजुग अन्तम हो प्रधान, परम पुरख आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, चारों कुण्ट दए समझाईआ। सो पुरख निरञ्जण नौजवान, हँ ब्रह्म लए परनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका नाम दए वडयाईआ। (२२ सावण २०१८ बि)

गुरसिख सच प्यार, गुर सतिगुर मेल मिलाया। मनमुख सच प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाया। गुरमुख सच प्यार, गुर चरन ओट तकाया। मनमुख सच प्यार, हउमे हंगता रोग वधाया। सन्तन सच प्यार, सति सतिवादी एका गुण गाया। मनमुख सच प्यार, झूठे धंदे मन चित लाया। भगतन सच प्यार, भगवन भगती इक्क दृढ़ाया। मनमुखां सच प्यार, माया ममता मोह वधाया। दोहां विचोला बण निरँकार, लोकमात खेल खलाया।

गुरमुख गुरसिख देवे सच प्यार, आपणा मंत्र नाम दृढ़ाया। मनमुख देवे सच प्यार, ठग्ग चोर यार बणाया। गुरसिख देवे सच प्यार, आत्म धुन नाद वजाया। मनमुख देवे सच प्यार, रातीं सौं सौं वक्त लंघाया। साचे सन्तां देवे सच प्यार, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया। मनमुखां देवे सच प्यार, नौं दर वासना विच्च फिराया। भगतां देवे सच प्यार, भगवन आपणा नूर दरसाया। मनमुखां देवे सच प्यार, कूड़ कुड़िआरा झोली पाया। दोहां विचोला बण निरँकार, लोकमात खेल खलाया। सच प्यार गुरसिख दात, आत्म ब्रह्म जणाईआ। सच प्यार मनमुख ज़ात, चार वरन लड़ाईआ। सच प्यार गुरसिख नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सच प्यार मनमुख घाट, वहिंदे वहण रिहा वहाईआ। सच प्यार सन्तन जात, जात अजाती दए खपाईआ। सच प्यार मनमुखां खात, डूंघे सागर दए रुड़ाईआ। सच प्यार भगतन पुच्छे वात, आदि जुगादि होए सहाईआ। सच प्यार मनमुखां देवे मात, राए धर्म हत्थ फड़ाईआ। दोहां विचोला पुरख अबिनाश, लोकमात खेल खलाईआ। (२७ सावण २०१८ बि)

मनमुख जीव जगत विकार, कूड़ी क्रिया बंधन पाईआ। जिन्हां अन्तर आत्म इक्क प्यार, सो गुरमुख रूप वटाईआ। सतिगुर चरन करन निमस्कार, निमख निमख आपणा मन कटाईआ। इक्को ओट पुरख अकाल, दूजी आस ना कोई रखाईआ। शब्द गुरू चले सद नाल, निरगुण सरगुण विछड़ कदे ना जाईआ। पुच्छणहारा मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। त्रैगुण माया तोड़नहार जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। जो गुरसिख काया मन्दर अंदर वड़े सच्ची धरमसाल, तिन्हां मनमुख कोई कहण ना पाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। अमृत आत्म मारे इक्क उछाल, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ। (२६ जेठ २०२० बि)

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहन्दे, श्री भगवान अग्गे सुणाएआ। चारों कुण्ट सति मनारे खेड़े ढहंदे, साचा बुरज नज़र ना आईआ। कूड़े मार्ग मनमुख जीव पैंदे, पैंडा हक़ ना कोई मुकाईआ। दीन मज़हब इक्क दूजे दे नाल खहिंदे, ज़ात पात करे लड़ाईआ। चार वरन इक्ठे हो किते ना बहन्दे, नानक गुर गोबिन्द सिख्या गए भुलाईआ। ना मुरदे ना दिसण जींदे, माणस जन्म रहे लुटाईआ। प्रभ सरनाई ना कोई थींदे, थिर घर मेल ना कोई मिलाईआ। कूड़ी मदिरा सारे पींदे, गोबिन्द तेरा अमृत पीण कोई ना आईआ। कूड़ी निंदरा सुत्ते नींदे, ज्ञान अक्ख ना किसे खुल्हाईआ। कलिजुग हुलारे चढ़ी पींघे, अन्तम टुट्टण वेला आईआ। जिउं किरसाण बीज बींदे, फल वढण चाईं चाईंआ। गुरमुख सच ध्यान रखींदे, सच तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। (२६ सावण २०२० बि)

लोकमात तेरा राह, सो सतिगुर आप जणाईआ। शब्द गुरू सुआमी बण मलाह, बेड़ा साचा सच चलाईआ। लेखा जाणे अन्तरजामी थां थां, घट घट वेखे चाईं चाईंआ। जो जन हरि हरि जपदे नां, तिन्हां साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। जो मनमुख जीव हँस होए कां, काग वांग रहे कुरलाईआ। तिन्हां एथे ओथे मिले कोई ना थां, गुर अवतार पीर पैगम्बर दिसे

ना कोई सहाईआ। अन्तम नाता तुटे पिता मां, भाई भैण साक सज्जण सैण नार कन्त संग कोई ना जाईआ । बिन सतिगुर पूरे पकड़े कोई ना बांह, मंझधार पार ना कोई कराईआ। राए धर्म कोलों सके ना कोई छुडा, कुंभी नरक लेख ना कोई मुकाईआ। चित्रगुप्त लहणा सके ना कोई मुका, लिखया लेख ना कोई मिटाईआ। लाड़ी मौत कोलों सके ना कोई छुडा, अग्गे हो ना कोई बचाईआ। काल सभ नूं जाए चबा, दाड़ां आपणीआं हेठ रखाईआ। महांकाल रोवे दए धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । लक्ख चुरासी जीव जंत पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्को लउ मना, जिस मिलयां दुःख कोई रहण ना पाईआ। कोट जन्म दे बख्शणहार गुनाह, पतित पापी लए तराईआ। डुबदे पाथर पार दए करा, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। तिस दी मन्नो सदा रज़ा, सो रहीम रैहमान रहमत दए कमाईआ । साचा राम नज़री जावे आ, काहना इक्को बंसरी नाम सुणाईआ। मोर मुकट सीस जगदीस लए टिका, कँवल नैण नैण मटकाईआ। सुरती शब्दी मेला लए मिला, जोड़ी जोड़े एका थाईंआ। पारब्रह्म ब्रह्म लहणा देणा दए चुका, बाकी रहण किछ ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्क दूजे विच्च जाए समा, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग मार्ग इक्क जणाईआ। (८ अस्सू २०२० बि)

साचा खेल गुरमुख मनमुख, हरि करते धार चलाईआ। दोहां विच्च इक्को सुख, श्री भगवान रोग सोग ना कोई सताईआ। जे सारे सन्त भगत बणा के गोदी लए चुक्क, लक्ख चुरासी कायम रहण ना पाईआ । अन्त नूं सृष्टी जाए मुक्क, जूनी जून ना कोई भवाईआ। एह प्रभ ने पैहलों सोची सोच, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। बेशक सचखण्ड दवारे बैठा रहे ख़मोश, जन भगतां अठ्ठे पहर गीत गाए चाईं चाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इस दे विच्च सारे निरदोश, परम पुरख अकाल हुक्मे अंदर सारी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता करतार कुदरत कादर वेखणहारा वेखे विगसे बेपरवाहीआ। (१६ फग्गण २०२० बि)

**मज़न :** जन भगतो प्रभ चरन धूड़ सभ तों उत्तम श्रेष्ट मज़ना, दुरमत मैल धुआईआ। (२२ अस्सू श सं ६)

**मर्ज़ी पुरख अकाल :** अगम्मी मर्ज़ी पुरख अकाल, निरगुण निरवैर आप प्रगटाईआ। साची इछया कर त्यार, सो पुरख निरञ्जण खेल रचाईआ। हरि पुरख निरञ्जण हो त्यार, एकँकार भेव खुल्ह़ाईआ । आदि निरञ्जण दीपक बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता हो दयाल, श्री भगवान दए वडयाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे साची कार, करता पुरख करनी आप कमाईआ। सच दवारा रच सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, महल्ल अट्टल आप उपाईआ । निरगुण दीआ इक्को बाल, सच नूर करे रुशनाईआ। मुकामे हक़ हो के ख़बरदार, परवरदिगार खेल खलाईआ। आपणी मर्ज़ी कर प्यार, प्रेम प्रीती इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघराईआ।
साची मर्ज़ी श्री भगवान, आदि अन्ता आप जणाइंदा। सच दवारा वखाए इक्क निशान, दूजा

निशाना नज़र कोई ना आइंदा। जिस घर स्वामी वसे इक्को आण, निहकामी अन्तरजामी डेरा लाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, शहनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। नित नवित्त आदि जुगादि करे खेल महान, बेअन्त आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा।

आपणी मर्ज़ी कर हरि पुरख, अवल्लड़ी खेल खलाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोई जणाईआ। सच दवारे आपणा आपे करे दरस, आदरश आपणा आप जणाईआ। ना कोई ज़िमीं असमान ना फर्श , ख़ाकी रूप ना कोई वटाईआ। ना कोई नार कन्त ना दिसे मरद, मर्द मरदाना इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मर्ज़ी आप प्रगटाईआ।

साची मर्ज़ी गहर गम्भीर, हरि करता आप प्रगटाइंदा। मंज़ल चोटी चढ़ अख़ीर, सचखण्ड साचे डेरा लाइंदा। जोधा सूर बण के वड्डा बीर, जोबन आपणा इक्क हंढाइंदा। रूप रंग रेख ना कोई तस्वीर, ज़हूर आपणा आपणे विच्चों प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाइंदा।

साची मर्ज़ी करे भगवन्त, हरि करता वड वडयाईआ। आपे बण के नार कन्त, सच दवारे सेज सुहाईआ। निरगुण हो के निरगुण बणावे बणत, निरगुण मेला सहज सुभाईआ। निरगुण खेले खेल आदि अन्त, इक्क इकल्ला आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

आपणी रचना मर्ज़ी अंदर, हरि करता आप उपाईआ। सचखण्ड दवारे खोल्ह मन्दर, थिर घर देवे माण वडयाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई डूंघी कंदर, समुंद सागर नज़र कोई ना आईआ। नाद गीत ना कोई मंगल, धुनी धुन ना कोई शनवाईआ । शरअ शरीअत ना कोई संगल, मज़हब रूप ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ ।

आपणी मर्ज़ी हरि करतार, आदि पुरख प्रगटाईआ । शाहो भूप बण सिकदार, शहनशाह हुक्म वरताईआ। जननी जन बण अगम्म अपार, अलख अगोचर खेल वखाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, शब्दी नाउँ रखवाईआ। थिर घर साचे देवे वाड़, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। ना कोई दिसे चार दीवार, बाडी बणत ना कोई बणाईआ। सूरज चन्द ना कोई उजिआर, मण्डल मंडप ना कोई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मर्ज़ी आप प्रगटाईआ।

साची मर्ज़ी शब्दी धार, हरि करता कार कमाइंदा। शब्दी सुत कर प्यार, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा। भेव अभेदा खोल्ह कवाड़, अनभव आपणी कार जणाइंदा। तेरा मन्दर अगम्म अपार, दीवा बाती इक्क रुशनाइंदा। कमलापाती मीत मुरार, हरि सज्जण इक्क अखवाइंदा। साची मर्ज़ी सच विहारा कर निरगुण त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप दृढ़ांइंदा।

साची मर्ज़ी एकँकार एक, इक्क इकल्ला आप जणाईआ। शब्द स्वामी तेरी टेक, गुर गुर रूप वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खेडण खेड, हरि करता इक्को संदेसा रिहा जणाईआ। त्रैगुण

माया तेरा लेख, पंज तत्त करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी मर्ज़ी अंदर बणत बणाईआ।

साची मर्ज़ी सुणाए हरि करतार, शब्दी शब्द दए वडयाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। त्रैगुण माया भर भंडार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, चारे खाणी वंड वंडाईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेतज दए आधार, लक्ख चुरासी रूप वखाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, घर घर नाद सुणाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी कर ख़बरदार, बेख़बर ख़बर पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

साची मर्ज़ी करे प्रभ ठाकर, करनहार अखवाइंदा। दो जहान वेखे गहर गम्भीर डूंघा सागर, भेव अभेदा आपणे विच्च छुपाइंदा। जगत वणजारा बण सौदागर, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। पंज तत्त काया देवे आदर, आत्म परमात्म वंड वंडाइंदा। करता पुरख बण करीम कादर, कुदरत आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मर्ज़ी इक्को इक्क वखाइंदा।

साची मर्ज़ी करे गहर गम्भीर, गुणवन्ता वड वडयाईआ। देवे माण पंज तत्त सरीर, तत्तव तत्त इक्क बुझाईआ। चोटी चढ़ के बैठे आप अखीर, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। मारनहारा अणियाला इक्को तीर, तीर निराला आप चलाईआ। प्यावणहारा जाम ठंडा सीर, अमृत धार इक्क वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए बणाईआ। साचा लेखा बणाए आप, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी थापण थाप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाइंदा। निरगुण हो के सरगुण जाए आख, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा। तूं मेरा मैं तेरा करना जाप, जीवण जुगत इक्क समझाइंदा। नूर खुदाई नज़री आए पाक, पवित आपणी धार बणाइंदा। भाग लगाए काया माटी ख़ाक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा।

मर्ज़ी अंदर रचे संसार, लक्ख चुरासी जीव जंत उपाईआ। मर्ज़ी अंदर रव सस कर उजिआर, मण्डल मंडप सोभा पाईआ। मर्ज़ी अंदर पृथ्मी आकाश दए आधार, पुरी लोअ सोभा पाईआ। मर्ज़ी अंदर बोल सच जैकार, नाउँ निरँकार दए सुणाईआ। मर्ज़ी अंदर खेल करे अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। मर्ज़ी अंदर साचा हुक्म करे वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मर्ज़ी अंदर भेजे तेई अवतार, लोकमात सेव लगाईआ। मर्ज़ी अंदर ईसा मूसा मुहम्मद करे ख़बरदार, कलमा हक़ रसूल पढ़ाईआ। मर्ज़ी अंदर जन भगतां दए हुदार, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाईआ। मर्ज़ी अंदर गुर गुर रूप धरे आप निरँकार, दह दिशा खोज खुजाईआ। मर्ज़ी अंदर शास्त्र सिमरत वेद पुरान करे त्यार, सिफ्ती ढोला राग सुणाईआ। मर्ज़ी अंदर अठ्ठ दस गीता ज्ञान लाए अखाड़, भगत भगवान साचा भेव चुकाईआ। मर्ज़ी अंदर आवे जावे जुग चौकड़ी चार, नित नवित्त वेस वटाईआ। मर्ज़ी अंदर देवे दीदार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मर्ज़ी अंदर साचे सन्त लए उठाल, मन मंत्र इक्क समझाईआ। मर्ज़ी अंदर गुरमुख गुरसिख गोदी लए बहाल, फड़ बांहों गले लगाईआ। मर्ज़ी अंदर सतिगुर बणे दयाल, दीनां नाथां होए सहाईआ। मर्ज़ी अंदर रूप वटाए काल, लक्ख चुरासी आपे खाईआ। मर्ज़ी अंदर पावणहारा त्रैगुण माया जंजाल, मर्ज़ी अंदर साची सिख्या दए समझाईआ। मर्ज़ी अंदर अंदर आत्म वजाए

अनादी ताल, शब्द राग इक्क सुणाईआ। मर्ज़ी अंदर सुरत सवाणी करे बेहाल, बिहबल हो के दए दुहाईआ। मर्ज़ी अंदर काया मन्दर धर्म दवार दए वखाल, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। मर्ज़ी अंदर पुछे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। मर्ज़ी अंदर घालन रिहा घाल, गुर गुर आपणा भेव चुकाईआ। मर्ज़ी अंदर गुर चेले वेखे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। मर्ज़ी अंदर सभ दा हल्ल करे सवाल, जहालत कोई रहण ना पाईआ। मर्ज़ी अंदर शब्द गुरू बण के होए दलाल, दो जहानां बेड़ा पार कराईआ। मर्ज़ी अंदर लक्ख चुरासी वेखे पत्त डाल, फुल टैहणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मर्ज़ी विच्च आदि जुगादि खेल खलाईआ।

मर्ज़ी अंदर खेल अव्वला, सो पुरख निरञ्जण आप कराइंदा। हरि पुरख निरञ्जण धाम सुहाए निहचल इक्क अट्टला, सच दवारे डेरा लाइंदा। एकँकार सच सिँघासण धुर दा मल्ला, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। आदि निरञ्जण सच प्रकाश दीपक बला, दो जहानां डगमगाइंदा। अबिनाशी करते सति संदेश सच्चा घल्ला, निरअक्खर आप पढ़ाइंदा। श्री भगवान सच निशान इक्को झुल्ला, झलक आपणे नाम दृढ़ांइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू इक्को गंढ बंधाइंदा। साची मर्ज़ी अंदर वेखे जलां थलां, डूंघे सागर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा।

मर्ज़ी अंदर देवे दात, विष्न ब्रह्मा शिव झोली आप भराईआ। मर्ज़ी अंदर होवे साथ, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। मर्ज़ी अंदर जणाए गाथ, धुर दा ढोला राग सुणाईआ। मर्ज़ी अंदर मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा वेस वटाईआ । मर्ज़ी अंदर बणे पिता मात, पूत सपूत गोद उठाईआ। मर्ज़ी अंदर निज नेत्र खोल्हे आख, हरि सन्तां लए जगाईआ। मर्ज़ी अंदर प्रगट होए साख्यात, ज़ाहर ज़हूर रूप दरसाईआ। मर्ज़ी अंदर हरिजन बणाए पारजात, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मर्ज़ी अंदर लेखा लिख के गिआ कलम दवात, वाक भविख्त इक्क सुणाईआ। मर्ज़ी अंदर वरन बरन शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वेखे ज़ात पात, दीन मज़हब खोज खुजाईआ। मर्ज़ी अंदर होवे दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी सभ ने रक्खणी याद, भुल्ले जीव ना कोई लोकाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणौंदे रहे आवाज़, रसना जिह्वा कूक अलाईआ। जिस दा कलमा पढ़दे रहे निमाज़, सजदा इक्को घर वखाईआ। उस दी मर्ज़ी अंदर लक्ख चुरासी तन वज्जे रबाब, सतार नज़र किसे ना आईआ। सो मर्ज़ी अंदर गुर अवतारां पीर पैगम्बरां गिआ आख, शब्द संदेसा इक्क सुणाईआ। कलिजुग अन्तम वेखां खेल तमाश, निरगुण नूर रूप प्रगटाईआ। मेरी समझ ना आवे किसे ज़ात, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। सदी चौधवीं करां वफ़ात, फ़ातिहा सभ दा पढ़ां थाउँ थाईंआ। बीस बीसा वेखां हालात, हरि जगदीसा नाउँ धराईआ । नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मन वासना करे नाच, बुध बिबेक ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

प्रभ दी मर्ज़ी कहे सुणो जग मीत, हरि करता सच दृढ़ांइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया वेखो रीत, सच सुच नज़र कोई ना आइंदा । झगढ़ा पिआ मन्दर मसीत, गुरदर शिवदवाला मठ्ठ सर्ब कुरलाइंदा। आत्म दिसे ना कोई ठंडी सीत, मणका मन ना कोई भवाइंदा। मिले वड्डिआई ना कोई ऊँच नीच, अगम्म अथाह ध्यान ना कोई लगाइंदा। सच दवारे मिले ना

कोई भीख, भिच्छया नाम ना कोई वरताइंदा। उम्मत उम्मती साचा कलमा भुल्लया हदीस, हज़रत मेल ना कोई मिलाइंदा। नेत्र खोलु वेखो ठीक, गुर का शब्द नज़र किसे ना आइंदा। घर स्वामी सुत्ता दे कर पीठ, नेत्र अक्ख ना कोई खुलाइंदा। दूर दुराडा वसणहार नज़दीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा।

प्रभ दी मर्ज़ी कहे उठो जीव जंत जग, कलिजुग अन्त अन्धेरा छाईआ । आपणे अंदरों आपा लउ लभ्भ, क्यों बैठे मुख भवाईआ। नौं दवारे पन्ध मुकाओ हद्द, नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, कूड़ी क्रिया रहण ना पाईआ। साचा मन्दर वेखो लंघ, बण के पान्धी राहीआ। घर स्वामी सुणो छन्द, अठ्ठे पहर रिहा जस गाईआ। निज आत्म लउ इक्क अनन्द, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोई वडयाईआ। नूरी तेज चमके चन्द, चन्द सूरज दोवें नैण शरमाईआ । प्रभ दी मर्ज़ी नाल आपणी मर्ज़ी लउ गंढ, आत्म परमात्म घर घर वज्जे वधाईआ। काया चोली नाम मजीठे लउ रंग, दुरमत मैल धवाईआ। पुरख अकाल नूं मिलण दी नहीं कोई संग, पड़दा उहला जन भगतां रिहा चुकाईआ। लेखा चुके जमना सुरसती गोदावरी गंग, अमृत धार मुख चुआईआ। आत्म सेज सुहाए इक्क पलंघ, पावा चूल ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

प्रभ दी मर्ज़ी सभ नूं मारे ताअना, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलिजुग जीव एह देस बेगाना, थिर कोई रहण ना पाईआ। नेत्र खोले अन्तर अक्ख महाना, पड़दा उहला जगत चुकाईआ। दरस करो श्री भगवाना, जो आदि जुगादी सच्चा माहीआ। अंदरे अंदर सुणो नाम तराना, अनहद रागी राग सुणाईआ। एथे ओथे मिले माणा, दो जहान होए सहाईआ। वेला गिआ सर्ब पछताणा, जुग जुग पसचाताप करे लोकाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों माणस जन्म इक्क महाना, जिस विच्च मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

प्रभ दी मर्ज़ी नाल मिल्या इक्क कबीर, जगत काअबा दित्ता तजाईआ। नाता तुटा तत्त सरीर, ब्रह्म मत इक्को पाईआ। मेहरवान बदल दिती तकदीर, तदबीर आपणी इक्क समझाईआ। जल धार कट ज़ंजीर, शब्द डोरी तन्द वखाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी नाल मिल के चोटी चढ़ गिआ अख़ीर, जिस घर वसे शहनशाहीआ । जलवा तक्क बेनज़ीर, आपणी नज़र नज़र नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा समझाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी मेटे मरज़, हउमे रोग चुकाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी सदा ग़रज़, अबिनाशी करता आप रखवाईआ। दीन दयाल हो के वंडे दर्द, दुखीआं दुःख आपणी झोली पाईआ। एहो खेल जुगो जुग अचरज, हरि का भेव कोई समझ सके ना राईआ। लेखा जाणे प्रगट हो के जोधा सूरबीर वड मर्द , मर्द मरदाना आपणा नाउँ धराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करी मनज़ूर अर्ज़, आरज़ू आपणे लेखे लाईआ। कलिजुग अन्तम पूरा करन आया फ़र्ज़, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। हरिजन साचे होण ना देवे हर्ज, अगला पिछला पूरब लहणा झोली पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मर्ज़ी अंदर इक्को मज़ा नाम चखाईआ।

प्रभ दी मर्ज़ी चंगा मज़ा, मरीज़ रहण कोई ना पाईआ। राए धर्म ना देवे सज़ा, चित्रगुप्त लेख ना कोई जणाईआ। नेड़ ना आवे लाड़ी मौत कज़ा, जूनी जून ना कोई भवाईआ।

श्री भगवान जुग जुग जन भगतां पिच्छे फिरे भज्जा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे वेखणहारा बेपरवाहीआ।

प्रभ दी मर्ज़ी वेखे कलिजुग मर्ज़ी, मर्ज़ी मर्ज़ी विच्चों प्रगटाईआ । साहिब सतिगुर पुरख अकाल कोई ना दिसे तेरा दर्दी, तेरी लोड़ नज़र ना आईआ। बेशक रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा नाउँ पढ़दी, अंदर तेरा रूप वेखण कोई ना जाईआ। मन्दर मसजद शिवदवाले मठ्ठ कलिजुग जीव जांदे फ़र्ज़ी, फ़रमांबरदार ना कोई अखवाईआ। साची सिख्या बुध बिबेक कोई ना पढ़दी, मनमत घर घर बैठी डेरा लाईआ। जगत वासना अग्गे हो के खड़दी, सोहणा सुहञ्जणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए समझाईआ। कलिजुग मर्ज़ी कहे मैं बड़ी चालाक, कलिजुग जीवां दित्ता भुलाईआ । अंदर वड़ के खोल़ सके ना कोई ताक, बजर कपाटी ना कोई तुड़ाईआ । पारब्रह्म तेरी मिले ना कोई ज़ात, आपणा आप ना कोई मिटाईआ । बन्दे ख़ाकी कीते ख़ाक, कूड़ी क्रिया विच्च रुलाईआ। जग नेत्र काम वासना रहे झाक, दिब नेत्र ना कोई खुल़ाईआ। लोभ मोह हँकार दित्ता साथ, अठ्ठे पहर करे लड़ाईआ। नाता तुटया पिता पूत बाप, सच्चा संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे वखाईआ।

कलिजुग मर्ज़ी कहे मैं वड्डी सोहणी, सोहणी रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी जिस ने कोहणी, सिर सके ना कोई उठाईआ। मेरा नाउँ रक्खया आदि जुगादी होणी, जिस दे हौके मरे सर्ब लोकाईआ। मैं चौदां लोक चौदां तबकां चौदां विद्या करनी बौहणी, लक्ख चुरासी आपणे विच्च टिकाईआ। मेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे ना भरी दोहणी, ख़ाली कासा रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लैणी उठाईआ। जीवां मर्ज़ी कहे मिले जग माया , ममता सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया संग निभाया , सच सुच ना कोई वडयाईआ। नार कन्त सेज बसन्त ना कोई हंडाया, सुंञीं रैण दए दुहाईआ। अंगीकार करता अंग ना कोई लगाया, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। जगत रंडेपा नज़री आया, सुहागण रूप ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा रिहा चुकाईआ।

जगत मर्ज़ी विच्चों भगतां मर्ज़ी गई जाग, कलिजुग विच्च आपणी अक्ख खुल़ाईआ। प्रभू नाम दा उपजे वैराग, बण वैरागण दए दुहाईआ। नाता तुटे सज्जण साक, बंधप नज़र कोई ना आईआ । कमली कोझी हो के रही झाक, नेत्र नैण अक्ख खुल़ाईआ। कवण वेला पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ मिले आप, आपणा फेरा पाईआ । आपणी मर्ज़ी दा दस्स के जाप, मेरी मर्ज़ी दए बदलाईआ। पिछला मेटे रोग सन्ताप, अग्गे दुःख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साचा हत्थ टिकाईआ।

भगतां मर्ज़ी बोले बोल, सोहणा राग सुणाईआ। साहिब सतिगुर तेरे वसां कोल, दूजा थान ना कोई सुहाईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर जावां मौल, बिसमल हो के सेव कमाईआ। गुर अवतारां नाल जो कीता कौल, पूरा कर के दे वखाईआ। तेरे नाम दा डंका वज्जे ढोल, दो जहान तेरा नाम ध्याईआ। सच दवारा देणा खोल़, कलिजुग जीवां मर्ज़ी दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होणा सहाईआ।

भगतां मर्ज़ी करे पुकार, वाह वा वज्जे नाम वधाईआ। कलिजुग जीवां मर्ज़ी लै उठाल, शब्द

हुलारा इक्क लगाईआ। तेरी मर्ज़ी दीन दयाल, दर्द दुःख भंजन इक्को भाईआ। तिन्नां मर्ज़ी मिल के तेरा सोहे बंक दवार, जिस घर वज्जे सच शनवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नौं सौ चुरानवी चौकड़ी जुग उतरे पार, नित नवित्त आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दे वखाईआ।

भगतां मर्ज़ी रही कूक, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। वज्जे नग़ारा चारे कूट, दह दिशा नाद सुणाईआ। कलिजुग नाता तोड़ जूठ झूठ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। हरि भगत उपा साचे पूत, पिता आपणी गोद सुहाईआ। उजल कर इन्नां मुख, जो बैठे तेरा नाम भुलाईआ। जन्म मरन दा कट दुःख, लक्ख चुरासी तन्द कटाईआ। घर आत्म परमात्म दे सुख, ब्रह्म पारब्रह्म हो सहाईआ। बेशक कलिजुग जीव भुल्ले बण मनुख, माणस हो के तेरी सार ना पाईआ। आपणी मर्ज़ी एन्नां गोदी चुक्क, एन्नां दी मर्ज़ी शौह दरया दे रुड़ाईआ। तेरी मर्ज़ी नाल अपराधी सच्चे बणन सुत, पत्तत्त पुनीत दे कराईआ। तेरी मर्ज़ी अंदर सभ कुछ, दो जहान भज्जण वाहो दाहीआ। कलिजुग जीवां पिछली मर्ज़ी जाए मुक्क, अगला हुक्म दे दृढ़ाईआ। तेरा नाम निधाना श्री भगवाना गावण मुख, सोहणा नाद सुणाईआ। सीस जगदीस सजदा करन झुक, गढ़ हँकार तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मुहब्बत दे सखाईआ।

सच मुहब्बत दे दलील, दर तेरे अरजोईआ। तुध बिन सच्चा दिसे ना कोई वकील, वुकला नज़र कोई ना आईआ। लक्ख चुरासी माणस करन अपील, बरीख़ाना दे वखाईआ। तूं दाता छैल छबील, शहनशाह इक्को इक्क नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहणा दे मुकाईआ। तेरी मर्ज़ी करे इनकशाफ़, खोजे थाउँ थाईंआ। कलिजुग मर्ज़ी होई ख़लाफ, वाअदा पूर ना कोई कराईआ। तुध बिन मेटे ना कोई इख़तलाफ़, दूई द्वैत ना कोई चुकाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा राख, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ। तेरा पत्तण तेरा घाट, तेरी नय्या नौका नाम नज़री आईआ। तेरा नाम तेरा शब्द तेरी दात, तेरा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्क वर, जन ढह पए सरनाईआ।

ढह पए सरना, सोच समझ ना कोई रखाईआ। साडी मर्ज़ी बख्श गुनाह, मर्ज़ी आपणी नाल मिलाईआ। बिन तेरे होए फ़नाह, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। अग्गे मिले ना कोई राह, रहबर कंध ना कोई चुकाईआ। किरपा कर नूरी खुदा, ख़ैरख़ाह हो के मेहर नज़र उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो सहा, सहायता करनी चाईं चाईंआ। सच मर्ज़ी अंदर मंगीए इक्क दुआ, असीस तेरे दर ते नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, धुर दी मर्ज़ी नाल हरिजन लैणे आप चलाईआ।

प्रभ दी मर्ज़ी जपणा नाम, सच्ची किरत समझाइंदा। अमृत आत्म पीणा जाम, मध प्याला इक्क वखाइंदा। मन ममता तोड़ना माण अभिमान, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। घर ठाकर स्वामी लैणा पहचान, दूई द्वैती पड़दा लाहिंदा। कलिजुग जीव ना भुल्ल अज्ञाण, अबिनाशी करता खेल खलाइंदा। जिस दी मर्ज़ी अंदर चले दो जहान, सूरज चन्द सेव कमाइंदा। सो साहिब सतिगुर देवणहारा दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। रातीं सुत्यां मिले आण,

दिने जागदिआं खुशी वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुशीआं अंदर देवे वर, घर घर विच्च सोभा पाइंदा।

घर विच्च सोभा सुभाएमान, सच दए वडयाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी को विरला गुरमुख जाणे विच्च जहान, दूसर हत्थ किसे ना आईआ। जगत मर्ज़ी भरम भुल्ले शैतान, दिवस रैण अठ्ठे पहर दुहाईआ। सतिगुर मर्ज़ी गुरमुख मिले माण, घर ठांडे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, मर्ज़ी अंदर देवे दान, चरन धूड़ बख्श इशनान, अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान, नाद धुन करे सच सच सच शनवाईआ। (११ जेठ २०२१ बि)

**मरना :** जो उपजया सो सभ ने मरना, थिर कोई रहण ना पाईआ । लक्ख चुरासी जूनी फिरना, नित नित वेस वटाईआ। जो जन पए सतिगुर चरनां, दोए जोड़ इक्क सरनाईआ। तिस भउ चुके अन्तम मरना, डर नज़र कोई ना आईआ। नेत्र खुल्हे हरना फरना, निज नेत्र करे रुशनाईआ। सच महल्ले इक्को वड़ना, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। उच्चे पौड़े गुरमुख चढ़ना, घर वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सृष्ट सबाई दए समझाईआ।

सृष्ट सबाई दए संदेसा, हरि सतिगुर बेपरवाहीआ। जिन्हां भुल्लया गुर पारब्रह्म नरेशा, तिन्हां पार ना कोई लंघाईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेतज चारे खाणी खेडा, खेडां खेल मुक कदे ना जाईआ। मरन तों बाअद जो गुरमुख जाणे भेदा, सो सतिगुर पए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।

मरन लग्गा जो हरि हरि ध्याए, इक्क अन्तर ध्यान लगाईआ। जून विच्च ना फेरा पाए, अजूनी रहित लए तराईआ। जिस दी आत्म सो परमात्म आपणे लेखे लाए, काया माटी तन ख़ाक मिलाईआ। साचा साथी बण के आए, निरगुण दाता वड वडयाईआ। कोट जन्म दे पापी लए तराए, जो अन्तर नर हरि नरायण इक्क ध्याईआ। उह वेला किसे हत्थ ना आए, कोटन कोट बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच सच जणाईआ।

अन्त रहे जे जगत वासना, वासता जगत बंधाईआ। लेखे लग्गे ना कोई स्वासना, माणस जन्म ना कोई वडयाईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर अन्तर वस्सया साथना, सो सगला संग बणाईआ। होए सहाई अनाथां नाथना, दीनां नाथ फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मरन पिच्छों कर्मां सेती सभ नूं गेड़े पाईआ। (३१ जेठ २०२० बि)

**मायाधारी :** मायाधारी करे खवारी। मायाधारी आत्म हँकारी। मायाधारी विषे विकारी। मायाधारी आत्म अन्ध अंधिआरी। मायाधारी दुष्ट दुराचारी। मायाधारी नित भोगे वेसवा नारी। मायाधारी प्रभ साचा दर दुरकारी। मायाधारी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए दर दर भिखारी।

माया माण छड्डया भगवान। आत्म अभिमान भुल्लया गुण निधान। अन्तकाल कल आई

हान। प्रभ अबिनाशी जाणी जाण। आत्म हँकारीआं माया धारीआं प्रभ आपे करे पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आप खपाए वड बली बलवान।
मायाधारी माया मोह। मायाधारी आत्म धरो। मायाधारी निमाणयां निताणयां कल रिहा कोह। मायाधारी बिरधां बाल अंञाणयां पीवे आत्म धोह। मायाधारी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए, लक्खो कख बणाए, दर दर फिराए ना कोई देवे थाउँ।
मायाधारी वड ज़ंजाला। माया धारी आत्म कंगाला। मायाधारी दुःख उपजाए सुख गवाए गरीब निमाणयां बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जोत प्रगटाए, आपणी सार समाला।
मायाधारी झूठा भेख। मायाधारी माया मोह झूठा वेख। मायाधारी करे खुआरी आप मिटाए झूठी रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम अन्त कल प्रगट जोत आप पछाड़े वेख वेख।
मायाधारी आत्म अन्ध। मायाधारी दर दरवाजे होइण बन्द। मायाधारी आप कटाए बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए सोहँ साचा संद। (२४ सावण श सं ६)

मायाधारी माया रूप। कलिजुग भुल्ले वड वड भूप। आत्म नगरी होई अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे जोत सरूप।
मायाधारी मदिरा मासी। वेख भेख खुलाए घनकपुर वासी। ना कोई दीसे शाहो शाबाशी। सृष्ट सबाई धर्म राए चढ़ाए फासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधरन पार जो जन सोहँ गाइण स्वास स्वासी। (५ जेठ २०१० बि)

**माणस जन्म :** माणस जन्म लेखा चुक्के मानव, हरिजन हरि हरि दया कमाइंदा। हरिजन मेले रूप धर धर बावन, बल आपणा आप वखाइंदा। दो जहानां बणे जामन, धुरदरगाही सेव कमाइंदा । निरगुण सरगुण फड़ाए दामन, एका पल्लू आप वखाइंदा। कलिजुग कूड़ कुड़िआरा मेटे रावण, राम रामा खेल खलाइंदा। अमृत मेघ बरसे सावण, निझर झिरना आप झिराइंदा। लेखा चुक्के आवण जावण, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म लेखे लाइंदा।
माणस जन्म चुक्के लेखा, गुर सतिगुर आप चुकाईआ। हरिजन हरि हरि आपणे नेत्र पेखा, जगत नैण ना कोई वडयाईआ। सेवक सेवा जाणे ब्रह्मा विष्न महेश गणेशा , दर दरवेशा फेरा पाईआ। वेस अनेक करया वेसा, अनक कल बेपरवाहीआ। हरिजन हरि हरि सदा सद आदेशा, नव नव आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म लेखे लाईआ।
माणस जन्म लेखा गिआ लग्ग, हरि सज्जण आप लगाया। मिल्या मेल सूरे सर्बग, दर घर साचे सोभा पाया। त्रैकाल दरसी त्रैगुण मेटे अग्ग, अगनी तत्त ना कोई जलाया। हँस सरोवर नुहाए कग, कबुध डूमणी मेट मिटाया। जाम प्याए अमृत मदि, नाम प्याला हत्थ उठाया। जगत विकारा देवे बध, बधक आपणे गले लगाया। सज्जण सुहेले हरि हरि सद्द, सच संदेशा नाम सुणाया। जगत जंजाल विच्चों कढ़ु, आप आपणा बंधन पाया। नाता तुट्टा

अन्धेरी खड्ड, डूंघा सागर वहण ना कोई वहाया। निरवैर जणाई विष्नूं यद, बंस सरबंसा आप बणाया। जगत वासना पार किनारा हद्द, हरि मन्दर हरिजन हरि हरि मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म दए समझाया।

माणस जन्म नव नव धार, निरगुण सरगुण आप चलाईआ। इक्क इक्क खेल करे सरकार, दोए दोए रूप अनूप वटाईआ। तीजा लोइण खोलू किवाड़, चौथे पद करे रसाईआ। पंचम मेला पुरख नार, नारी कन्त आप हो जाईआ। छेवें छप्पर छन्न तों वस्सया बाहर, महल्ल अट्टल बैठा आसण लाईआ। सतवें सति पुरख निरञ्जण सांझा यार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। अठां तत्तां दए आधार, आप आपणी दया कमाईआ। नौं दर लेखा जाणे सर्ब संसार, नव नौं लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। दह दिशा करे विचार, दहि सिर रावण मार हँकार, आत्म ब्रह्म दए आधार, निरगुण जोती जोत मिलाईआ। काया कंचन कोट गढ़ वेखे वेखणहार, डूंघी कंदर जगत भवरी सागर तरे तरनेहार, आर पार आपणे हत्थ रखाईआ। गुरमुख सज्जण लए उभार, जोती जाता हरि निरँकार, जीवण जुगत भगत भुगत आपणे हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस लेखा दए चुकाईआ। माणस लेखा आप चुकौणा, हरिजन साचा मेल मिलाईआ। जन्म मरन दा रोग मिटौणा, चिन्ता सोग ना कोई वखाया। सोहँ साचा जाप जपौणा, पारब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग रंगाया। दुरमत मैल धो निर्मल आप करौणा, अमृत जल सिंच हरया आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म वेख वखाया।

माणस जन्म लक्ख चुरासी धारा, चार खाणी वंड वंडाईआ। नव नौ जन्म विच्च संसारा, अजन्मा रूप वटाईआ। गुण अवगुण करे ना कोई विचारा, संसा रोग ना कोई मुकाईआ। लेखा लिखत जाणे ना जीव गवारा, लिखणहारा दिस ना आईआ। वाक भविख्त ना करे कोई विचारा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना उतरे पारा, कूड़ी क्रिया कलिजुग बंधन इक्क वखाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, सो पुरख निरञ्जण सच्चा शहनशाहीआ। कलिजुग प्रगटे अन्तम वारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। दूसर तक्के ना कोई सहारा, सीस जगदीश ना किसे झुकाईआ। करे खेल सभ तों नयारा, निरवैर रूप वटाईआ। एका हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मे अंदर रक्खे सर्ब लोकाईआ। एका खण्डा नाम तेज कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। हरिजन साचे करे प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, माणस लेखा आपणे हत्थ रखाईआ।

माणस मानुख उत्तम ज़ात, लक्ख चुरासी आप जणाइंदा। आदि अन्त पुच्छे वात, सन्त सतिगुर वेख वखाइंदा। जिस जन जणाए आपणी गाथ, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। इक्क दुआरा वखाए साचा हाट, वणज वणजारा एका नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, माणस जन्म आपणे लेखे धर, धरनी धरत धवल आप सुहाइंदा।

माणस जन्म धरनी दात, धवल वड्डी वडयाईआ। पूत सपूता बख्शे कमलापात, कँवल नैण नैण मटकाईआ। उत्तम रक्खे आपणी ज़ात, जोती जाता इक्क शहनशाहीआ। सन्त कन्त भगवन्त पुछे वात, आदि अन्त विसर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे बेपरवाहीआ।

हरिजन वेख माणस जन्म, पूरब लेखा आप मुकाईआ। नव नौं वेखे क्रिया कर्म, कर्म कांड

आप समझाईआ। सति सन्तोख एका धर्म, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। बिन हरि अवर ना कोई बरन, जगत बरन ना कोई लड़ाईआ। जिस जन बख्शे साची सरन, गृह मन्दर इक्क वखाईआ। नाता तुटे जन्म मरन, मरन जन्म विच्च ना आईआ। किरपा करे करनी करन, करनी करता किरत कमाईआ । गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सच दुआरे वड़न, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म पन्ध मुकाईआ ।

माणस जन्म मुक्के पन्ध, पान्धी पन्ध ना कोई वखाइंदा। रसना गौणा एका छन्द, छन्द सुहागी आप जणाइंदा। रसन तजौणा जगत विकारा गंद, माया ममता मोह मिटाइंदा। इक्क जणाए परमानंद, निज आत्म वेख वखाइंदा। माणस जन्म ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। घर निरगुण नूर चढ़ाए चन्द, जोती नूर नूर चमकाइंदा। हरिजन हरि हरि सदा बख्शंद, कर बख्शिश पार कराइंदा। माणस जन्म ना होए भंग, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे जीआ दान, आत्म परमात्म आपणा बंधन पाइंदा। (६ जेठ २०१८ बिक्रमी )

**मां :** साचा नाउँ हरि भगवान। सदा रखे ठंडी छाँ, जीव जंत विच्च जहान। आपे होए पिता मां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान । हँस बणाए गुरमुख कां, शब्द उडाए इक्क उडान। जोती जोत सरूप हरि, सोहँ हँसा हँस सरबंसा, माणक मोती चोग चुगान। (१८ हाढ़ २०१२ बि)

एकँकारा उत्तम जात है, जात पाती विच ना आए। सृष्ट सबाई पिता मात है, निर्मल जोती रिहा जगाए। (१७ चेत २०१३ बि)

**मैं किआ हूं :** मैं किआ हूं, हरि सतिगुर दए समझाईआ। ना हूं ना हां, नज़र कोई ना आईआ। ना शूं ना शां, चक्कर चिहन ना कोई वखाईआ। ना पिता ना मां, भैण भाई ना कोई अखवाईआ । ना ढोला ना नां, गीत अतीत ना कोई सुणाईआ। ना धुप्प ना छाँ, सूरज चन्द ना कोई रुशनाईआ । ना हत्थ पैर नक्क मूंह रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा, तत्तव तत्त ना कोई वडयाईआ। निरगुण नूर खेल बेपरवाह, शाह पातशाह आप कराईआ। पारब्रह्म प्रभ दया कमा, ब्रह्म आपणी वंड रखाईआ। त्रैगुण पंज तत्त आपणी इछिआ झोली पा, रकत बूंद काया माटी जोड़ जुड़ाईआ। साची हाटी आप बणा, सोभावन्त साहिब सुहाईआ। सरगुण रूप बाहर वखा, जगत जुगत वडयाईआ। अन्तर आपणा अंग टिका, निरगुण नूर नूर जोत रुशनाईआ। साहिब सुल्तान शहनशाह बेपरवाह आपणी धार चला, साची रचन रचाईआ। मैं तूं आप अखवा, आपणा आसण लाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म नाउँ प्रगटा, मैं मैं समझाईआ । आत्म परमात्म वंड वंडा, तूं तूं जणाईआ। ईश जीव आपणा खेल खला, जगदीशर राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरसावणहारा साचा दर, मैं बण मनसा बण आसा बण संसा बण ख़ाहश, पुरख अबिनाशी आपणा अंस मैं रूप जणाईआ। मैं पारब्रह्म ब्रह्म दी बिन्द, पिता पूत नज़र कोई ना आईआ। खेल जाणे गुणी गहिंद, दूजे

सार कोई ना पाईआ। खेले खेल सागर सिंध, गहर गम्भीर वड्डी वडयाईआ। मैं जाण ना सके विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरपत इन्द, इन्द इन्दरासण बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिस जणाए मैं जिस आपणा मेल मिलाए अन्तर थाईं आत्म परमात्म निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण दए जणाईआ।

मैं किहा हूं धुर दी आवाज़, शब्दी शब्द शब्द जणाइंदा। निरगुण निरगुण साजण साज, सरगुण सरगुण बंधन पाइंदा। मैं मैं दा इक्को राज़, राज़क रहीम आपणे हत्थ रखवाइंदा। आदि ब्रह्मा नूर ब्रह्मा जिस रचआ काज, निरंतर ब्रह्म आपणी धार बंधाइंदा । माया ब्रह्म पर्दा बंन्ह, अन्तर मुख छुपाइंदा। जिस भेव खुल्हाए श्री भगवन, तिस मैं मैं समझाइंदा। बाकी सारे रक्खे नेत्र अंन्ह, हाए हाए कर सर्ब कुरलाइंदा। जो साहिब सतिगुर दी सरनी लग्गे जन, तिस मैं किआ हूं बिन अक्खां आप दखाइंदा। कोई सुणन ना पाए कन्न, कोई सुरत ना ध्यान लगाइंदा। कोई नज़र ना आवे सूरज चन्न, मण्डल मंडप ना कोई रुशनाइंदा। जिस दुआरे गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव रहे मंग, सो सर्बंग भेव खुल्हाइंदा। जिस मैं वंडी वंड, सो मेहरवान पर्दा लाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा दर, ना मैं ना तूं निरगुण दाता पुरख बिधाता आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आत्म परमात्म परमात्म आत्म साची धार चलाइंदा।

नानक जाणया इक्को मैं, मैं कह के गिआ समझाईआ। हैरान हो के कहे जिध्धर वेखां नज़री आएं तूं ही हैं, वाहवा तेरी वड्डी वडयाईआ। थल्ले उप्पर वेख्या तूं हर घट अंदर बहें, सच सिंघासण सोभा पाईआ। ग़ौर कर के तक्कया तेरे हत्थ ना कोई शै, देवणहार सर्ब अखवाईआ। प्रेम प्यार कर के वेख्या तूं सभ दी चरनी ढहें, एसे करके नानक सरगुण निरगुण ग़रीब निन्दक रूप अखवाईआ। तेरे नाम दी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हुंदी वेखी जै, जै जैकार करे खुदाईआ। साहिब सुल्तान तूं इक्को रहें, दूजा नज़र कोई ना आईआ। तेरी किरपा वेख्या जो तूं सो मैं, एसे कर के नानक सोहँ ढोला गिआ गाईआ। सो पुरख निरञ्जण इक्क इकल्ला, निरगुण निराकार असुते प्रकाश बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरञ्जण सच महल्ला, बिन रंग रूप आप वसाईआ। एकँकार अट्टल अट्टला, दर घर साचे सोभा पाईआ। आदि निरञ्जण जोती जोत आपे बला, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। श्री भगवान आपणा पकड़ आपे पल्ला, आपणी गंढ पवाईआ। अबिनाशी करता निरगुण निरगुण धार आपे रला, रूप रंग रेख नज़र कोई ना आईआ। पारब्रह्म आदि आदि अपरम्पर स्वामी जोधा सूर बलधारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराईआ। (२४ चेत २०२० बि)

**मेरी मेरी :** कलिजुग ज्ञान कहे मेरा साचा पर्चा, साधां सन्तां अग्गे दए टिकाईआ। पीर पैगम्बर करन चर्चा, मुख़ातब हो के रहे सुणाईआ। अग्गे जाण दा किसे कोल ना रिहा ख़र्चा, ख़ाली हत्थ दिसे लोकाईआ। जीवदयां जग्ग कोई ना मर्दा, मरयां जीवण कोई ना पाईआ। साचे पौड़े कोई ना चढ़दा, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। जगत तृसना जीव जंत सड़दा, माया ममता करे लड़ाईआ। त्रैगुण अगनी विच्च सड़दा, अमृत मेघ ना कोई

बरसाईआ। मेरी मेरी वड्डा छोटा करदा, तेरी तूं गए सर्ब भुलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वेख लै तेरे कोलों कोई ना डरदा, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां भय ना कोई रखवाईआ। सच प्रेम कोई ना करदा, जगत ख़ाहिश नाल बैठे आस लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैनूं दित्ता इक्क वर, जग्ग लेखा वेख वखाईआ। (२० जेठ २०२१ बि)

गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण तेरी चेरी, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। सृष्ट सबाई वेख करे मेरी मेरी, ममता भरी सर्ब लोकाईआ। साधां सन्तां कपड़े रंग के पाए गेरी, अन्तर आत्म रंग ना कोई चढ़ाईआ। सुथरयां वांग घर घर पाइण फेरी, भज्जण वाहो दाहीआ। नौका नईआ हत्थ ना आए बेड़ी, चपू नाम ना कोई लगाईआ। भाग लग्गे ना किसे खेड़ी, पड़दा उहला ना कोई रखवाईआ। पंज तत्त ख़ाकी ख़ाक हुंदी वेखी ढेरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, रहमत आपणी इक्क कमाईआ। (२४ भादरों २०२१ बि)

मिठा बोल कहे मैं बोलां बोली केहड़ी, कवण राग अलाईआ। पुरख अकाल किहा जेहड़ी गोबिन्द छेड़ छेड़ी, उह दे समझाईआ। बोल कहे मैं वेखां उह अन्धेरी, जो नेत्रां वालयां अन्धे रही बणाईआ। जेहड़े करदे मेरी मेरी, मैं ममता विच्च भज्जण वाहो दाहीआ। उन्हां दी डुबण वाली बेड़ी, मलाह नज़र कोई ना आईआ। कोई ना समझया किस ने पाई फेरी, क़िसमत कवण रिहा बदलाईआ। एस बोली नाल खेल इक्क होर चंगेरी, जो चंगयां मंदे दए बणाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, केहड़ा लौण वाला डेरी, डेरे दी करे सर्ब सफ़ाईआ। (२७ भादरों श सं १)

**मुकती : साची मुकती :** जगत जुगती जाण, भगत पछाणया। साची मुकती विच जहान, चरन सरन सरन चरन गुर धिआनया। काया भुगती गुण निधान, शब्द बंनूं हत्थीं गानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दान जीआ दानया। जीव जंत भिखार दर दवारया। (१० माघ २०१२ बि)

भगवन आपणी गोद बहाइंदा, भगती देवे साचा दान। जीवण मुकत आप कराइंदा, मुकती दस्से बाल अज्ञाण। गुरसिख मुकती कदे ना मंग मंगाइंदा, एका मंगे चरन कँवल ध्यान। कलिजुग अन्तम साची जुगती आप जणाइंदा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। (११ माघ २०१७ बि)

मुकत विचारी जगत निमाणी, नेत्र नैणां रो रो नीर वहाईआ। जिस जन सतिगुर सच्चा मिले शाह सुल्तानी, शहनशाह आपणी दया कमाईआ। चरन कँवल कँवल चरन रखवाए इक्क ध्यानी, ध्यान ध्यान विच्च मिलाईआ। शब्द अगम्मी चाढ़ बिबाणी, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। सचखण्ड वखाए सच निशानी साचे तख़त बैठा सच्चा माहीआ। गुरसिख तेरी मुक्के आवण जाणी, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ । इक्क वखाए पद निरबाणी,

पद निरबाण आपणा रूप दरसाईआ। गुरमुख मेला गुर गुर हाणी, सतिगुर आपणे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, सो गुरमुख जगत मुकती आपणयां चरनां हेठ दबाईआ।

जगत मुकती गुरमुखां कोलों रही डर, नेत्र वेखण ना पाईआ। जिनां पुरख अकाल एकँकार एक लिआ वर, एका घर वज्जी वधाईआ। नाता बणाया पुरख नार, नार कन्त एका रूप समाईआ। सचखण्ड दुआरे सोभावन्त, साचे मन्दर वज्जे वधाईआ। गुरमुख लेखा चुक्के आदि अन्त, अन्त आपणी जोत मिलाईआ। सतिगुर पूरा श्री भगवन्त, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दर, सो गुरसिख किसे दुआरे मुकती मंगण ना जाईआ।

मुकती जुगती भगतां दासी, दासी बण बण सेव कमाईआ। गुरमुख सच्चा सचखण्ड दा सच्चा वासी, कबीर जुलाहा कूक कूक गिआ सुणाईआ। निरगुण मेला निरगुण पुरख अबिनाशी, आत्म परमात्म एका दर सोभा पाईआ। जिस जन कलिजुग अन्त मिल्या घनकपुर वासी, सो जन जन्म मरन विच्च ना आईआ। लक्ख चुरासी कटे फासी, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपे फड़, फड़ फड़ आपणा मेल मिलाईआ।
पढ़े पढ़ाए जीव जंत, जगत विद्या नाल कुड़माईआ। हरि का रूप हरि भगवन्त, हरि शब्द करे शनवाईआ। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। घर मेला घर सुहाग घर सेज नारी कन्त, घर कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। गल्लां बातां करे जीव जंत, जीवण जुगती सतिगुर आपणी शब्द रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल कर, रसना भेड़ ना कोई वखाईआ। (१६ चेत २०१६ बि)

मुकती निक्की जेही दात, निक्कयां निक्कयां दिती समझाईआ। जिस दी पुरख अकाल साहिब सतिगुर नाल होए मुलाकात, तिस कर्म कांड कोई रहण ना पाईआ। अग्गे पिच्छे दो जहानां मिले नज़ात, निज घर साचे वज्जे वधाईआ। सुरत सवाणी बणी ना रहे नार कमज़ात, घर कन्त कन्तूहला इक्को नज़री आईआ। जो जन मिले भगत जमात, तिन्नां मुकती पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। मैनूं वी लै चलो साथ, जिथ्थे श्री भगवान वसे बेपरवाहीआ। जिस दी गुर पीर अवतार गौंदे गाथ, लिख लिख ढोला जगत गिआ सुणाईआ। मैं सुणया उह अनाथां दा नाथ, ग़रीब निमाणे आपणे गले लगाईआ। जिस दे दर्शन नूं कोटन कोट विष्न ब्रह्मा शिव रहे झाक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। उह भगतां दा गुरमुखां दा बणे जुग जुग सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। बेपरवाह परवरदिगार पाकी पाक, सच रसूल इक्क अखवाईआ। मुकती कहे मैं उहदे चरनां दी मंगाँ ख़ाक, मेरी चले ना कोई वडयाईआ। ज्ञान कर्म ओथे विके ना किसे हाट, निहकर्मी निरगुण दाता प्रेम प्रीती इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

कर्म ज्ञान  जगत ध्यान सतिगुर मंज़ल बे महान, गुरमुख विरले दस्से निशान, जिस आपणा शब्द तीर निशाना दए लगाईआ।  (२४ चेत २०२० बि)

जन भगतां मुकती होए दासी, दर आ के सेव कमाईआ।  जिन्नां सतिगुर मिल्या पूरा साथी, फड़ बेड़ा पार कराईआ।  मन हँकारी ढाहवे हाथी, नाम नेज़ा इक्क रखवाईआ।  अंदर वड़ के करे राखी, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोई ना जाईआ।  मेटे रैण अन्धेरी राती, घर दीप जोत रुशनाईआ।  शब्द सुणाए सच्ची साखी, इक्को नाम पढ़ाईआ ।  साचा घोड़ा नाम जणाए वड्डा राकी, सोलां कलीआं आसण पाईआ।  गुरमुख मारे इक्क पलाकी, शाह सवारा रूप वटाईआ।  वाहो दाही भज्जे किसे नज़र ना आए दो जहान निक्की ताकी, सतिगुर दर दरवाज़ा इक्क खुल्ह़ाईआ।  जन भगत तेरे अग्गे मुकती जुगती भुगती कोई रहे ना आकी, जिस जन सुरती शब्द मिलाईआ ।  सतिगुर पूरा सचखण्ड दुआरे बिन जन्म मरन तों देवे तन्दरुस्ती, जोती जोत नाल मिलाईआ।  जो मौका वेख बेनन्ती कर लए नाल चुस्ती, तिस चार कुण्ट भय ना कोई आईआ।  हरि की किरपा सदा मुफ़तो मुफ़ती, सौदा दमां चमां नाल ना कोई विकाईआ।  एहो खेल सच्चे गुर की, गुरमुख गुरसिख मूर्ख मूढ़े दए बणाईआ।  देवे दात धुर की, धुर वस्त झोली पाईआ।  बिन पैसिउँ  बिन धेलिउँ बिन पूजा बिन पाठ  बिन सिमरन  बिन जोग बिन अभिआस बिन तप बिन जप बिन हठ  कर किरपा मेहर नज़र नाल तेरे चरनां हेठ रखाए मुकती, मुफ़त आपणे नाल मिलाईआ । (१० अस्सू २०२० बि)

धन्न वड्डिआई हरिजन साची संगत, सतिगुर सगला संग निभाइंदा ।  दूजे दर ना जाणा मंगत, भिखारी रूप ना कोई वखाइंदा।  मेहरवान नाता तोड़या जेरज अंडज, उत्भुज सेतज फेर ना कोई फिराइंदा।  गुरमुखो नरक स्वर्ग दोज़ख बहिश्त चरनां हेठ दबौणा जनत, मुकती नालों मुफ़त तुहानूं अग्गे लै जाइंदा।  कलिजुग वेले अन्त हरिजन रहण ना देवे कोई सुसत, रातीं सुत्यां शब्द धार उठाइंदा।  लेखा चुका के मूर्ख मुगध, सुध आत्मा जोड़ जुड़ाइंदा।  जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां माण रखाइंदा।  (१६ सावण २०२१ बि)

गोबिन्द कहे मैं तक्की तेरी ओट, ओड़क इक्को नज़री आईआ।  दस्सां नाल नगारे चोट, चोटा बण के दिआं सुणाईआ।  जिस ने सभ दा कढ्ढुणा खोट, होछी मत गवाईआ।  आदि जुगादी जिस दी पहुंच, काया माटी पोच ना कोई पुचाईआ।  जिस दी किसे ना आई सोच, समझ ना कोई समझाईआ।  जिस दा खेल चौदां लोक, परलोक वज्जे वधाईआ।  सो देवणहारा नाम सलोक, सोहला इक्क समझाईआ ।  गुरमुखो कम्म ना आवे किसे मोख, मुकती चरनां हेठ दबाईआ।  तुहाढ्ढा लहणा मिलणा जोत, अन्तम जोत समाईआ।  एहो जेही जुग चौकड़ी किसे ना दिती होश, हुशिआर हो के आपणे नाल मिलाईआ।  सृष्ट सबाई नाल बैठा रहे ख़ामोश,  ख़ाह मखाह पाई जुदाईआ।  जन भगतां मिले रोज़, नित नवित्त वेस वटाईआ।  उस दी किआ कोई करे खोज, खोजयां हत्थ किसे ना आईआ। एह वी गोबिन्द सदका करे चोज, चोजी प्रीतम बेपरवाहीआ।  गुरमुखां नाल मिल के माणे मौज, मौजूद हो के दया

कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाता इक्क जुड़ाईआ। (२ भादरों २०२१ बि)

शब्द गुरू कहे मैं भगतां दस्सां जगत जुगत, जग जीवण दाता हो के दिआं जणाईआ। साचे सन्तो किसे कम्म ना औंदी मुकत, मुकती तों परे दाता बेपरवाहीआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्म दरुसत, दो जहान बैठे सीस निवाईआ। सद तारनहारा हरि निरँकारा सदा मुफ़त, करता क़ीमत लोकमात ना कोई रखाईआ । जुग चौकड़ी पिछों अबिनाशी करता लभदा सच्चा मुशर्द, मुरीदां दीदा दए खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। (२८ माघ २०२१ बि)

चरन दासी सुण लै धुर दी जुगती, जुगाँ पिच्छों दिआं जणाईआ । भुल्ल के कदे ना मंगयो मुकती, मुकती कम्म किसे ना आईआ। तुहाढ्ढी ओथे लावां सुरती, जिथ्थे सुत्तयां ना कोई उठाईआ। इक्को नूर अकाल मूरती, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाम निधान अगम्मी तूरती, तुरीआ सार सीस निवाईआ। एह खेल हाज़र हज़ूर दी, जो इशारयां नाल लए तराईआ। महनत मिले पूरब जन्म मज़दूर दी, मज़दूरी पिछली झोली पाईआ। एह खेल नहीं कोई जूठ झूठ कूड़ दी, कूड़ी क्रिया ना कोई वखाईआ। चरन दासी रूप अगम्मी ओस नूर दी, जो नूर नुराना शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए मिलाईआ । (२८ भादरों श सं १)

जन भगत दूसर कोई ना जाणे जुगत, जुगती विच्च कदे ना आईआ। कदी ना मंगे मुकत, मुकती तों परे आपणा घर वसाईआ । जिथ्थे प्रभ दा दर्शन होवे मुफ्त, टकयां दी लोड़ रहे ना राईआ । मात गरभ फेर ना आवे उलट, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। (१४ जेठ शहनशाही सम्मत २)

**मन्दर :** हरि का नाउँ हरिजन मन्दर, आदि जुगादि समाइंदा। सतिगुर नाउँ गुरमुख अंदर, गुर गुर धार प्रगटाइंदा। गुर गुर नाम तोड़े जंदर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दर इक्क वखाइंदा।
गुरमुख मन्दर डूंघा सागर, जग नैण नज़र ना आइंदा। गुरमुख मन्दर काया गागर, घर घर विच्च आप प्रगटाइंदा। गुरमुख मन्दर निर्मल जोत दीआ इक्क उजागर, जुग चौकड़ी डगमगाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दर इक्क सुहाइंदा। गुर का मन्दर गुरमुख गृह, घर साचे वज्जे वधाईआ । साहिब सतिगुर निरगुण रहे, सरगुण देवे वडयाईआ। नाम अनमोला इक्को कहे, जस ढोला साचा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर मन्दर इक्क वखाईआ।
गुर का मन्दर साढ्ढे तिन्न हत्थ, छप्पर छन्न ना कोई वखाइंदा। सतिगुर मन्दर वसे पुरख समरथ, पुरख अकाल डेरा लाइंदा। सरगुण मार्ग साचा दस्स, राह पन्थ इक्क जणाइंदा।

बिन लेख लिखत गाए जस, सिफ्त सालाही सिफ्त सालाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मन्दर इक्क सुहाइंदा।
गुर का मन्दर गुरमुख घर, घर घर वज्जे वधाईआ। साहिब सतिगुर वेखे वड़, अंदर बाहर खोज खुजाईआ। जगत महल्ले आवे डर, हरि का नाउँ नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार नाम शनवाईआ।
गुर का मन्दर इक्को सो, सो पुरख निरञ्जण आप सुहाइंदा। हरि मन्दर हरि बहे उह, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। कलिजुग वस्त सभ तों लए खोह, ख़ाली भाण्डे आप कराइंदा। अग्गे किसे ना मिले ढो, दरगाह साची धक्का लाइंदा। सतिगुर सरन जो जन जाए छोह, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। कर प्रकाश करे लो, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। नाम अनमुला ढोआ देवे ढो, साची दात झोली पाइंदा। लक्ख चुरासी रही रो, नेत्र अक्ख ना कोई खुल्हाइंदा । खुल्ही मींढी रहे खोह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि घर साचा वेख वखाइंदा।

सतिगुर मन्दर गहर गम्भीर, गवर आप बणाईआ। आदि जुगादि खिच ना सके कोई तस्वीर, मुसव्वर तसव्वर ना कोई कराईआ। लेखा जाणे बेनज़ीर, नज़र सके ना कोई टिकाईआ। जिस गृह वसे शाह हकीर, शहनशाह इक्को रंग रंगाईआ। सच तौफ़ीक सांझे पीर, हज़रत देवणहार वडयाईआ। कलमा कट शरअ ज़ंजीर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह इक्को इक्क वसाईआ।
सतिगुर मन्दर बिन चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाइंदा। सतिगुर मन्दर निरगुण दीपक बाल, तेल बाती ना कोई टिकाइंदा । सतिगुर मन्दर सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सतिगुर मन्दर जोती नूर जलाल, जलवा इक्को इक्क वखाइंदा। सतिगुर मन्दर सति कमाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाइंदा।
सतिगुर मन्दर ना लंमा ना चौड़ा, तूल अर्ज़ ना कोई रखाईआ। इक्को वेखे फिर के हरि शब्दी अगम्मी घोड़ा, दूजा पन्ध ना कोई मुकाईआ। लक्ख चुरासी बैठी अन्ध घोरा, शब्द चन्द ना कोई रुशनाईआ । सभ दा काग़ज़ दिसे कोरा, पट्टी हक़ ना कोई पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मन्दर इक्क समझाईआ।
सच मन्दर वसे महिबूब, मुहब्बत इक्को इक्क जणाइंदा। उच्च अगम्म अथाह अरूज, अर्श कुर्श भेव कोई ना पाइंदा। उस दा कोई ना दए सबूत, साबत इलम नज़र कोई ना आइंदा। जिस घर वसे आप कलबूत, तिस कलबूत कलमा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल इक्क वडिआइंदा।

सच महल्ल वखाए फ़ज़ल, रहमत आप कमाईआ। इक्को नग़मा इक्को ग़ज़ल, शाइर इक्को इक्क अखवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तराना कोई ना दए बदल, बदली सभ दी दए कराईआ। शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मरदाना साचे मन्दर करे अदल, अदालत इक्को इक्क लगाईआ। दोश निरदोश दोहां कोई ना करे कतल, छुरी कटार ना कोई उठाईआ।

सच दृढ़ाए आपणी मज़ल, मंज़ले मकसूद आप पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मन्दर इक्क वखाईआ।

गुरमुख मन्दर सच मकान, हरि सतिगुर खेल कराइंदा। ना शरअ ना कोई ईमान, दीन मज़हब ना वंड वंडाइंदा। अक्खर अक्खर ना कोई ज्ञान, रसना जिह्वा ना कोई अलाइंदा। सीस चरन ना कोई निशान, बरदा रूप ना कोई वटाइंदा। भूपत भूप ना कोई प्रधान, हुक्म हाकम ना कोई सुणाइंदा। करे खेल श्री भगवान, सच दर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दर इक्क वखाइंदा।

साचा मन्दर दए वखाल, हरि वक्खरी धार चलाईआ। जिस धाम वसे दीन दयाल, तिस गृह दए वडयाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, जम भय ना कोई जणाईआ। सदा सदा सद वसे नाल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। घर विच्च घर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क बणाईआ। भूत भविख्त जाणे काल, बेपरवाह बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले सज्जण भाल, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, साचा वणज रिहा कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दर दए बहाल, जिस दुआरे मिले वडयाईआ।

गुरमुख साचे मन्दर बहणा, हरि महिफ़ल नाम लगाइंदा। दर्शन पेखे पेखत नैणां, निज नेत्र मेल मिलाइंदा। झेड़ा छुट्टे रसना गौणा, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। कज़ा चुक्के लहणा देणा, पूरब लेखा झोली पाइंदा। सच्चा मन्दर इक्को रहणा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि सतिगुर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे इक्को दान, सचखण्ड दुआर सच मकान, झुलदा रहे धर्म निशान, दर दुआरा इक्को नज़री आईआ। (२३ विसाख २०२० बि)

**यद :** गुरसिख तेरी साची यद, अकाल पुरख आप उपाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ़ु, आप आपणी जोत मिलाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर लड़ाए लड, आप आपणी गोद उठाईआ। जगत विकार लोभ मोह काम क्रोध हँकार देवे कढ़ु, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। लेखे लाए काया माटी मास नाड़ी हड्ड, पंज तत्त करे कुड़माईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, वर दाता आप अखवाईआ। (२६ कत्तक २०१५ बि)

भगत भगवन्त साची यद, साचा बंस बणाइंदा। आदि अन्त दर दुआरे सद, साचा मेल मिलाइंदा। (२१ माघ २०१८ बि)

आपे होए आपे नालों अड्ड, आपणी वंडण आप वंडाईआ। आपे काया चोले वसे डूंघी खण्ड, अन्ध अन्धेरे डेरा लाईआ। आपे आत्म परमात्म बणाए साची यद, विश्व यद आप रखवाईआ। (२० फग्गण २०१८ बि)

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई वखाए इक्को यद, विष्नूं बंस दए सुहाईआ। (१६ जेठ २०१६ बि)

कूड़ कुड़िआर कलिजुग यद, सच सतिजुग राह वखाइंदा। (२४ जेठ २०१६ बि)

आओ दर मेरे नट्ठ, हरि जू ध्यान लगाईआ। कूड़ कुटम्ब आओ छड्ड, सगला संग ना कोई जणाईआ। लक्ख चुरासी नालों होवो अड्ड, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। किसे कम्म नहीं औणे हड्ड, काया माटी अगनी आंच लगाईआ। विष्नूं भगवान दी विश्व यद, इक्को जोती जोत रुशनाईआ। सृष्ट सबाई पार करो हद्द, मार्ग आपणा दए वखाईआ। कर किरपा जन भगतां लए सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। (१७ माघ २०१६ बि)

सच मार्ग वेखो रिहा लग, सन्त सज्जण देण गवाहीआ। जो सृष्ट सबाई लगे अग्ग, प्रेम प्रीती नाल देणी बुझाईआ। जो हँस रूप माणस हो गए कग, मन वासना रहे कुरलाईआ। साचा धर्म गए छड, मज़हबां विच्च करन लड़ाईआ। आत्म परमात्म समझण अड्ड अड्ड, वखरी धार वखाईआ। सच पुछो आदि जुगादी विश्व सारे प्रभ दी यद, यादाशत ताजा फेर कराईआ। सारे ज़रा आपणे नौ दवारे वेखो लंघ, पान्धी हो के पन्ध मुकाईआ। अगे झगढ़ा मुक जाए सूरज चन्द, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। हिंदू मुसलम सिख ईसाई ना कोई अंदर वंड, आत्म ब्रह्म नूर खुदाईआ। सज्जण मीत प्यारे बण के बणा लउ सच्चा संग, कूड़े नाते दिउ तुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या सृष्ट सबाई इक्क जणाईआ। (८ चेत श सं १)

**रक्खड़ी :** हनवन्त राम नूं बंनी रक्खी, दुमा दुमा के दित्ती हिलाईआ । फेर हस्स के किहा मैं तेरी सीआ नालों चंगी सखी, हासे विच्च सुणाईआ । नाले मिला के अक्ख विच्च अक्खी, इशारा अक्खीआं नाल कराईआ। तूं सर्ब धार भखी, भाखया दे दृढ़ाईआ। फेर छेड़ के राम दी वक्खी, हलूणा दित्ता लगाईआ। फेर फड़ के झट्ट पखी, हवा रिहा झुलाईआ। फेर लै के तिनका कखी, पिट्ठ विच्च दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।
हनवन्त रक्खी बंनू के गाना, गुन गुना के दित्ता जणाईआ। मैं बानर तेरा भगवाना, भगवन तेरी आस रखाईआ। नाले मस्तक ला निशाना, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फेर आखया नाल माणा, निमाणा हो के सीस झुकाईआ। तूं केहदा सच्चा रामा, रमईआ दे दृढ़ाईआ । जगत वक्त तक्क सुबाह शामा, शाम की आपणी खेल विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त इक्क वरताईआ।

रक्खी कहे जिस वेले मैं राम दे गुट नाल गई छूह, खुशीआं विच्च खुशी बणाईआ। मैनूं इउँ दिसया जिउँ हाज़र होया वशिष्ट गुरू, विश्व दा रंग रंगाईआ। उस ने मिट्ठा लाया राम दे मूंह, खुशीआं सगन मनाईआ। राम ने राम रूप समझया हूबहू, इक्को राम नज़री आईआ। फेर किहा तूं ही तूं, तेरी बेपरवाहीआ । झट्ट नज़री आया धरू, प्रहिलाद नाल मिलाईआ। फेर हनवन्त ने आपणे सीने दा पाड़ के खूह, अमृत दित्ता जणाईआ। फेर

वरवा के बेगानी जूह, जंगलां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

रक्खी कहे मैं लग्गी राम दी बहीआ, खुशीआं ढोले गाईआ। मैनूं मिल्या मेरा सईआ, साहिब अगम्म अथाहीआ। जिस त्रेते डोबदी नईआ, द्वापर धार बणाईआ। झट्ट वशिष्ट ने किहा एह बणे घनईआ, घनीशाम रूप बदलाईआ। झट हाजर होई दुर्गा इष्ट मईआ, इशारे नाल सुणाईआ। हनवन्त किहा एह स्वामी समीपत रमईआ, मेरा मेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ। रक्खी का* झट्ट आ गिआ ब्राह्मण इक्क नाथी, जिस नूं नथू कह के सारे गाईआ। उन रक्खी फड़ी हाथी, बांह राम वल वधाईआ। वाह मेरे जजमान समराथ, दर तेरे वज्जे वधाईआ। मैं ग़रीब निमाणा अनाथी, तूं नाथ अनाथां होए सहाईआ। झट हनवन्त किहा तूं मेरी मन्न आखी, सहज नाल सुणाईआ। गुस्सा ना करीं गुस्ताख़ी, भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

नाथी किहा दोवें हत्थ बंनू, बन्दना सीस निवाईआ। भाग दिहाढ़ा धन्न, धन्न वज्जे वधाईआ। जे मेरी राखी राम छुहाए तन, मेरे तन्दवे वांग तन्द कटाईआ। मैं तेरा होवां जन, जन्म दा लेखा रहे ना राईआ। मैं ब्राह्मण तेरा होवां ब्रह्म, जो ब्राह्मणी लिआ जाईआ । रक्खड़ी बंनूणा मेरा धर्म, एह रीती पिछली चली आईआ। नाले रोया छंम छंम, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

रक्खी कहे झट सीता आ गई पहन लिबास, बसतर भिक्षूआं वाले पाईआ। राम दे पहुंची पास, ब्राह्मण वल तकाईआ। नाले बचन हस्स के किहा ख़ास, सहज नाल सुणाईआ। मेरे राम दा वेख प्रकाश, जो मालक धुरदरगाहीआ। जे रक्खी बंनूणी पैहलों भगत बण दास, दासी हो के सेव कमाईआ। फेर चरन कँवल चक्ख आस, आसा जगत वाली तजाईआ। झट्ट पाणी दा फड़ ग्लास, विच्चों राम रूप रही दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी कार आप कमाईआ।

सीता किहा सुण नाथी जगत पांधे, पंडता दिआं जणाईआ। जिस राम नूं राम गाँदे, उह राम बेपरवाहीआ। तूं जगत ढोले गाँदे, सिफ्तां नाल सलाहीआ। दीन दुनी विहार कराउँदे, बंधन बंधना वाले रखाईआ। एह खेल अगम्म अथाह दे, अगम्मी कार कमाईआ। एह विवहार भैण भरा दे, भईआ भैणां संग बणाईआ । जां लेखे भगत भगवान अथाह दे, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। नथू दे अंदरों नाअरे निकले आह दे, कूक दित्ता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सीता किहा नाथी राम दे चरन ला धूढ़ी, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। प्रभू दा भगत बणीं नाले जन्म दी बणीं कुड़ी, दोवें रंग रंगाईआ। तेरी आशा फेर कदे ना थुड़ी, थुड़या थुड़कया दिआं समझाईआ। चरन प्रीती दे विच्च जुड़ीं, जोड़ा धुर दे राम नाल रखाईआ। तेरी आशा ना होवे निगुरी, सगन जगत वाला मनाईआ। नाले इशारा कीता उह लेखा तक्क अनन्द पुरी, पुरी अनन्द की जणाईआ । ज़िमीं तक्क लै जो फिरदी उत्ते अगम्मी धुरी, भज्जे वाहो दाहीआ। राम दा नाम तक्क लै बणया छुरी, शरअ जगत वाली वखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

रक्खी कहे नाथी नथू सुणया संदेशा, चुप चाप ध्यान लगाईआ। झट्ट आ गिआ ब्रह्मा विष्न महेशा, शंकर पन्ध मुकाईआ। इशारा करे गणेशा, गणपत रूप दृढ़ाईआ। उह कलिजुग तक्क लै भेसा, निरगुण धार रूप अगम्म अथाहीआ। जिस दा लहणा देणा पैगम्बरां मुलां शेखा, शरअ जगत खोज खुजाईआ। दो जहानां होवे नेता, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा पिछला रक्खे चेता, चेतन्न भुल कदे ना जाईआ। तेरी आत्म धार करे हेता, परमात्म मेल मिलाईआ। तेरी झोली पाए लेखा, अगला लेख समझाईआ। जिस दा रूप दस दस्मेशा, जोती जाता डगमगाईआ। उह स्वामी रहे हमेशा, हम साजण इक्क अखवाईआ। वसे सम्बल देसा, सज घर सोभा पाईआ । तेरी कबूल करे भेटा, भावना आपणे विच्च रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

झट नाथी खुशीआं दे विच्च मन्नया, सीता राम सीस निवाईआ। सीता हस्स के किहा तेरा रूप ज़रूर होवेगा कंनया, कन्न विच्च दित्ता सुणाईआ। लहणा देणा होवे धन्न धंनया, धन्न होवे जणेंदी माईआ । गढ़ हँकारी होवे भंनया, आत्म ब्रह्म समझाईआ। गृह मन्दर छड दे छप्पर छंनया, जंगल जूहां वेख विखाईआ। वक्त सहावे आपणा समयां, समें नाल वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

रक्खी कहे खुशीआं विच्च मेघा बरसे इन्दर, इन्दर इन्दरास खुशी बणाईआ। सहिंसर मुख गाए फुनिंदर, शेशा वड वडयाईआ। नाथू दा रूप दरसा जुगिंदर, जोग जुगत दिती बणाईआ। पूरब लेखा तोड़ के जंदर, जिंदगी जिंदगी विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड वडयाईआ।

रक्खी कहे मैं राम दी धार राम दी राम नाल गई बझ, सोहणा रूप बणाईआ। मेरा लेखा पूरा होया अज्ज, त्रेता दवापर कलिजुग बैठी अक्ख उठाईआ। एह सगन नहीं कोई जग, जुगत जगत वाली बणाईआ। चारों कुण्ट लगणी अग्ग, गान्नयां वाले रोवण मारन धाहीआ। धीरज सके किसे ना बझ, सबूरी विच्च ना कोई समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा पूर कराईआ।

रक्खी कहे मेरा खुशीआं वाला तिवहार, निव निव सीस निवाईआ। मैं सभ दा वेखां प्यार, भैण भईआ खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट होया अंधिआर, अन्ध अज्ञान ना कोई चुकाईआ। मेरी आशा होई शरमशार, नैणां नीर वहाईआ। बिनां भगतां तों प्रभू दा रिहा ना किसे प्यार, प्रेम विच्च ना कोई समाईआ। जगत बंधन होए दुखिआर, नाता कूड़ दिसे लुकाईआ। मैं खुशीआं विच्च बोलां इक्क जैकार, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सच संदेसा देवां आपणी वार, वारता पिछली नाल मिलाईआ। हनवन्त दी रक्खड़ी दा रखया वाला तिउहार, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। जिस राम ने रावण दित्ता शिंगार, दैतां कीती सफ़ाईआ। उह भगतां बख्शे प्यार, चरन चरनोधक मुख चवाईआ। कल कलकी लए अवतार, अन्त होए आप सहाईआ। जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त अगम्म अथाहीआ । सो भगतां पैज रिहा सवार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सभ दे बेड़े लावे पार, चुरासी विच्च ना कोई भवाईआ। लहणा

देणा देवे कज़ उतार, पूरब लेखे पाईआ। रक्खी कहे मेरी ओस नूं नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दन विच्च सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद अपणा रंग रंगाईआ।

सीता ए राम रक्खी केहड़ी धार, रक्खड़ी की वडयाईआ। ओधरों झट्ट शतरी जीदू खेडदा आया शिकार, भज्जया वाहो दाहीआ। नेड़े पुज के पैहलों सीता नूं कीती निमस्कार, फेर राम वल तकाईआ। हनवन्त नूं गुसा चढ़या उन कूक किहा पुकार, क्यों मेरा भगवन दित्ता भुलाईआ। एह राम मेरी सरकार, राजन राज इक्क अखवाईआ। की होया जे अयुध्या तों आया बाहर, जंगलां विच्च फेरा पाईआ। सीता एस दी नार, पत पतनी रूप बदलाईआ। उह बोलया नाल हँकार, गुस्से विच्च जणाईआ। मैं आपणी मरजी दा मुखत्यार, जिस नूं चाहां सीस निवाईआ। हनवन्त फेर किहा ललकार, ज़ोर नाल सुणाईआ। मेरा दिल चौहन्दा तैनूं हुणे दवां मार, गुरज तेरे सीस टिकाईआ। झट्ट राम ने प्रेम नाल किहा पुकार, हनवन्त दित्ता दृढ़ाईआ। एह मेरा खेल अपार, जो हर हिरदे विच्च समाईआ। तूं झगढ़ा ना कर तकरार, गुस्सा ना कोई रखाईआ। फेर हनवन्त किहा इस पैहलों सीता दित्ता अधिकार, तेरा माण गवाईआ। मैं वी भगत तेरे चरन करां निमस्कार, दर तेरे सीस निवाईआ। मेरी बेनन्ती मनज़ूर करीं सरकार, मेरे राम राम दुहाईआ। मैं चौहन्दा जद एह फेर मिले तैनूं एहदा स्त्री रूप होवे विच्च संसार, आपणा जन्म आप बदलाईआ। राम ने हस्स के किहा एह की मारया तीर अणिआल, अणयाला दित्ता चलाईआ। नाले राम ने हस्स के किहा तेरा लेखा जरूर पूरा होवेगा एह मेरा इकरार, भुल्ल रहे ना राईआ। पर तेरे बचन दा सदका मैनूं एहदा रक्खणा पएगा अधिकार, गृह आपणे रंग रंगाईआ। उह पूरब लेखा बलविंदर ने जन्म लिआ त्रेता दवापर कलिजुग अन्तम दूजी वार, त्रै जुग चुरासी विच्च कदे ना आईआ। जिस दा लहणा देणा लेखा अगम्म अपार, लेखे विच्च दृढ़ाईआ। जुगिंदर सिँघ पिशौरा सिँघ इस शिकारी दे सी नाल, साथी हो के संग बणाईआ। इन्नां वल सभ ने निगह कीती एका वार, वशिष्ट राम हनवन्त ध्यान लगाईआ। नाले ताली मार के किहा एह लहणा देणा कलिजुग अन्तम वार, कल कलकी लेखा पूर कराईआ। सो वक्त सुहञ्जणा पहुंचया आण, सभ दी तृप्त नाल तृखा दित्ती बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी सुरत रिहा संभाल, सम्बल बह के आपणी दया कमाईआ। (२८ सावण शहनशाही सम्मत नौं)

**रावण नाती** : रावण आसा सवा लक्ख नाती, रकत बूंद वंड ना कोई वंडाईआ। जिस दा लेखा लिख सके ना कलम दवाती, चार वेद छे शास्त्र समझ कोई ना पाईआ। जिस दे कोलों खेल कराया कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म सुणाईआ। उह रावण जगत विद्या समराथी, गुणवान अखवाईआ। जिस दा लेखा बणया नाल राम रघुनाथी, रघुपत खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ।

सवा लक्ख नाती रावण तृष्ना, तमा तन रखवाईआ। जिस दी शहादत देवे शिव ब्रह्मा विष्ना, त्रैगुण अतीते आप दृढ़ाईआ। उस दा भेव जाणे कवणा, बुद्धि विच्च ना कोई चतुराईआ। जिस कारन दसरथ बेटा जंगलां विच्च भवणा, दह दिशा भज्जया वाहो दाहीआ। उह खेल अगम्मा बिन रावण राम किसे ना मन्नणा, दूसर समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ।

सवा लक्ख नाती रावण आसा, साह साह विच्च समाईआ। जिस नाल तक्के पृथ्मी अकाशा, गगन गगनंतर भेव खुल्ह़ाईआ। मन मन्दर अंदर पावे रासा, सुरती खेल खिलाईआ। जपे स्वास स्वासा, बिन रसना जिह्वा हिलाईआ। धुर दा मन्ने आखा, की राम दा राम समझाईआ। जिस दी पुत्तर धीआं वाली गिणती नहीं कोई शाखा, शनाखत सके ना कोई कराईआ। उह निरगुण निरवैर निरँकार दा साका, बिना राम दे पढ़न कोई ना पाईआ। त्रेता द्वापर जिस दीआं करदे आउँदे बाता, सिफ्तां विच्च सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणी खेल वरताईआ।

सवा लक्ख नाती रावण तमन्ना, तामस तमन्ना नाल मिलाईआ। जिस दा भेव ना जाणे गंगा गोदावरी सुरसती जमना, अठ्ठ सठ समझ किसे ना आईआ। जिस विच्च लहणा देणा वरनां बरनां, चुरासी तांघ रखवाईआ। हिसाब किताब जम्मणा मरना, काल पावे नाल बंधाईआ। निर्भय हो नहीं डरना, आपणा बल वखवाईआ। सीता सवाणी जंगल हरना, आपणा रूप बदलाईआ। चार जुग तों वक्खरा वेद पढ़ना, एह तृष्ना रावण अग्गे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सवा लक्ख नाती रावण अन्तर अन्तश खाहिश, खालस समझ किसे ना आईआ। बिना राम दे राम तों करी ना किसे तलाश, खोजत खोजत खोज ना कोई समझाईआ। जिस सुहावणा बनवास, राम जंगलां विच्च भवाईआ। उह लेखा जाणे साहिब गुणतास, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जिस मन का गढ़ सुहाया आप, दह दिशा रंग रंगाईआ। अंदर वधा के रोग सन्ताप, सहिंसिआं विच्च समाईआ। शास्त्र दे के जाप, दिती माण वडयाईआ। उस विषे नूं समझ सक्कया ना कोई साख्यात, जिस कारन राम रावण दोवें लोकमात प्रगटाईआ। जगत कहाणी जो विद्या विच्च कोई गिआ आख, विदवानां सिफ्त सालाहीआ। बाकी सारे करदे पसचाताप, सहिसा मन ना कोई चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सवा लक्ख नाती रावण दे अंदर दी झाकी, जिस दा लेखा जाणे कुछ विशिष्ट जिस निरंतर खुल्ह़ी ताकी, संदेशा पाती पत्रका राम राम राम समझाईआ। (३० अस्सू शहनशाही सम्मत ६)

**रोणा :** जगत रोवे जगत प्यार, नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख रोवे बिन गुर दीदार, जगत

विछोड़ा सह ना सके राईआ। जगत रोवे वेख मुरदार, जगत कुटंब रूप वटाईआ। गुरसिख रोवे गुरसिख विछड़न यार, जन विछोड़ा मूल ना भाईआ। सतिगुर किरपा देवे तार, दिवस रैण विछड़े ना विच्च संसार, आदि अन्त करे प्यार, छुप कदे ना जाईआ। अंदर वड़ के बैठा सच मनार, सिँघासण आसण आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका रोणा रिहा समझाईआ।

जगत रोण तों डरे जग, दुःख दर्द सोग रखाईआ। गुरमुख रोवे घर मिले हरि, बिन गुर दर ना सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा किरपा देवे कर, दिवस रैण वजाए सतार, दातार आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ देवा सफल करे सेवा, अमृत फल मेवा, धाम निहचल निहकेवा एका एक वखाईआ।

मन वैराग तन भइआ अनन्द, तन का भओ गवाया। गृह चढ़या नूरी चन्द, चढ़या चन्द छुप ना जाया। किशना सुखला ना कोई वंड, एका रंग रंगाया। सदा सुहेला देवे परमानंद, पारखू आपणी कसवटी आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वसाए आपणे घर, घर मेला सहज सभाया। (१५ जेठ २०१८ बि)

**रोटी :** रोटी अंदर जगत धन्दा, श्री भगवान खेल रचाईआ। धंदे अंदर गुरमुख बन्दा, प्रभ बन्दगी रिहा कमाईआ। बन्दगी अंदर सतिगुर बख्शंदा, बख्शिश आपणा नाम वरताईआ। कर प्रकाश चाढ़े चन्दा, जोत निरञ्जण कर रुशनाईआ। लेख चुकाए जेरज अंडा, उत्भुज सेतज पन्ध मुकाईआ। पार कराए डूंघी कंधा, समुंद सागर तारनहार अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रोटी रिज़क रहीम करीम दाता दानी आपणा हुक्म वखाईआ।

रोटी कारन फिरे संसार, प्रभ साची खेल खलाईआ। जिस रोटी पिच्छे दर्शन दित्ते धन्ने जट्ट गवार, निरगुण सरगुण आपणा रूप वटाईआ। सेवा करे नर निरँकार, बाल बाला रूप वखाईआ। सो रोटी लक्ख चुरासी जीव जंत रुजगार, अबिनाशी करते धार बंधाईआ। रोटी कमौंदयां लभ्भो हरि करतार, हर घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखावे आपणा दर, काया मन्दर अंदर दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजां करनी कार विच्च खुलाईआ। (१५ मध्घर २०२० बि)

**रुपइआ :** दर दवारे जो आया रुपइआ, माया मोह रिहा जणाईआ। जिनां मिल गिआ सतिगुर शब्द धुर दा सईआ, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। उह चढ़ गए अगम्मी नईआ, जो दो जहानां पार कराईआ। अबिनाशी करता पकड़े बहीआ, सगला संग बणाईआ। राए धर्म कढ़ु ना वहीआ, चित्रगुप्त ना हिसाब जणाईआ। गोबिन्द दा पूरा होया ढईआ, सुती उठे लोकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रुपइआ कहे मैं होया पेश, आपणा आप जणाईआ।

जिस माया नूं सरसे सुट के गिआ सतिगुर दस्मेश, जल धारा विच्च वहाईआ। ज्ञान दे के गिआ इक्क नरेश, नर नरायण सच समझाईआ। धुर दा नाम रहे सदा कोल हमेश, खा ख़र्च तोट ना आईआ। वधाई वज्जदी रहे लोकमात देश, सचखण्ड साचे मिले वडयाईआ।

ममता मोह मिटा के रेख्व, चिन्ता ग़म गिआ चुकाईआ । गुरमुखो इक्को पुरख अकाल दी रक्खणी टेक, दूजा नज़र कोई ना आईआ। मन वासना बुद्धि करनी बिबेक, दुरमत मैल धवाईआ। त्रैगुण माया ना लावे सेक, अगनी अग्ग ना कोई जलाईआ। गुरमुख दरगाह साची दा सदा सेठ, टकयां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धीरज धीर दए धराईआ।

रुपइआ कहे मैं वेखी दुनियां (ममता), माया ममता विच्च लोकाईआ । जन भगतां तोड़ां गढ़ हंगता, हँ ब्रह्म समझाईआ। मैं भरम भुलावां जगत पंडतां, पांधिआं दिआं रुलाईआ। भुलेखे विच्च रक्खां जीव जंतां, जगिआसू तत्तां दिआं लड़ाईआ। गुरमुख विरले बणावां बणता, नाता कूड़ कूड़ छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

रुपईआ कहे मेरा रूप अनोखा, दीन दुनी विच्च नज़री आईआ। शाह सुल्तानां नाल करदा धोखा, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। जेहड़ा सन्त फ़कीर धुर दी मंज़ल पहुंचा, उस दे दर कदे ना भाईआ। जगत वासना मुक्क जाए सोचा, समझ रहे ना राईआ। पूरी हो जाए लोचा, निझ लोचन दर्शन पाईआ। इक्को पुरख अकाल दी रक्खदे ओटा, ओड़क उहो होए सहाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटा, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। जिस दा प्रकाश निर्मल जोता, घट घट रिहा समाईआ। उस दा नाम भंडारा इक्को बहुता, जो इक्को वार झोली दए भराईआ। झगढ़ा मुक्क जाए चौदां लोकां, चौदां तबक ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

रुपइआ कहे मैं वेख्या जगत जुग, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। हिरस हवस विच्च लग्गी सर्ब अग्ग, तृष्ना सके ना कोई बुझाईआ। गुरमुख विरले मंज़ल चढ़ के उप्पर शाह रग, गृह मन्दर डेरा लाईआ। जिथ्थे अनहद अगम्मी नाद रिहा वज, अनरागी राग सुणाईआ। नाम भंडारा मिले अमृत धुर दी मध, मधुर धुन नाल शनवाईआ। बिन मक्के काअबिउँ साचे हुजरे महबूब दा हो जाए हज्ज, हाज़र हज़ूर दरस दिखाईआ। उह लालच दुनियां दीन जाए छड्ड, ममता मोह ना कोई हलकाईआ। वासना नालों हो के अड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ।

रुपइआ कहे मेरा सोहणा सोहजंणा रूप, बणत सोहणी नज़री आईआ। मैं भरम भुला के वड्डे वड्डे भूप, रईअत राउ रंक दित्ते रुलाईआ। मैं झगढ़ा पाया चारे कूट, दह दिशा होए लड़ाईआ। पिता पूत बणाई फूट, मां धी रही कुरलाईआ। गुरमुखां दे अंदरों मौली रुत, रुत्त रुत्तड़ी नाल मिलाईआ। पुरख अकाल दे बण गए सुत, अबिनाशी करता इक्को रहे ध्याईआ। साची धारों गए उठ, जिथ्थे जन्मे कोई ना माईआ। नाम खज़ाना मिल्या अतुट, दीन दयाल दया कमाईआ। जिस नूं ठग्ग चोर यार सके कोई ना लुट्ट, पलउँ गंढ ना कोई खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ।

रुपइआ कहे मैं रूपवन्त, सुचज्जा नज़री आईआ। मैं भरम भुलाए कोटी कोट कलिजुग काया सन्त, भुलेखे विच्च लोकाईआ। जिन्ह़ां नूं परम पुरख दा मिल गिआ इक्को अन्तर आत्म

मंत, ढोला इक्को रहे गाईआ। ओन्नां दे अग्गे मेरी सदा मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ । अग्गे जाण दी नहीं हिंमत, हौसला दित्ता ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्नां नाम शब्द साची दिती ख़िलत, ख़ालक हो के आपणे रंग रंगाईआ। रुपइआ कहे मैं सतिगुर किरपा सदा मनज़ूर, पुरख अकाल दया कमाइंदा। साची सेवा कर के हज़ूर, हज़रत आपणा रंग रंगाइंदा । नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, मार्ग सच इक्क समझाइंदा। सच प्रीती करनी बण मज़दूर, सेवक सेवा इक्क रखाइंदा। आसा मनसा मनसा विच्चों पूर, पूरन ब्रह्म दृढ़ांइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाम भंडारा देवे सदा भरपूर, पारब्रह्म पतिरमेश्वर प्रभ आपणा रंग रंगाइंदा। (२६ माघ शहनशाही सम्मत १)

**रूह :** रूह कहे मेरा धाम सचखण्ड, सति सति इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे दूई द्वैत नहीं कोई वंड, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन ना कोई वखाईआ। ढोला गीत नहीं कोई छन्द, नाद धुन ना कोई शनवाईआ। रसना जेहवा नहीं बत्ती दन्द, तन वजूद ना बणत बणाईआ। इक्को नूर नुराना सगला संग, संगी साथी बेपरवाहीआ । पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बख्शंद, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। धुर दी डोरी बंन्न नाल कमंद, कामल हो के आपणा अमल जणाईआ । ना कोई लहणा देणा लेखा सूर्या चन्द, जलवा इक्को इक्क रुशनाईआ । ना कोई वंड हँ ब्रह्म, तत्तव तत्त ना कोई दरसाईआ। ना कोई जन्म कर्म भरम, वरन बरन ना कोई दरसाईआ। इक्को इक्क अगम्मी सरन, सरनगत सहज सुखदाईआ। जिथ्थे ना कोई जन्म मरन, चुरासी गेड़ ना कोई भवाईआ। ना कोई नेत्र हरन फरन, नैण अक्ख ना कोई बदलाईआ। गहर गम्भीर गुणी गहीर इक्को करनी करन, करता पुरख दए वडयाईआ। जिस दी मंज़ल आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म हो के चढ़न, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। अगनी तत्त कदे ना सड़न, माया ममता ना मोह हलकाईआ। बिन वेखिआं बिन जाणयां बुझयां सूझ आवे उह चरन, जिस चरन दा चरनामित चरनोदक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच दर, दरगाह साची हक़ मुकाम सचखण्ड दवार एकँकार इक्को घर बणाईआ।

रूह कहे मेरा सच वसेरा, बिसतर सेज ना कोई हंढाईआ। किशना शुक्ला पख ना कोई अन्धेरा, मण्डल मंडप ना कोई रुशनाईआ। दूई द्वैत ना कोई झेड़ा, झगढ़ा ब्रह्म ना कोई समझाईआ। चार दीवारी छप्पर छन्न ना कोई खेड़ा, महल्ल अट्टल सोभा पाईआ। जिथ्थे साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण निरवैर निराकार वसे सज्जण मेरा, पीआ प्रीतम बेपरवाहीआ। सच सरनाई बेपरवाही दस्से इक्क वसेरा, विश्व आपणा रंग रंगाईआ । इस तों अगला भेव जाणे जेहड़ा, बिन पूरन सन्तां समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ।
रूह कहे मैं वसां धाम अथाह, सच दवारे सोभा पाईआ। जिथ्थे वस्सया शहनशाह, शाह पातशाह नूर खुदाईआ। जो हुक्में अंदर हुक्म रिहा चला, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जिस दी धार अपार रूप रंग रेख ना सके कोई जणा, समझ विच्च समझ ना कोई टिकाईआ।

उह लहणा जाणे सहज सुभा, सति स्वामी अन्तरजामी आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा नूर जहूर देवे वंड वंडा, मेहरवान आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणी रिहा खिलाईआ।

रूह कहे मेरा मालक इक्क, एकँकार नज़री आईआ। जो बिन अक्खरां तों लेखा देवे लिख, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। बिन अक्खां तों आवे दिस, साख्यात सोभा पाईआ। बिना मनसा तों पूरी करे इछ, भावना आपणे विच्च टिकाईआ। जिस दा जगत निराला दृश, दृष्टी इष्टी दा मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दए समझाईआ।

रूह कहे मेरा मन्दर अपार, हरि प्रीतम स्वामी दया कमाईआ। जिथ्थे सदा होए उजिआर, दीवा बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन सखीआं मंगलाचार, गीत अगम्म रिहा सुणाईआ। संदेशा देवे वारो वार, बिन तन्द सितार हिलाईआ। सदा सदा सद रहे खुशहाल, ग़मी रंग ना कोई बदलाईआ। जिथ्थे इक्को शब्दी लाल, दुलारा दुल्ला सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे बह के आपणी कार कमाईआ।

रूह कहे मैं वेख्या स्वामी सच, सति सतिवादी वेख वखाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द रिहा हस्स, खुशी भगतां नाल बणाईआ । आपणी धार करके आपणे वस, वासता आपणे नाल जुड़ाईआ। अगला मार्ग निरगुण हो के निरगुण दस्स, निरवैर आपणी कार कमाईआ। तुहाढ्ढे ढोले सिफ्ती गावे जस, बिन अक्खरां राग अलाईआ । जिस दी कोई ना समझे हद्द, हदूद विच्च हदूद सबूत आपणा नाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूह दा मालक आपणा आप प्रगटाईआ।

रूह कहे मैं वेख्या उह बाप, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जिस दा एथे ओथे सदा प्रताप, प्रताप सिँघ प्रताप ना कोई जणाईआ। जिस दा निरगुण नाल निरगुण साक, साक सज्जण बेपरवाहीआ। सभ दा लहणा देणा करे बेबाक, हिस्सा वंड झोली दए भराईआ। जिस वेले सचखण्ड दा खोल्हे ताक, ताकतवर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव आसा सभ दी पूर कराईआ । (२६ माघ शहनशाही सम्मत १)

**लाल दुपट्टा :** पंडत परोहत मंग दान, देवणहारा जजमान नज़री आईआ। सदा सदा सद करदा रहे पुंन महान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। भुक्खयां नंगयां पर्दा कजे आण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। कोझयां कमलयां दे ज्ञान, करे सच पढ़ाईआ । भुले भटके वेख बाल अज्ञाण, सुरती शब्द जगाईआ। कूड़ कुड़िआरा छुडाए पीण खाण, अमृत रस मुख चवाईआ। तीर निराला मारे बाण, अणयाला हत्थ उठाईआ। लेखा वेख लालो तरखाण, तरा तरा समझाईआ। नानक पिच्छों दवारा मंगया आण, आपणी अलख जगाईआ। मैं साईं दा सज्जण मुसलमान, अरबी बात सुणाईआ। मैं खाणा इक्क पकवान, सच्ची आस तकाईआ। अग्गों बोल किहा तरखाण, सुण मेरे सच्चे भाईआ। औह वेख साईं बैठा विच्च मैदान, सोहणी सफ़ा विछाईआ। तूं वी मिल उस दे नाल, दोहां खाणा दिआं वरताईआ। पैहलों इक्क मसला दस्सो मजीद कुरान, पैग़ाम धुरदरगाहीआ। सच महबूब किथे मिले आण, कवण महिराब

सुहाईआ। ओस वेले किहा मैं मंगता मंगण वाला दरबान, दरवेश रूप वटाईआ। नंगा पिण्डा तन काया माटी वखाए खाल, हड्डी चमड़ी जोड़ जुड़ाईआ। जे दयाल होयां धुर दे लाल, लाल दुशाला मेरे उप्पर पाईआ। कुकड़ ओसे वेले दिती बांग, उच्ची कूक सुणाईआ। पैहलों मेरी पत्त लैणी राख, सिर मेरे ओढण इक्क टिकाईआ। नानक किहा लालो एन्हां दोहां दे दे दात, ढाई गज़ दुपट्टा हत्थ फड़ाईआ। ओस वेले किहा वाह जजमान, नंगा हो के भज्जा वाहो दाहीआ। लालो किहा दस्स अहिवाल, कवण दवारे डेरा बैठा जमाईआ। नानक किहा छड्ड एह बाल अञाण, समझ कोई ना राईआ। एहदा लेखा अग्गे रखावां तेरे नाल, साचा मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्त हो मेहरवान, पुरख अकाल होए सहाईआ। कुकड़ उत्ते पा के लाल दुशाल, पैहलों एहदा लेखा देणा मुकाईआ। फेर ढाई गज़ एहदे लई करना त्यार, सोहणी बणत बणाईआ। अग्गों साईं उठ कीती पुकार, रहमत कर गोसाईंआ। एह मेरा मुसलम भाई यार, सच्चा मेली नज़री आईआ । अग्गों मिल्या इक्क जवाब, धुर दी धार समझाईआ। कलिजुग अन्तम दोहां पूरा करे ख़वाब, सुफने रैण विहाईआ। एह मांगत तूं भिखक दोहां देवे दात, झोली सच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे नंगे धड़, आया घर साईं चल, सच सिँघासण बैठा मल्ल, अछल छल आपणा खेल समझाईआ।

ढाई गज़ दुपट्टा दस्से सच, सर्ब रिहा समझाईआ। पैहलों प्रभ ने बधा लक्क, आपणे अंग लगाईआ। फेर बदन लिआ ढक, ओढण रूप वटाईआ। मैनूं दे वड्डिआई पंज हत्थ, लंमा दित्ता वधाईआ। साढ्ढे सत्तां फ़ुट्टां अंदर रक्ख, सोहणी खुशी जणाईआ। नाएं सिफ़रे कर इक्ठ, नबे इंचां वंड वंडाईआ। कर खेल पुरख समरथ, मेरी सोहणी सेव लगाईआ। पड़दे अंदर ढक, आपणे घर सुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ।

ढाई गज़ कहे मैं पिच्छे रिहा डरदा, भय विच्च समाईआ। कलिजुग अन्तम खेल वेख नर हरि दा, सोहणी खुशी मनाईआ। जो मेरे प्रेम प्यार पिच्छे तन उतों लाहवें पड़दा, धुर दी दया कमाईआ। बण दरवेश साडा बरदा, आपणा फेरा पाईआ। हौली हौली खेल करदा, करनी नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

ढाई गज़ दुपट्टा कहे बोल, धुर दा राग सुणाईआ। पुरख अबिनाशी गंढ मेरी दिती खोल्ह, आपणा हत्थ लगाईआ। मैं वेखां डावां डोल, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। हुण वसां कीहदे कोल, सज्जण कवण बणाईआ। भेव ना आवे उप्पर धौल, धरनी राह ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

दुपट्टे किहा मेरा ठाकर मेहरवान, मेरे उप्पर दया कमाईआ। आपणे दर कर परवान, फेर भगतां भेट चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी लेखा चुक्के आण, बाकी कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

दुपट्टा कहे मैं रंग रंगीला, लालन रूप वटाईआ। आदि जुगादी छैल छबीला, सोहणा रूप प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी इक्ठा करां कबीला, जन भगतां वेख वखाईआ। बिन पुरख अकाल मेरा बणे ना कोई वसीला, सच्चा संग ना कोई निभाईआ। दरगाह दिसे ना कोई वकीला,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए वखाईआ।

दुपट्टा कहे मैं करदा रिहा फ़रयाद, हौली हौली आवाज़ लगाईआ । कवण वेले रक्खे लाज, मेहरवान दया कमाईआ। सच कहे पुरख अबिनाश, इक्को वार दित्ता समझाईआ। तेरा कम्म सच्चा ख़ास, सोहणी सेवा लाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी आस, सो पूरी दए कराईआ । जन भगतां तेरा साथ, सगला संग निभाईआ। दया करे पुरख समराथ, मेहरवान सहाईआ । कलिजुग अन्त तैनूं रक्ख के भगतां उत्ते लाश, लछमी देवे माण गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी वंड वंडाईआ।

दुपट्टा कहे मैं रक्खी उडीक, नेत्र ध्यान लगाईआ। कवण वेला आए तारीख़, प्रभ तरीका दए समझाईआ। मेरी भगतां नाल लग्गे प्रीत, धुर दा जोड़ बणाईआ। मैं रल के गावां गीत, सोहँ ढोला चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी बणत दए बणाईआ।

बणत बणावणहारा, हरि सच्चा इक्क अखवाइंदा। आदि जुगादी गुर अवतारा, नर नरायण वेस वटाइंदा। लेखा जाण धुर दरबारा, लोकमात खोज खुजाइंदा। शब्द अगम्म बोल जैकारा, सच्चा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा।

दुपट्टा कहे मैं दित्ता साथ, धुर दा संग रखवाईआ। जन भगतां नाल सड़ के होया ख़ाक, आपणा आप मिटाईआ। किरपा करी पुरख अबिनाश, अबिनाशी साची धार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

मिले वड्डिआई लालो घर, गृह मन्दर सोभा पाईआ। मेरा चुकया पिछला डर, अग्गे खुशी इक्को नज़री आईआ। जन भगतां पल्लू लिआ फड़, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। छाती उत्ते बैठा चढ़, आपणा ज़ोर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी करता कार कमाईआ।

दुपट्टा कहे मैं वस्सया नाल, साचा संग रखवाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख भाल, नाता जोड़ जुड़ाईआ। उह वेख प्रभ दे लाल, मैं आपणा लाल रंग नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों प्रभ ने बदली चाल, निराली चाल आप रखवाईआ। जन भगतां पुच्छे हाल, दर दर घर घर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

दुपट्टा कहे मैं ढाई गज़, हरि मिणती नाम कराईआ, जन भगतां उत्ते रिहा सज, सोहणी मिली वडयाईआ। अग्गे पिच्छे पड़दा कज, आपणी सेव कमाईआ। सिड़ी उत्ते नाल सज, आपणा जोड़ जुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दिती इक्क वडयाईआ। सच वड्डिआई दस्से निरँकार, हरि सच्चा सच जणाइंदा। सतिजुग साची चले धार, सति पुरख निरञ्जण आप समझाइंदा। जन भगतां दिसे इक्क निशान, निशाना इक्को इक्क प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

दुपट्टा कहे मैं गिआ सड़, आपणा आप भेट चढ़ाईआ। अगला पिछला चुक्कया डर, खुशीआं रंग रंगाईआ। मैं दूर नेड़े वेख्या खड़, आपणी अक्ख खुल्ह़ाईआ। भगत भगवान ढोला रहे पढ़, सोहँ राग अलाईआ। मैं अग्गे हो के वेख्या दर, दर दरवाज़े अंदर ध्यान लगाईआ।

ओथे वसे नरायण नर, पुरख अकाल बेपरवाहीआ । दीपक जोत रिहा बल, नूरो नूर रुशनाईआ। सोहणा सुचज्जा दिसे महल्ल, अट्टल मनार वडयाईआ। ताब बेआब ना सक्कया झल्ल, प्रभ झलक इक्क वखाईआ। मेरा थर थर अंदर गिआ हल्ल, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। मेरा साह ना पवे खल, हौके दे दे रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

भगत कहे ओ दुपट्टे यार, उठ वेख ध्यान लगाईआ। आ वखावां तैनूं घर बार, जिस गृह बह के खुशी मनाईआ। तेरे वरगे कोटन कोट लाल रंग रहे नखार, आपणा जोबन रूप वखाईआ। वेख एन्हां नाल करे ना प्रभू प्यार, अक्ख नाल अक्ख ना कोई मिलाईआ। तेरे उत्ते हो दयाल, साडे नाल तेरा संग निभाईआ। दुपट्टा कहे एह वड्डिआई पुरख अकाल, दूजा नज़र कोई ना आईआ। भगत कहे असीं एसे दे लाल, जो लाल रंग तेरा नाल मिलाईआ। दुपट्टा कहे मैं एसे दी करदा रिहा भाल, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ । जन भगत कहे एह खेल करे कमाल, शहनशाह आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। दुपट्टा कहे मैं लालो बणाया दलाल, वचोला विचे विच्च इक्क रखाईआ। जिस दा प्रभू कदी ना मोड़े सवाल, नांह कर ना कदे सुणाईआ। ओन मैनूं सिख्या दिती सिखाल, पट्टी सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

मैं पट्टी पढ़ी लालो धार, सोहणी बणत नज़री आईआ। ओस किहा प्रभ नाल कर प्यार, प्रेम प्रीती इक्क लगाईआ। फिर कोई कम्म नहीं दुष्वार, औखी घाटी रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ।

दुपट्टा कहे मैं सेवा करी, आपणा आप भेट चढ़ाईआ । पिछला वेखो वेला वक्त घड़ी, घरीं गिआ समझाईआ। लाल ओढण गोबिन्द शब्दी रूप मंगया चमकौर गढ़ी, इक्क ध्यान लगाईआ। मेरे बच्चयां दी किसे नज़र ना आवे मड़ी, बालण हड्डीआं ना कोई बणाईआ। दस्सी गल्ल धुर दी खरी, ख़ालश रिहा जणाईआ। जिन्हां दा राखा आप हरी, हरि दवारे सोभा पाईआ। उह बंन्हे आपणी लड़ी, तन्द तन्द नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

गोबिन्द किहा सोहणा रंग लाल, जो धरती खून नाल रही चमकाईआ । सोहणा लग्गे जमाल, नूरी जोत रुशनाईआ। दो नीहां हेठां आए बाल, उत्ते रुमाल ना कोई टिकाईआ। दो घालण आपणी घाल, भेटा तलवार कराईआ। एन्हां उत्ते उह देवां लाल रुमाल, जिस रुमाल नाल जुझार अजीत मुख पूंझ आपणी जेब टिकाईआ। ओस वेले अजीत सिँघ किहा नाल प्यार, साहिब सतिगुर दे समझाईआ । एह की कीती कार, साडे नाल प्यार वधाईआ। गोबिन्द किहा नहीं एह लेखा दस्सूं जुझार, फड़ बांहों आप उठाईआ। तेरे पिच्छे कर त्यार, दोहां मेल मिलाईआ। अगला सच सच विहार, बिवहारी रूप वटाईआ। एह बच्चू बच्चयो बचया इक्क रुमाल, जो पुरी अनन्द विच्चों आपणे नाल लै के आईआ। बाकी सभ कुछ सरसे सुटया धन्न माल, ख़ाली हत्थ वखाईआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाल होवे दयाल, मेरा संग निभाईआ। ओस वेले मैं होवां किरपाल, गुरमुखां नाल रलाईआ। ढाई सौ साल पिच्छों वध के वध के वध के ढाई गज़ लंबा हो जाए जाल, आपणा रूप वखाईआ। ओस वेले फेर तुहाड्ढे नाल रलावां आपणे लाल, बच्चे बच्चयां ना मिलाईआ। जा के पुच्छां मुरीदां

हाल, मुशर्द रूप वटाईआ। जन्म कर्म दा जंजाल, लक्ख चुरासी डेरा ढाहीआ। साची दात रक्खां संभाल, आपणे विच्च छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

अजीत किहा सुण मेरे सतिगुर, प्यार साडे नाल रखवाईआ। किन्ने सिख तेरे वेंहदिआं वेंहदिआं गए तुर, आपणा आप भेट चढ़ाईआ । गोबिन्द किहा बच्चयो वेखयो तुसीं ना आइओ मुड़, हत्थ सिर सिर हत्थ उत्ते टिकाईआ। मैनूं बच्चयां दी नहीं थुड़, कोटन पुत्तर लवां प्रगटाईआ। तुसां जाणा चढ़ के घोड़, आपणी वाग भवाईआ। तुहाढ्ढी पुरख अकाल हत्थ डोर, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जुझार किहा पिता जी एह रुमाल जेहड़ा तेरे कोल, एह मैनूं दे जिस वेले आवे पसीना आपणा मुख साफ़ कराईआ। गोबिन्द किहा एह वस्त अनमोल, इकलोते हत्थ ना किसे फड़ाईआ। एह मैं रक्खणा कोल, ढया आपणे विच्च छुपाईआ। प्रगट हो के इस नूं लवां कोल, लंबा कर वखाईआ। पुरख अकाल जिस वेले आवे उप्पर धौल, उस दे कमर दिआं बंधाईआ। उह आपणी हत्थीं गंढ लवे खोलू, मेरे उत्ते टिकाईआ। मैं अग्गों कहिवां बोल, मैं तेरी अमानत तेरी भेट चढ़ाईआ। समरथ पुरख कहे अडोल, वाह वा गोबिन्द तेरी वड वडयाईआ। मैं भगतां नाल बड़ा करां चोलू, सोहणा प्रेम वखाईआ। प्रीती अंदर आपणा आप घोली घोल, पंज तत्त काया भेट चढ़ाईआ। फेर तेरे विच्च वस्सया अडोल, सहजे सहजे कदम टिकाईआ। बण वणजारा हट्ट दित्ता खोलू, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

गोबिन्द कहे एस रुमाल दा मुल, दो जहान सके ना कोई चुकाईआ । इस ने वड्डिआई देणी भगतां कुल्ल, गुरमुखां करे रुशनाईआ। इस दे उत्ते हरि संगत बरखणे फुल्ल, सोहणी छहिबर लाईआ। इस विच्च गुरमुख दे हस्सणे बुलू, जिन्नां नाल तेरा मेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

रुमाल कहे मेरा बणे रुमाला, रावी कन्ढे मिले वडयाईआ। गुर अरजन लिख के गिआ कमाला, सोहणा लेख समझाईआ। नहावण लग्गयां ढाई गज़ मंगया इक्क दुशाला, ओढण उप्पर टिकाईआ। कर ध्यान श्री भगवाना, इक्क आवाज़ लगाईआ। तेरा खेल दो जहानां, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा ओढण आपणे लेखे लाईआ।

पुरख अकाल किहा गज़ ढाई, लाल रंग नज़री आईआ। अरजन नाल होई कुड़माई, सोहणी बणत बणाईआ। पुरख अकाल दए वधाई, दर ठांडे मंग मंगाईआ। इस दा लेखा दए चुकाई, कलिजुग आवे बेपरवाहीआ। जन भगतां उत्ते दए टिकाई, सोहणी सेव कमाईआ। जो जोतों विछड़े अन्त जोती लए मिलाई, गुर अरजन तेरी धार नाल रखवाईआ। पैहलों रावी कन्ढे तैनूं लए मंगाई, नाल भठिआला जोड़ जुड़ाईआ। फेर हरि गोबिन्द आसा पूर कराई, आर पार हरि संगत डेरा लाईआ। फेर चल के आए वाहो दाही, नानक विछड़े लए मिलाईआ। फिर वी चले आपणी रज़ाईं, राज़ आपण विच्च छुपाईआ। जो पिछले साल लेखा दस्स के गिआ माही, मेहरवान दए वडयाईआ। सो पूरब पूरा रिहा कराई, परम पुरख भेव चुकाईआ। ढाई गज़ दए दुहाई, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ओ रुमाल वाले पकड़ी बाहीं, गढ़ी चमकौर याद कराईआ। सिर दे के ठंडी छाईं, सोहणी रुत्त सुहाईआ।

गुरमुख सेज उत्ते मैनूं दित्ता विछाई, हरि संगत नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ।

रुमाल कहे जिस उप्पर आए लाल पड़दा, गोबिन्द पालकी दए बणाईआ। बेशक जीवां दिसे तन माटी ख़ाक सड़दा, गुरमुख घर साचे जावे चाईं चाईंआ। महल्ल अट्टल मनारे वड़दा, सोहणा बंक सुहाईआ। वेखे खेल पिर हरि दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

लाल रंग कहे मैं मंगी मंग इक्क, इक्क अग्गे कर अरजोईआ। गोबिन्द लेखा दे लिख, लिखया ना कोई मिटाईआ। जेहड़ा तेरा सच्चा सुचा पूरा होवे गुरसिख, उस उत्ते मैनूं पाईआ। मैं उतों वेखां उहदा मुख, आपणा ध्यान लगाईआ। जिस वेले गुरसिख काहनी लैण चुक्क, मैं खुशीआं राग अलाईआ। उठ भरावा तेरा पैंडा पिछला गिआ मुक्क , अग्गे चलीए चाईं चाईंआ। औह वेख जिस नूं कहन्दे गुजरी सुत, शब्दी धार समाईआ। जिस दे अंदरों पुरख अकाल पए उठ, आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां रिहा पुच्छ, हौली हौली कोल बहाईआ। दस्सो तुहानूं कोई है दुःख, दुखीआं दर्द वंडाईआ। एन्हां पिच्छे वार सभ कुछ, आपा भेट चढ़ाईआ। एसे कर के बदलया रुख़, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। मेरा दाणा पाणी गिआ मुक्क, गुरसिखो तुहाढ्ढे भंडारे मिले वडयाईआ। घर घर पकदे रहण रोट, लालो वांग सारे दए तराईआ। किसे विच्च रहण ना देवे खोट, खोटयां खरे बणाईआ। वंड पाए ना कोई वरन गोत, ज़ात पात ना कोई रखवाईआ। वड्डा छोटा ना कोई सोच, नीच ऊँच ना कोई वखाईआ । हर घट रक्ख के आपणी जोत, जोती जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। रुमाल कहे मैं गिआ वध, वाधा गुरमुखां घर नज़री आईआ। जिन्हां पुरख अकाल लिआ सद्द, गोबिन्द ओट तकाईआ। मैं वी ओन्हां नाल आया भज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं सेवा करां पड़दा देवां कज, अंग लाग खुशी मनाईआ। हुण मेरा नहीं वस, प्रभ धुर फ़रमाण दित्ता समझाईआ। तेरा भगतां नाल साथ, अगला राह वखाईआ। नंगा धड़ंगा चंगा लग्गे पुरख अबिनाश, क्यों एह भुखयां नंगिआं रिहा सताईआ। जे एन्हं दुःख लगे खास, फिर आपे दुखीआं दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ।

लाल दुपट्टा कहे भगतो तक्को नाल अक्ख, मैं सभ नूं दिआं समझाईआ । तुहाढ्ढे नालों कर के वक्ख, तुहाढ्ढा भाई दरगाह दित्ता बहाईआ। प्रभ ने दित्ता पिछला हक़, वस्त आप वरताईआ। उह बैठा ओथे डट, आपणा आसण लाईआ। नाले कहे मैं वड्डा जट्ट, ज़ोर बल वधाईआ। मैं वेख्या पुरख समरथ, निरगुण सरगुण खेल कराईआ । मैं बोल के किहा हस्स, इक्क आवाज़ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। दुपट्टा कहे मेरी सेवा अपार, साहिब सतिगुर आप लगाईआ। जिस दे उत्ते मैनूं गुरमुख देण डाल, सोहणी वंड वंडाईआ। मैं ज़रूर सच दवारे लै के जावां नाल, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। क्यों गोबिन्द ख़ाली हत्थ ना रक्खे बिन कदे रुमाल, रुमाल नाल गुरमुखां मुख साफ़ कराईआ। उह ना जाणे शाह कंगाल, वड्डे छोटे ना कोई वडयाईआ। मैं हौली हौली उहदी गोदी देणे सवाल, लै के जावां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

गुरमुख कहे बेशक दुपट्टे मैनूं लै के आया, आपणा पन्ध मुकाईआ । मैं वेंहदा सां जदों लालो भेट चढ़ाया, मध्घर महीना याद कराईआ । ओस वेले मेरे अंदर फुरना फुरया एह की सांग रचाया, समझ कोई ना आईआ। मैनूं किसे हौली जिही आख सुणाया, एह तेरे लई बणत बणाईआ। पैहलों तैनूं एहदे नाल रलाया, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। क्यों पुरख अबिनाशी फेरा पाया, बेपरवाह वड्डी वडयाईआ। मैं किहा नंगा बैठा जट्ट नज़री आया, जट्टां वरगा मेरा भाईआ। असां पुराणा कपड़ा तन हंढाया, एह ज़ेवर ज़री सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। (२४ माघ २०२० बिक्रमी)

**लाल दस्तार :** सतारां हाढ़ कहे भगतां दा विहार, भगवन दए दृढ़ाईआ। गुरमुख साचे लाल, सन्त सुहेले लए उठाईआ। जिनां दे उत्ते कफ़न देण लाल, दीन दयाल दया कमाईआ। अगे वखरी चल के चाल, हुक्म दए समझाईआ। गुरमुख रूप होए गुलाल, सोहणा रूप वटाईआ। जिनां दा प्रभू होए दलाल, विचोला इक्क अखवाईआ। इनां पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सतारां हाढ़ कहे साचे भगत प्रभ दे बण गए लाल, पिता इक्को नज़री आईआ। जांदी वार ओनां दे सीस उत्ते एसे रंग दी होवे दस्तार, खुद मुखत्यार दए बणाईआ। सत्त रंग निशाना कहे मैं लै के जाणा ओस दरबार, जिथ्थे वसे शहनशाहीआ । भुल के गुरमुखो एह छडयो ना कदे विहार, साची सिख्या दिती समझाईआ। एह गुरमुख दी दस्तार, एह गुरसिख दा प्यार, एह भगत दा उधार, एह जोत दा उजिआर, आदि शक्त दा शिंगार, सोहणा रूप देणा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एस पगढ़ी दी ख़ातर, ख़तरे तुहाढ़े दित्ते गवाईआ। (१७ हाढ़ श सं १)

**लोड़ :** सन्त जनां प्रभ सदा लोड़, बिन लोड़ों नज़र कोई ना आइंदा । सन्त साजण चढ़े साचे घोड़, घोड़ा सतिगुर आप वखाइंदा। सन्त साजण लोआं पुरीआं लए दौड़, सतिगुर दो जहानां राह वखाइंदा। सन्तां कूड़ी क्रिया कढ़ुण दी सदा लोड़, कूड़ कुड़यारा सतिगुर मोह चुकाइंदा। सन्त आत्म परमात्म मिलण दी सदा रक्खण लोड़, बिन मेल मिलावे सन्त कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची लोड़ इक्क जणाइंदा।

साची लोड़ सदा सद, सति सतिवादी आप जणाइंदा। बिन सतिगुर नौं दवारे पार ना कोई लंघे हद्द, जगत वासना ना कोई मिटाइंदा । कूड़ा मन्दर कोई ना देवे छड्ड, हरि मन्दर आसण कोई ना लाइंदा । बिन लोड़ों ख़ाली हड्ड, पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। साची लोड़ अंदर भगत भगवन्त इक्क दूजे नाल गए बज्झ, जुग जुग भगवन भगतां लोड़ पिच्छे आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची लोड़ इक्क जणाइंदा। साची लोड़ आत्म नाता, बिन लोड़ परमात्म नज़र किसे ना आईआ । साची लोड़ करे उत्तम जाता, अजाति रूप ना कोई जणाईआ। साची लोड़ जणाए साची गाथा, बिन लोड़ सतिगुर नाद ना कोई सुणाईआ । लोड़ कराए पूजा पाठा, इष्ट देव हवन सिख्या इक्क सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिनां लोड़ों पुरख अकाल नज़र ना आईआ।

लोड़ बिनां ना कोई बन्दा, बन्दगी लोड़ बिनां ना पाईआ। चाहे चंगा चाहे मंदा, बिन लोड़ों कोई नज़र ना आईआ। सतिगुर सच सच्चा अनन्दा, अनन्द आत्म इक्क जणाईआ। आत्म सेजा बैठा पलंघा, पारब्रह्म वेख वखाईआ। बिन लोड़ वज्जे ना कदे मरदंगा, नाद धुन ना कोई शनवाईआ। बिन लोड़ों कोई ना चले संगा, सगला संग ना कोई रखाईआ। बिन लोड़ों अन्तम होए नंगा, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। बिन लोड़ों मिले ना परमानंदा, रस सच ना कोई चखाईआ। बिन लोड़ों रसना जिह्वा बत्ती दन्दा गाए कोई ना छन्दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तां दस्से सदा लोड़, बिन लोड़ों सन्त लोकमात ना आईआ। (२५ माघ २०१६ बि)

**लोहड़ी** : वरुण कहे मैं कहवा लो हरी लोहड़ी कहे जहान, लोहड़ी कहण वाला लोड़ींदा सज्जण कोई ना पाईआ। (३० पोह श सं २)

सदी चौधवीं कहे मेरी खुशीआं वाली लोहड़ी, अंक सहेलड़ीओ दिआं जणाईआ। वेखो मेरी प्रभ दे नाल बण गई जोड़ी, जोड़ा धुर दा लिआ बणाईआ। ना मैं काली ना मैं गोरी, रूप रंग रेख नज़र ना कोई पाईआ। मेरे मालक मेरे उत्ते किरपा कीती भोरी, भाण्डा भरम दित्ता भन्नाईआ। दीन दुनी तों कर के चोरी, चरनां विच्च लिआ रखाईआ। मेरा माण ताण ना ज़ोरी, निउँ निउँ लागाँ पाईंआ। मैं आदि जुगादि दी बांकी छोहरी, छैल छबीली नज़री आईआ। मेरी आसा नवीं नकोरी, निरवैर दित्ती वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरा साहिब स्वामी सज्जण, सोहणा नज़री आईआ। मैं प्रेम प्रीती करां मजन, धुर दा रंग रंगाईआ। सच संदशे आई सद्दण, होका इक्क अलाईआ। मेहरवान महबूब सच मुहब्बत विच्च रहे तेरी लगन, दूसर अवर ना कोई मनाईआ। ममता मोह रहे ना बंधन, कूड़ी क्रिया देणी कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं लोहड़ी वंडां, वंडी धुर दी पाईआ। मैं प्रभ दे कोलों प्रीती लै के आई पंडां, अनडिठ्ठड़ा भार उठाईआ। मैं किसे वड़ी नहीं मन्दर मसीत गुरदवार शिवदवाले मठ्ठ पत्थर इट्टां वाली कंधां, महिराबां विच्च ना डेरा लाईआ। मैं तक्कदी इक्क चन्दा, जो चन्द नूर करे रुशनाईआ। जो खेल वखाए सूरा सर्बंगा, सो सच दिआं समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान दया कमाईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरी लोहड़ी दा लोहड़े पैणिआ ना कीता चाओ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मैं हलूणयां फड़ के बाहों, अक्ख दित्ती खुलाईआ। वेखो हँस होए काउँ, काग हँस रूप बदलाईआ। साचा धर्म ना कोई नयाउँ, अदल इन्साफ़ ना कोई कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सदी चौधवीं कहे लोहड़ी दे थां प्रभ दा मिले प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों प्रगटाईआ। तुसीं उहदे उह तुहाठ्ठा यार, यारांना धुर दा लिआ लगाईआ। भरोसे विच्च रक्खो इतबार, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। मेहरवान करे सच शिंगार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । सदी चौधवीं कहे चाओ अंदर गाओ मंगल, मंगलाचार वडयाईआ । शरअ कटो संगल, ज़ंजीरी नज़र कोई ना आईआ। सच प्रीती चढ़े अगम्मी रंगन, रंगत इक्क रंगाईआ। तुहाढ्ढा पवित्र होवे बदन, अन्तर आत्मा नूर रुशनाईआ। सच दवारा मिल्या पतन, दरगाह विच्च वडयाईआ। दीन दयाला आया रक्खण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक्क वरवाईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरे साहिब दा वेखो आग़ाज़, अकल बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। धुर दे नाम दी सुणो आवाज़, जो अज़ल तों दए बचाईआ। जिस आपणी साजण साज, सगला संग गुरमुख रिहा तराईआ। सति धर्म दा बदल के आप रिवाज़, रयाइत आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणी खेल खलाईआ। (२६ पोह शहनशाही सम्मत ४)

गुर अवतार पैगम्बर कहण की भाव प्रभू तेरी लोहड़ी, सच दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा मैं आपणी आपणे नाल बणा के जोड़ी, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपणी वस्त आपे दे के थोड़ी, आपणी झोली आप भराईआ। आपणी खेल आप तोरी, तुरत आपणी कार कमाईआ। जिस दा रूप नारी नर ना जोरू जोरी, जोरू नज़र कोई ना आईआ। जोबनवन्ती ना बांकी छोहरी, मेंढी सीस ना कोई गुंदाईआ। हिरदा कपट ना दिसे कठोरी, ममता मोह ना कोई हलकाईआ। हाए उफ ना करे बौहड़ी, दुःखी हो ना कदे कुरलाईआ । इक्को वर इक्को दर इक्को घर मेरा रही लोड़ी, सच लोड़ी नूं लोहड़ी दित्ता बणाईआ। एह रीती विष्न ब्रह्मा शिव ने तोरी, निरगुण कोलों निरगुण मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वरवाईआ।

लोहड़ी कहे मैं सारे वेखे मंगते, मंगे जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी गए लंघदे, समां समें विच्चों बदलाईआ। मैं खेल वेखदी रही ओस अनन्द दे, जो अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दर तों सारे गए मंगदे, गुर अवतार पैगम्बर झोलीआं डाहीआ। उह लोहड़ी प्रभू एहनां भगतां वंड दे, जिन्नां तेरी आस रखवाईआ। जे पिच्छे विछड़े ते अग्गे गंढ दे, नाता सके ना कोई तुड़ाईआ। शौह दरया जगत विच्चों बेड़ा बंन्ह दे, फड़ आपणे कंध उठाईआ। जेहड़े तैनूं भगवन करके मन्नदे, उन्नां आपणा रंग रंगाईआ। सच प्रेम दा साचा धन दे, मन मनसा कूड़ गवाईआ। फिके बोल ना सुणीए कन्न दे, चुगली निन्दया ना कोई चतुराईआ। जे किरपा करें ते दर्शन करीए गोबिन्द तेरे चन्न दे, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जेहड़े कूड़े नाते तन दे, जगत जाईए तजाईआ। अंदरों लेखे मुका दे ग़म दे, चिन्ता चिखा बाहर कढ्ढाईआ। मेल मिला लै हँ ब्रह्म दे, पारब्रह्म आपणे विच्च मिलाईआ। जन भगत जुग चौकड़ी जदों जम्मदे, जम्म के मंगते तेरे अग्गे झोली डाहीआ। सच बख्शीश आपणा रूप ब्रह्म दे, पारब्रह्म सरनाईआ। लेखे रहण ना जन्म कर्म दे, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। भुलेखे कढ्ढ दे अंदरों भरम दे, हउमे हंगता रहे ना राईआ। आपणे घर विच्च आपणा जरम दे, जन भगतां भुल्ल जावे जम्मण वाली माईआ। सदा पुजारी रहण तेरे चरन दे, दूसर सीस ना कदे निवाईआ।

भय चुका दे डरन मरन दे, चुरासी गेड़ कटाईआ। तेरे हो के तेरे ढोले पढ़नगे, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरनाई सरन दे, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। (२६ पोह श सं ५)

मोहि माई देवे लोहड़ी, लोड़ींदी आसा पूर कराईआ। भगत भगवान बणी रहे जोड़ी, विछोड़ा दो जहान ना कोई कराईआ। प्यार मुहब्बत दी चढ़े रहण घोड़ी, हरिजन साचे आसण लाईआ। किसे दी आशा रहे ना खोरी, बहु गुण आपे दए कराईआ। सन्त सुहेले बणाए मोहरी, लोकमात दित्ते प्रगटाईआ। रैण मेटे अन्धेर घोरी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चरन लिआए खिच्च ज़ोरी, ज़बरदस्ती आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधान नाल बंन्ह के डोरी, आत्म परमात्म रिहा जुड़ाईआ। जगत विकार रिहा होड़ी, कूड़ी क्रिया बाहर कढ़ाईआ। हत्थ रक्खे पुशत पनाह मोरी, सीस जगदीस आप टिकाईआ। लोहड़ी कहे कुछ खेल वखाउणा शाह अफगान नाल पिशोरी, पशावर पड़दा लाहीआ। खेल वेखणा दो धार दिसौरी, दोहरी आपणी कार भुगताईआ। दीन दुनी तक्के बण के जौहरी, जौहर आपणा इक्क प्रगटाईआ। सृष्टी नाता तुटे खौंत शौहरी, छोहर नज़र किसे ना आईआ। दीन दुनी करे बौहड़ी बौहड़ी, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

लोहड़ी कहे मैं पाउण आई लोहड़ा, लोड़ अवतार पैगम्बर गुरूआं पूर कराईआ। इक्को संदेस देवां गावां धुर दा दोहरा, दोहरी आपणी सेव कमाईआ। जिस प्रभू दा नाम खांदे रहे भोरा भोरा, मसती विच्च मस्ताने हो के खुशी बणाईआ। उह साहिब खेल करे होर दा होरा, अवर अवरा आपणी कार भुगताईआ। जन भगतां करन आया भाग मथोरा, मिथ्या दस्से सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

लोहड़ी कहे मैं की दस्सां आप, सपतस रिखी देण मेरी गवाहीआ। जिन्नां रुत्त बदलण ते कीता सी जाप, माघी तों पैहलां पिछली रुत्त बदलाईआ। नाले रो के किहा प्रभू तोड़ जगत सन्ताप, सहिसा पिछला रहे ना राईआ। आत्म ब्रह्म आपणा जोड़ नात, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। लेखा रहे ना फेर मात, मातर वंड ना कोई वंडाईआ। धुर दे मालक बख्श दे दात, दयावान होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

लोहड़ी कहे मैनूं सदा मंगदे गए भगत, प्रभ अग्गे आस रखाईआ। दुनी खाण पीण दा नशा जगत, कूड़ क्रिया विच्च हलकाईआ। सिरफ सच दात लभ्भदे गुरमुख फकत, जो फिकरा इक्को गाईआ। इक्को सुहावणा समां समझण वक्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। नाता तोड़ के बूंद रकत, आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। निगह मार उप्पर धरत, धरनी धवल वेख वखाईआ। सच दात केहड़ा देवे उतों अर्श, अर्शी प्रीतम झोली पाईआ। खुशीआं वाला नवां साल चढ़े बरस, चरन धूड़ पुरख अकाल नहावण नहाईआ। मिटे दो जहानां हरस,

मज़न माघ इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

लोहड़ी कहे इक्क दिन सीता ने मंग लई मंग, राम अग्गे झोली डाहीआ। मैनूं उह लोहड़ी बख्श लोड़ींदे साजण तेरा सदा रहवे संग, सगला संग रखवाईआ। भावें दुःख झल्लणे पैण होवां तंग, सोग जगत वाला जणाईआ। पर मेरे अन्तर तेरे प्यार दा निकले छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। बेशक मुख ना उघड़े बोलण ना बत्ती दन्द, अजपा जाप तेरा नाम ध्याईआ। मेरे अन्तर निरंतर निज आत्म देणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। इक्को मंग रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं दीन दयाल बख्शंद, रहमत सच देणी कमाईआ। तेरी याद विच्च खुशीआं वाला साल जाए लंघ, ग़मी नेड़ कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। लोहड़ी कहे इक्क दिन कृष्न तों मंगण चल्लया सुदामा, जा के ढोला दित्ता सुणाईआ। मैनूं लोहड़ी दे दे ओ बंसरी वाल्या काहना, मुकट नैण वाले आपणा नैण बदलाईआ। छेती झोली पा दे आपणा दाना, दात धुर दी इक्क वरताईआ। झट्ट कृष्न ने पकड़ के काना, उहदे हत्थ दित्ता फड़ाईआ। सुदामे हस्स के किहा एहदा की निशाना, निशानी दे समझाईआ। कृष्न किहा जिस वेले कलिजुग रिहा ना कोई सिआणा, बुद्ध बिबेक ना कोई कराईआ। उस वेले प्रगट होवे कल कलकी मेहरवाना, महिबूब धुरदरगाहीआ। जिस ने नौ सौ चुरानमे चौकड़ी जुग दा लेख लिखाणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे चाईं चाईंआ। उहदे धर्म ग्रंथां उत्ते इस काने दी कलम दा होए निशाना, पैहला अक्खर एसे काने दी कानी नाल बणाईआ। खुशी हो गिआ ब्राह्मण निव निव सीस झुकाणा, नमो नमो सुणाईआ। वाह मेरे त्रैलोकी नाथ भगवाना, तेरी बेपरवाहीआ। मैं ते भुक्खा मंगण आया सां कोई दे देवे अन्न दाणा, तूं भुक्खे दे हत्थ विच्च सड़या काना दित्ता फड़ाईआ। पर मैनूं फेर वी तेरे उत्ते माणा, भरोसा रक्ख के सीस झुकाईआ। जे एस जुग नहीं ते अगले जुग ज़रूर देवेगा खज़ाना, अतोट अतुट्ट वरताईआ । तेरे दर दी मंगी लोहड़ी मेरे अन्तर होई परवाना, परम पुरख मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछल्यां लेखयां दा लेखा पूर करे जन भगतो तुहाढ्ढे नाल लगाया याराना, याराने दी यारी पिच्छेधुर दा प्यार लोड़ींदा सज्जण लोहड़ी वाले दिवस तुहाढ्ढी झोली पाईआ। (२६ पोह शहनशाही सम्मत ७)

गिरधारा सिँघ तेरी काली पग्ग, रंग काले नाल सोभा पाईआ। संपूरन होया भगतां जग, जुगती प्रभ ने दित्ती बणाईआ। लेखे लग्गे भट्ठीआं विच्च डाहुण वाले अग्ग, बालण वाले साचे लेखे पाईआ। सचखण्ड दवारे सेवादार सारे जाण भज्ज, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ । जिन्नां मंडे दित्ते ठप्प, पेड़िआं सेव कमाईआ। सेवा कीती हस्स हस्स, वड्डे छोटे भज्जे वाहो दाहीआ। प्रभ खुशीआं दा माणदे रहे रस, चिन्ता दुःख गवाईआ। लेखे लाउँदे रहे आपणी रत्त, सर्दी विच्च राती जागत आपणी खुशी बणाईआ। सिख्या लैंदे रहे साची मत, कूड़ विकार गवाईआ। लंगर त्यार कर के लांगरी लैण रक्ख, पाल सिँघ बख्शीश कांशी नाल मिलाईआ। लंगर कहे मेरी सुहज्जणी हो गई छत, छत्तरधार दित्ती वडयाईआ । जिस भगतां

रक्खी पत्त, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उह मुड़ के आया वत, बेवतनां लए मिलाईआ। वेखे सभ नूं आपणी अक्ख, अक्खरां वाला समझ सके ना राईआ। जगत जहान नालों वक्ख, भगत भगवान रीत चलाईआ। भगत भंडारा जेहड़ा प्रेम विच्च गिआ पक्क, लोह अगनी तत्त तपाईआ। उह उहनां भगतां लिआ छक, जो शहनशाह भगत दित्ते बणाईआ। नाम रस लै के यक्क, यक्क मुशर्द वेख विखाईआ। झोली उन्हां पिआ हक़, खाली भंडारे दित्ते भराईआ। किरपा करी पुरख समरथ, मेहर नज़र उठाईआ। भावें गिरधारा सिँघ दा विंगा टेडा हत्थ, फेर वी ज़ोर नाल कड़छे दित्ते हिलाईआ। सजे खब्बे हो के रिहा नट्ठ, धौण टेडी रिहा विखाईआ। जदों गुस्से विच्च आवे झट्ट, अक्खां लाल कढ़ु डराईआ। फेर पट्टां ते मारे हत्थ, मोटा पतला वेख विखाईआ। भट्ठीआं दे इरद गिर्द टप्प, कन्न खुरक के पग्ग लए हिलाईआ। आंढ गवांढ नूं दस्स, सबज़ी भाजी रिहा चिराईआ। लोहड़ी कहे मैं लोहड़ा पैणी कहां बोल के वज, वाजा प्रेम वाला वजाईआ। जन भगतां खुशी खुशी होई जब, दरस पाया प्रभ सतिगुर मिल के खुशी बणाईआ। सृष्टी दुनी रसना लाउँदी मध, कूड़ विकार हलकाईआ। जन भगतां साची मंज़ल पार कर के हद्द, दर घर साचे सोभा पाईआ। जिन्हां नूं लोहड़ी विच्च लोहड़े पैणी वस्त गई लभ्भ, अनमुल्ल दित्ती वरताईआ। हरिजन गुरमुख दर्शन करन रज्ज, अक्खीआं नैण नैण बिघसाईआ। उह वेखो नारद आया भज्ज, बोदी रिहा हिलाईआ। हस्स के कहन्दा जिस वेले मैं गिरधारा सिँघ दा सुरीला सुणया छंत, आपणी लई अंगढ़ाईआ। किन्नर यशप अपछरां पईआं नच्च, कुद्दण टप्पण थाउँ थाईंआ। इक्क दूजे नूं कहण उह भगत किहो जिहा होवे सच, कवण रूप सोभा पाईआ। नारद कहे मैं ताली मार के किहा उहदा रंग काला ते मोटी अक्ख, जगत जहान सोभा पाईआ। पर जदों तुरदा इक्क हत्थ ढाक उत्ते कद कदे लए रक्ख, बड़ा सोहणा विंगा टेडा नज़री आईआ। मैं उस दा करां की जस, की सिफ्तां नाल मिलाईआ। मेरे नाल चलो कमलीओ मैं तुहानूं देवां दस्स, अक्खां लउ खुल्हाईआ। सारीआं कहण उठो चलीए नस्स, भज्जीए वाहो दाहीआ। जे उस दा वड्डा तप, तपीआं सोभा पाईआ। असीं तुहानूं कहीए जे भगता नौं सौ नड़िनवें अपछरां सानूं सारीआं नूं लएं रक्ख, लंगर विच्च तेरा हत्थ लईए वटाईआ। वेहलीआं हो के फेर तेरे सिर नूं दईए झस, जो बिनां वाला तों सोभा पाईआ। फेर तेरी छोटी लत्त नूं बंन्हीए कस, इक्को जेही इक्को रंग नज़री आईआ। जे जयादा घुटया तैनूं खुशी विच्च पै जाए गश, फेर मुख अमृत दईए चवाईआ। बालण चुक्क के लिआउण किन्नर यशप, गंधरव सेव कमाईआ। सानूं डर लगदा तेरी सूरत वेख के तेरे प्यार विच्च ना जाईए फस, मुहब्बत विच्च तेरे ढोले गाईआ। सच दस्सीए किते गुस्से विच्च आ के सानूं खौंचे ना मारी ठप्प ठप्प, साडीआं पट्टीआं दएं हिलाईआ। जे इक्क वार आखेंगा ते असीं भर भर गुंन्ह देवांगीआं आटे दे टप्प, फुलके लोहां उत्ते टिकाईआ। तैथों डरदीआं सोहँ दा करांगीआं जप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। पर तूं वी साडे प्यार विच्च पसीने दी थां डोल्ही रत्त, रंग रतड़ा हो के नज़री आईआ। झट्ट नारद बोलया थोड़ी मेरी वी खिच दिउ लत्त, नाले बोदी दिउ वधाईआ। मैं वी चरोकणा रिहा सां तक्क, की खेल प्रभू कराईआ। तुसीं इधर वेखो मेरा गिरधारे नालों चंगा नक्क, मेरीआं नासां विच्च वाल नज़र कोई ना आईआ। मेरे रुथे विच्च नहीं कोई वट्ट, गिरधारा सिँघ तिउड़ी बल पा के चढ़ाईआ। गिरधारा कहे उह नारद वेख आ

मेरीआं भट्ठीआं दी अग्ग बले लट लट, जिथ्थे लाटां वाली सेव कमाईआ। तैनूं पता नहीं मेरा पातशाह दो जहानां किरसाणां ते शब्द धार दा जट्ट, जिस मैनूं दित्ती वडयाईआ। तुहानूं सारयां नूं खिच्च के कीता इक्ठ, सिर सके ना कोई उठाईआ। जे मेरा दिल कर आया ते मैं सारीआं नूं लऊंगा रक्ख, तैनूं वी एसे जग्ग़ा सेवा विच्च लगाईआ। तूं मेरी मझ नूं पाया करीं कख, मैं मुच्छां नूं ताअ दे के बैठां चाईं चाईंआ। नारद किहा एथे सभ दा सांझा हक़, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ । मैं वी सेवादार जुग चौकड़ी दा पक्क, पक्की दिआं सुणाईआ। पर मैं तेरे नालों प्रभू दे प्यार विच्च सति, जिस सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग ना कीती कुड़माईआ। पर तूं याद कर लै सतिजुग आहलया नूं लाहिआ सथ, पथर पाहन दित्ता बणाईआ। जे राम उप्पर चरन ना देंदा रक्ख, उस नूं मिलदी ना माण वडयाईआ। मैं तद दा डरदा नारद कहे कि तेरा साहिब समरथ, दाता बेपरवाहीआ। अज्ज लोहड़ी तूं खुशीआं मना मला लै हत्थ, बिन हथेली हत्थ लगाईआ। जे तूं गिआ एं थक्क, मैं अपछरां नूं कहां एहनूं घुटो चाईं चाईंआ । पर वेखी नौं सौ नड़िनवें कोलों ना जाईं अक, अंदरे अंदर आपणा मन डराईआ। नारद कहे पुरख अकाल दीन दयाल दा जगत भंडारा सदा सति, सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए पंचम पंच प्यार दे तत्त, तत्तव तत्त आपणे रंग रंगाईआ। (२६ पोह शहनशाही सम्मत अठ)

धर्म दी धार कहे लोहड़ी, लुड़ींदे साजण तेरी शरनाईआ। आत्म परमात्म बणाईं जोड़ी, परम पुरख होणा सहाईआ। साचे शब्द दी चाढ़ीं घोड़ी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया वलों मोड़ीं, मुहब्बत आपणे नाल रखवाईआ। जगत विकारे शौह दरयाए रोड़ीं, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जन भगत दोवे हत्थ खलोते जोड़ी, निव निव लागण पाईंआ। कलिजुग जीव करदे बौहड़ी बौहड़ी, नव सत्त रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ।

लोहड़ी कहे मेरे सतिगुर शब्द अहबाबी, मित्र प्यारे देणी वडयाईआ। शाहो भूप सच अदाबी, निव निव सीस झुकाईआ। वस्सणहारे अगम्म महराबी, महबूब तेरी वड वडयाईआ। मेरे दिवस जगत जहान भुंन खाए कबाबी, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। जगत विकार कीता शराबी, शरअ शरीअत ना कोई वडयाईआ। इशक रिहा ना हकीकी मजाजी, दोवें देण दुहाईआ। पुरख अकाल तूं बेनन्ती सुण साडी, सहज नाल सुणाईआ। तेरी खेल अगम्मड़ी डाहडी, डण्डावत विच्च सीस निवाईआ। तेरा लहणा देणा सच संगीत नाल ढाडी रबाबी, रबाब तन देणी वजाईआ। तेरी धर्म धार इमदादी, मेहरवान होणा आप सहाईआ। तेरा लेखा अगम्म खेल जगत पंज आबी, पंचम धार वड वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

लोहड़ी कहे प्रभू मैं इक्को वस्त मंगदी, दर ठांडे झोली डाहीआ। जन भगतां खेल मुका दे भुक्ख नंग दी, तृष्ना तृखा पूर कराईआ । किसे तोट रहे ना अन्न दी, अतुल भंडार वरताईआ। कल्पणा मेट दे मन दी, मनसा खोज खुजाईआ। आशा पूरी कर दे गोबिन्द

चन्न दी, चन्न चानणे तेरे हत्थ वडयाईआ। खेल समझा दे पंज तत्त तन दी, वजूदां महबूबा पर्दा लाहीआ। तेरी आवाज इक्को होवे धन्न धन्न दी, धन्न कहे लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सच तेरी सरनाईआ।

लोहड़ी कहे मेरे सतिगुर प्यारे सज्जणा, दीनां बंधप दीन दयाल। चरन धूड़ करा दे मज़ना, मेरे साहिब बेमिसाल। मेरे नेत्र पा दे अंञना, भूपत भूप हो किरपाल। धर्म दी धार चाढ़ दे रंगणा, रंगत दो जहान बेमिसाल। दर ठांडा इक्को मंगणा, वस्त अगम्मड़ी देणी डाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप संभाल।

लोहड़ी कहे प्रभू मेरी वेख लै रैण, लोकमात ध्यान लगाईआ। सच दा दिसे ना कोई साक सैण, साजण रंग ना कोई रंगाईआ। तेरी सृष्टी तेरे नालों होई र्तफैण, दुतीआ भाउ रखाईआ। मैं बेनन्ती आई कहण, कह कह रही जणाईआ। जो लेखा लिखया विच्च रमाइण, महांभारत नाल वडयाईआ। उहदा लहणा मुकाउणा सुखैण, दर ठांडे खुशी मनाईआ। जन भगतां दर्शन दे दे आपणे नैण, लोचनां कर रुशनाईआ। चरन प्रीती दे दे देण, जो चल आए सरनाईआ। चरन धूड़ बणा लै रैण, टिक्के ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दिसे ना कोई सैण, साक नज़र कोई ना आईआ। (२६ पोह शहनशाही सम्मत ६)

लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दा लउ रुपईआ, रूपा सोना चांदी जगत कम्म किछ ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बणाओ धुर दा सेईआ, मालक मित्र प्यारा एकँकारा संग निभाईआ। साजण मीत इक्क दूजे दे बणो सईआ, सगले संगी बहु रंगी आपणी खुशी बणाईआ। धुर दे राम दी चढ़ो अगम्मी नईआ, नौका सतिगुर शब्द आप वखाईआ। राए धर्म लेखा कढ़ु ना सके वहीआ, वाअदे सभ दे पूर कराईआ। जिस कारन बुल्ले गाया थईआ, थईआ थईआ कह कह खुशी बणाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला तुहाढ़ा इक्क रमईआ, राम रहीम नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ।

लोहड़ी कहे भगतो धर्म धार दे चब्बो दाणे मक्की, मुकम्मल दिआं दृढ़ाईआ। प्रभू दा प्यार वेखो हक़ी, हकीकत नाल सुणाईआ। जिस दी धार जीव जहान किसे ना तक्की, जगत नेत्र दर्शन कोई ना पाईआ। उस दे नाल प्रीती जोड़ो पक्की, पारब्रह्म प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। निगाह मार के वेखो अक्खी, बिन नैण नैण उठाईआ। जिस दा लेखा दीगरे बाद यक्की, यक्की इक्को नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दा लउ रस, मिट्ठा इक्को नाम दृढ़ाईआ। हिरदे हरिजू जाए वस, अनडिठड़ा खेल वखाईआ। पन्ध मारना पए ना नस्स नस्स, भज्जण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा लेखा बाहर रव सस, सूर्या चन्द ना कोई चतुराईआ। उह मेटणहार अन्धेरी मस, चन्द चांदना करे रुशनाईआ। सो पुरख अकाला तुहाढ़ा गावे जस, सिफ्तां

नाल सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी करनी कार कमाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दी पीवो मदि, मधुर धुन नाम शनवाईआ। सतिगुरू दवार सुहंझणी हद्द, हदूदां डेरा ढाहीआ। तुसीं उस प्रभ दी यद, जो यदी आपणा खेल वरताईआ। सच प्रीत विच्च जाओ लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। तुहाढ़े अंदरों बुझावे अग्ग, अमृत मेघ बरसाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे जग्ग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा भेव आप खुल्ह़ाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो आपणी आशा लैणी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। परम पुरख चाढ़ दे रंग, दो जहाना उतर ना जाईआ । निरगुण धार होणा संग, सगले संगी बहु रंगी भेव देणा चुकाईआ । परम पुरख परमात्म तेरा सच दवारा जाईए लंघ, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, देणी सच सच सरनाईआ। आत्म सेज सुहाउणी पलंघ, दर ठांढे सेव कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो अज खुशीआं दिवस धरनी वेखो दस्सदी, दह दिशा रही जणाईआ। मसती दे विच्च हस्सदी, खुशीआं ढोले गाईआ । प्यासी प्रेम रस दी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। आपणी बिरहु कहाणी दस्सदी, कूक कूक जणाईआ। मेरे उत्ते धार रही नहीं सच दी, कलिजुग कूड़ कुटंब वधाईआ। मेरी छाती वेखो मच्चदी, अगनी तत्त ना बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप समझाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो सतिगुर शब्द दा लउ प्यार, जोती जाता सिर हत्थ टिकाईआ। मेरा खुशीआं दा विवहार, दिवस रैण ढोले गाईआ। धन्न भाग जे तुहानूं होया दीदार, निरगुण नूर जोत अलाहीआ। तुहाढ़ी पैज जाए सवार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतो प्रभ दीआं लोड़ां, लुड़ींदा साजण दए वडयाईआ। आदि जुगादि भगत भगवान दा जोड़ा, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। जन भगतां प्रभ सदा होवे बौहड़ा, बांहो फड़ फड़ बाहर कढ़ाईआ। तुहाढ़ा अन्तर रहे ना कौड़ा, सतिगुर मिठ्ठा रस दए प्याईआ। जिस दा शब्द अगम्मी घोड़ा, जगत नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। उस दी सदा सदा सद लोड़ा, लुड़ींदा सज्जण धुरदरगाहीआ। जिस सस्से उप्पर ला के होड़ा, हँ ब्रह्म दिती वडयाईआ। जिस दा वक्त अग्गे थोड़ा, बहुती वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रेम दा बखशणहारा घोड़ा, बिन रासां चार कुण्ट दुड़ाईआ। (३० पोह शहनशाही सम्मत १०)

जन भगतां सदा लोहड़ी, लुड़ींदा साजण दए वडयाईआ। चरन प्रीती बख्शे गुड़ दी रोड़ी, बिन रसना रस चखाईआ। शब्दी धार चढ़ा के घोड़ी, वागाँ आपणे हत्थ रखाईआ। भगत भगवान बणा के जोड़ी, सोहणा धुर दा रंग रंगाईआ। जगत विकारा अंदरों होड़ी, होड़ा

सस्से वाला दए वखाईआ। मन मनसा आपणे वल मोड़ी, मेल मिलाए सहज सुभाईआ। जन भगतां जुग जुग वस्त एह दिती थोड़ी, थोड़ा थोड़ा रस झोली पाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त आप गिआ बौहड़ी, आप आपणी दया कमाईआ। विकार मध अन्तर रहण ना देवे कौड़ी, रस अमृत नाम भराईआ। पार करा दे भीड़ी गली सौड़ी, मार्ग इक्को इक्क वखाईआ। रागाँ विच्चों राग उपजया गौड़ी, लोहड़ी दे दिन दी एहो वड्डी वडयाईआ। नानक धार जो शब्द जणाया पौड़ी, एसे दिवस कीती सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

लोहड़ी कहे मैं जुग जुग लोड़दी, आशा आपणे अंदर रखाईआ। भगत भगवान नाल जोड़दी, जुग जुग दी रीती चली आईआ। मेरा दिवस उह जिस विच्च सभ तों पैहलां पूजा होई बोहड़ दी, पिपलां सीस निवाईआ। यगै पुरुष दी धार हावगरीव दे मोड़दी, पर्दा परदिआं विच्चों खुल्ह़ाईआ। बावन दी धार जिस दी खेल ब्रह्मण गौड़ दी, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। मेरी आदि जुगादी धार सदा दौड़दी, भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा दिवस दिहाढ़ा उह जिस विच्च पूजा चल्ली पहली वार तलाब जौहड़ दी, जल धारा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। लोहड़ी कहे मैं जुग जुग लोड़दी साजण, सजणूआं धुरदरगाहीआ। जो दो जहानां राजन, शाहो भूप नूर अलाहीआ। मेरा दिवस उह जिस विच्च जगत दा लहणा देणा देणा लहणा बणया नाल महाजन, जगत हट्टां खेल खिलाईआ। मेरे दिवस पहली वार कपल मुन मारी अवाजन, खुशीआं नाल सुणाईआ। सांख योग दस्सया आपणी मातन, रीती दीन दुनी बदलाईआ। मेरे दिवस जगत दन्दासा शुरु होया सी दातन, कुदरत दे रंग नूं जगत रंग विच्च बदलाईआ। मेरे दिवस विच्च मतसय जल धार कीता उदघाटन, मछ कछ संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह़ाईआ। लोहड़ी कहे मेरे दिवस भगतां भगवान नाल मिल्या मेल, मेला हरि जगदीश कराईआ। दीन दुनी नूं कल्पणा दा चढ़या तेल, हउमे हंगता संग रखाईआ। प्यार तुटया सज्जण सुहेल, साचा संग ना कोई बणाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतां दी प्रभ दे प्यार विच्च वधी वेल, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

लोहड़ी कहे मेरे दिवस रिड़किआ गिआ सागर, सगली सृष्ट जणाईआ। अमृत भरया गिआ अगम्मी गागर, जिस नूं वेखण कोई ना पाईआ। वणजारे बणाए धर्म सौदागर, सोहणी वस्त वखाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, देवे माण माण वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

लोहड़ी कहे समुंद सागर लेखा मुकाया अद्ध, हिसा वंड आपणे हत्थ रखाईआ। इक्क पासे अमृत ते इक्क पासे मदि, वेखणहारा बेपरवाहीआ। राकक्ष देवत दोवें लए सद्द, प्रेम नाल बुलाईआ। दोवें इक्क दूजे नालों अग्गे बहण वध, आपणी खुशी वखाईआ। लोहड़ी कहे मेरा दिवस सुहावणा जिस विच्च कलस जग राकक्ष मद विच्च लपटाईआ। दोहां दी धार दिती वंड, प्रभ आपणी खेल वखाईआ। जिस दे हुक्म विच्च जुग चौकड़ी

रहे हंढ, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ।

लोहड़ी कहे जन भगतां मिले दीन दयाला, अमृत रस चखाईआ । राकशां मिले मद प्याला, मिटी खाक सिर विच्च छाहीआ। सरगुण दी धार निरगुण दा खेल खेल निराला, दोवें रंग मेरे दिवस विच्च रखाईआ। मैं ग़मी खुशी दोहां विच्च होई बेहाला, आप आपणा गई भुलाईआ। परम पुरख परमात्म आपणा खेल कीता भगतां मार्ग दे सुखाला, सच रंग रंगाईआ। मूर्ख मुगध कर बेहाला, जगत वासना विच्च हलकाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो तुहाढ़े धन्नभाग जिनां अन्तर प्रभू प्रेम दी माला, जगत मणके फेरन दी लोड़ रही ना राईआ। तुहाढ़ा घर गृह मन्दर सरीर प्रभू दी धर्मसाला, दवारा साचा सोभा पाईआ। लोहड़ी कहे लुड़ींदा साजण मिल्या घर गोपाला, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। मेरा निक्का जिहा अहिवाला, अहिल नाल दित्ता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो वेखणहारा शाह कंगाला, पातशाह आपणा रंग रंगाईआ। (२६ पोह शहनशाही सम्मत ११)

**लुच्चा :** पुरख अकाल बड़ा लुच्चा, दो जहान खेल कराइंदा। सारयां कोलों उहले लुका, दिस किसे ना आइंदा। किसे हत्थ फड़ाया हुँका, किसे चोटी सीस मुंडाइंदा। किसे फड़ टंगाया पुठ्ठा, किसे खलड़ी तन लुहाइंदा। किसे नीहां हेठ दबाए पुत्ता, किसे तत्ती तवी उत्ते बहाइंदा। किसे धार तलवार नाल टुक्का, किसे अंग अंग कटाइंदा । जे कोई पुछे की खेल करे अबिनाशी अचुता, आपणा भेव ना किसे समझाइंदा। जुग चौकड़ी बैठा रहे रुस्सा, अग्गे हो ना कोई बचाइंदा । प्रभ साचे अग्गे कोई ना गुसा, भाणा मन्न मन्न सभ शुकर मनाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना दस्स सक्कया प्रभ दा जुस्सा, वजूद नज़र किसे ना आइंदा । कवण सेजे सच सिँघासण सुत्ता, कँवल नैण डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा।

वेखो हरि जू लुच्चा ठग्ग, ठग्गी सभ दे नाल कराईआ। पंज तत्त ला ला अग्ग, अगनी तत्त जलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात भेज वग, वागी बण बण सच्चे माहीआ। इक्को दस्सया अचार चज, अचरज आपणा वेस ना किसे वडयाईआ। किसे मक्के काअबे करौंदा रिहा हज्ज, कलमा नबी अमाम पढ़ाईआ। किसे नाम सति दित्ता दस्स, किसे वाहिगुरू सिफ्त सालाहीआ। किसे राम राम दित्ता जस, किसे कृष्न कृष्न समझाईआ। आप दूर दुराडा बह के रिहा वस, आपणी लुकवीं खेल रचाईआ। जुग जुग चौकड़ी गा गा गए थक्क, अन्तम आप वेखण आईआ। चारों कुण्ट लौंदे भख, अगनी तत्त रही तपाईआ। ख़ाली दिसे चौदां हट्ट, किशन वंड वंड वंडाईआ। चौदां तबक बणे हट्ट, बण सवांगी सवांग वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ सरनाई गए ढठ्ठ, आपणा आप गवाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रक्ख, तेरे हत्थ तेरी वडयाईआ । वेख साडे ख़ाली हत्थ, दर तेरे देण दुहाईआ। जिनां लक्कड़ां उत्ते दित्ते रक्ख, काया माटी रूप ना कोई वखाईआ। धूआंधार तेरा नूर वेख समरथ, तेरे घर वज्जे वधाईआ। बिन तुध कोई ना रक्खे पत, पतवन्त मेरे माहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव ना किसे जणाईआ।

हरि जू लुच्चा ठग्ग चोर, चोरी सभ दे नाल कराइंदा। वसणहार अन्धेरी घोर, डूंघी खड्ड कुंदर वेख वखाइंदा। अग्गे लए सारे तोर, तुरत आपणा हुक्म सुणाइंदा। कोई ना सके अग्गों मोड़, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। निरगुण सरगुण दोवें जोड़, दोए दोए आपणी कल वरताइंदा। अंदरों बाहरों दिसे होर, भेद अभेद आप छुपाइंदा। तिस अग्गे चले ना कोई ज़ोर, ज़ोर ज़ाबर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच ज्ञान धुर दी बाणी आपणी करनी आप जणाइंदा। (१६ मध्घर २०१६ बि)

चार वरन होए लुच्चे, सच सुच्च ना कोई समझाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली बुत्ते, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। आपणीआं जड़ां रहे पुट्टे, लोकमात ना कोई लगाईआ। (१७ हाढ़ २०२० बि)

**लंगर :** लंगर वरते जिथ्थे मेरा। उथे नहीं है कोई तोड़ा। लंगर गुरू का गुर भंडारा। आपे बूझे आप बुझणहारा। (१७ भादरों २००६ बि)

उह लंगर साध सन्त दा, एह खेल श्री भगवन्त दा। ओथे मेला जीव जंत दा, इथे रंग आत्म परमात्म नार कन्त दा। ओथे गढ़ हउमें हंगत दा, इथे घर चार वरन पंगत दा। ओथे दर कूड़ ज्ञानी पंडत दा, इथे वर ब्रह्म ज्ञानी अखण्डत दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सभ दे अन्त दा।(२ हाढ़ २०२० बिक्रमी)

सवा सेर सच भंडार, हरि संगत दए लगाईआ। सतिगुर पूरा बणे आप वरतार, नंगी पैरीं सेव कमाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग रखाईआ। सत्थर सेज ना भल्लया विच्च संसार, जो सूलां आप हंढाईआ। निहकलंक मिल्या मीत मुरार, जोड़ा जुड़या सहज सुखदाईआ। घोड़े चढ़या शाह असवार, आपणा असव रिहा दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोआबा मालवा दए तराईआ। (पहली कत्तक २०१६ बिक्रमी)

हरि भगत भंडारा दाल रोटी, हरि जू आपणी वंड वंडाइंदा। वेखणहारा चढ़ के उप्पर चोटी, कोट कोटी नाल रलाइंदा। सभ दे विच्चों कढ्ढे वासना खोटी, जो जन रसना नाल रलाइंदा। अन्तम मिलाए निर्मल जोती, लक्ख चुरासी गेड़ कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भंडारा आप सुहाइंदा। (१८ हाढ़ २०१६ बि)

लंगर विच्च लागरी हो के रहे, लंगर मन्दरां नालों चंगा नज़री आईआ। रविदास सुक्का टुकड़ा दे के गिआ कह, सभ नूं सच सुणाईआ। जिस पकवान नूं भगवान बेहा कदे ना कहे, सद अमृत रूप वखाईआ। एथे ओथे इक्को जेहा रहे, हरि संगत लंगर कूकरां शूकरां

अग्गे ना कोई सुटाईआ। ओस लंगर विच्च परमात्मा बहे, अग्ग उत्ते सड़ के तवे उत्ते आपणा आप तल के, प्रेम प्रीती विच्च रल के, आपणा रंग वखाईआ। गुरमुख जेहड़े आवण चल के, उहना दा अंदर बहे मल के, सोहणा आसण लाईआ। हरि संगत खाए रल मिल के, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। एह खेल दिलदार दिल दे, दिल विच्चों दलील दलील नाल मिलाईआ। गुरमुख गुर दी रहणीउँ कदे ना हिलदे, डुले सर्ब लोकाईआ। गुरमुख प्रभ दे मेले सदा नहीं मिलदे, जिस मिलिआं विछोड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा भात रिहा खाईआ। (२५ माघ २०२०)

जन भगत कदे ना होवे भुक्खा, जगत तृष्ना ना कोई वधाईआ । जिनाँ दा अन्तर आत्म हो गिआ सुचा, कूड़ मैल रहे ना राईआ। उनाँ दा भंडारा कदे ना मुका, देवणहार दया कमाईआ । भगत भगवान दा सदा टुक्कर सुका, शाह पातशाह घर फेरा कदे ना पाईआ। जिनाँ दा जीवण प्रभू दी प्रीती अंदर उच्चा, उह नीचों ऊँच कर कर देवे वडयाईआ। श्री भगवान उत्ते चले किसे दा ना कोई गुस्सा, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला लोकमात आप उठाए सुत्ता, सोई सुरती आप जगाईआ। (१५ फग्गण श सम्मत १ )

गोबिन्द कहे वाह मेरे यार, तेरी बेपरवाहीआ। सच दा दस्स प्यार, रीती लई बणाईआ। सतारां दिन दा विहार, खुशीआं नाल लंघाईआ। हरि संगत दा सांझा होवे घर बार, कल्ला सेव ना कोई कमाईआ। सिरफ़ रोटी होवे ते दाल, दूजी वस्त ना कोई बणाईआ। खाए कोई ना विच्च थाल, हत्थां उत्ते टिकाईआ । परशादा ढके ना कोई नाल रुमाल, पड़दा उत्ते ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ। (२ फग्गण श सं ३)

आटा गुंनणा नहीं खुल्हे झाटे, शिव पारबती समझाईआ। एह वस्त लभ्भणी नहीं किसे हाटे, वणजारा वणज ना कोई कराईआ। चार जुग प्रभ ने वेखणे खेल तमाशे, गुर अवतार पैगम्बरां कार भुगताईआ। अन्तम लेखा जाणे पृथ्मी अकाशे, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। दीन दुनी जिस वेले होवे विच्च घाटे, साचा वणज ना कोई कराईआ। गोबिन्द दा भुल्ल जाण अमृत पीता विच्च बाटे, मन विकार हँकार कुरलाईआ। ओस वेले करे खेल पुरख समराथे, हरि करता धुरदरगाही। मार्ग लावे साचे, सति सच इक्क समझाईआ। सतिजुग साचे आखे, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाईआ । जो उत्तम पकवान प्रभ रस चाखे, तिस दा द्वैत दलिद्र रहे ना राईआ। ओस अन्न नूं बणाए ना कोई खुल्हे झाटे, वेसवा रूप ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फरमाणा इक्क सुणाईआ । (५ चेत श सं ४)

गुरसंगत तेरी धन्न कमाई। गुर लंगर विच्च जिस ने पाई। प्रभ अबिनाशी लेखे लाई। सृष्ट सबाई नेत्र पेखे, वेला गिआ हत्थ ना आई। साची लिखत लिखाए गुरसिखां जुगत

बणाए, जो आए हरि सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा अतुट निखुट ना भंडार कदे मुक्क जाई। (२-३ माघ २०१० बिक्रमी)

गुरमुख साचे साचा रंग, हरि चरन कँवल भरवासा। लंगर सेवा सवा पंज, ढाई होए अरदासा। खाली होवण कारू गंज, मायाधारी जगत तमाशा। आपे जाणे सवेर संञ, कलिजुग काया पाए रासा। लक्ख चुरासी नार बंझ, ना कोई देवे मात धरवासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए पृथ्मी आकासा। (१ फग्गण २०१३ बिक्रमी)

विष्नूं कहे तेरा आदि जुगादि भंडारा, वरभंड तेरी चतुराईआ। मैं सेवक सेवादारा, सेव स्वामी सच कमाईआ। जुग चौकड़ी खेल वेख्या सारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पन्ध मुकाईआ। मैं भरपूर कर ना सक्कया संसारा, संसारी मेरी दए गवाहीआ। शंकर उंगलां नाल बण लिखारा, लेखा मैनूं रिहा समझाईआ। जिस वेले निरगुण धार पुरख अकाल आया दुबारा, दुहरी आपणी कार कमाईआ। सच दा मार्ग दस्से अपारा, अपार अगम्म अथाहीआ। सतिजुग सच सच करे पसारा, पसर पसारी वेख वखाईआ। सभ नूं इक्को जिहा दए अधारा, आदम इक्को रंग रंगाईआ। चाकर सेवक बण पनिहारा, पारब्रह्म आपणी सेव कमाईआ। दीन दुनी विच्च वेखे विगसे वेखणहारा, पर्दा परदिआं विच्चों चुकाईआ। सभ दा सांझा कर प्यारा, प्रेम प्रीती नाल जुड़ाईआ। ग़रीब निमाणयां लेखे ला अहारा, भख भोज लहज फहज इक्को रंग रंगाईआ। सतिजुग सति चलदी रहे धारा, धर्म दी धार इक्क वखाईआ। जिस वेले छब्बी पोह सतारां हाढ़ दा आए तिउहारा, साल बसाला इक्को हुक्म वरताईआ। पंज गुरमुख सदा त्यार करन भंडारा, सेवा सति सच कमाईआ। अंदर करे ना कोई हँकारा, हउमे विच्च ना कोई रखाईआ। लंगर पकौण तों पैहलां पंज वेर जरूर लौणा जैकारा, बिन जैकारिउँ चपाती हत्थ ना कोई सुहाईआ। खतम होण तों बाद फेर एहो हुक्म दुबारा, जै जैकार देणा सुणाईआ। अज्ज तों एह भुल्लणा नहीं विवहारा, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। उस वेले जरूर हाजर होवे निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढा निखुट ना जाए भंडारा, भरपूर घर घर दए वखाईआ। हरि भगतां वेखे सच्चा दवारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जिथ्थे निरगुण धार बैठा उह चौवीवां अवतारा, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। उस दा शब्द शब्दी शब्द इशारा, बिना शब्द तों दूजा राग ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

विष्नूं कहे साहिब सतिगुर दा जिथ्थे चलदा होवे लंगर, लांगरी सेवा प्रेम कमाईआ। हिरदे अंदरों गावण चार मंगल, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। कोई गंदी रक्खे ना उंगल, साफ सुथरे सोभा पाईआ। सतिगुर दे लंगर दा कोई मारे कदे ना चुगली चुगल, माड़ा कह ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।
जो लंगर विच्च होवण सेवादार, सेवा प्रेम नाल कमाईआ। मुखों कुबचन सके ना कोई

उच्चार, रसना फिक ना कोई रखवाईआ। एह सभ तों वड्डा विवहार, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर थोड़ा थोड़ा थोड़ा करके गए चलाईआ। विष्नूं जोड़ के हत्थ कर निमस्कार, सीस बन्दना विच्च निवाईआ। एह खेल सची सरकार, हरि निरँकार आप वखाईआ। सतिजुग विच्च सति धर्म दा सति होणा विहार, विहारी आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

विष्नूं कहे वेखो मेरे साहिब दा लगदा भोग , भोजन बिना भजन बन्दगी तों पार कराईआ। सभ तों वड्डा एह जोग, जिस दी जुगीशर बैठे ओट रखवाईआ। एस दी सभ तों वक्खरी मौज, जो मौजूद हो के दए प्रगटाईआ। जिस नूं लभ्भण चौदां लोक, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। जन भगतो सभ नूं मिले उह मोख, जिहनूं अट्टल पदवी कह के सारे गाईआ। जिस गृह विच्चों इक्क वार छकिआ उन्नां दे देवे सन्तोख, सति धीर नाल मिलाईआ। भावें भगती करो जन्म कोटी कोट, बिना प्रभ किरपा मंज़ल चढ़न कोई ना पाईआ। तुहाढ्ढा प्रेम सतिगुर दा प्यार अतोट, शब्द दी धार खेल खिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी धार प्रगटाईआ।

विष्नूं कहे वेखो साहिब दा सच पकवान, पक्की सभ नूं दिआं कराईआ। जिस गृह विच्चों छक लिआ इक्क वार विच्च जहान, शक़ सहिँसा अग्गे रहे ना राईआ। जन भगतो मथ्थे टेकण नालों लंगर दी सेवा महान, महिंमा अकथ्थ अकथ्थ अकथ्थ ना कोई दृढ़ाईआ । एह रीती सभ तों वक्खरी दस्सी श्री भगवान, भाग हिस्सा आपणा तुहाढ्ढे विच्च पाईआ। थोड़ा जिहा इशारा दित्ता कृष्न काहन, सुदामे कन्न विच्च सुणाईआ। दलिद्दरीआ जिस वेले आया मेरा मेहरवान, मेहरवान मेहरवान फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले पार लंघाए विच्च जहान, जहालत विच्च अदालत आपणी इक्क लगाईआ । उस ने सुदामिआं नाम दस्सणा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस नूं सुण के गुरू अवतार पैगम्बर सारे सीस निवाण, बहुते त्रैलोकी नाथां नूं इक्क मिल्या नहीं दान, राम दी राम ने झोली ना कदे भराईआ। पैगम्बरां नूं दस्स के शरअ वाला ईमान, अमल विच्च दित्ता फसाईआ। गुरूआं नूं दे के गद्दी दा दान, शब्दां दी सिफ्त विच्च लगाईआ। फेर संदेशा दे के इक्क जवान, गोबिन्द गोबिन्द आप प्रगटाईआ। जिस वेले आवां आप हो के सवाधान, सो स्वामी आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग दा मार्ग फेर दस्सां महान, महिंमां अकथ्थ अकथ्थ दृढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश दीन मज़हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक शाह हकीर सतिगुर फ़कीर सभ दा इक्को कर पकवान, पक्का नाता सभ दे नाल जुड़ाईआ। जन भगतो गुरमुखो गुरसिखो वेखो किस बिध दे नाल तुहाढ्ढा बणाया विधान, विद्या समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। (६ अस्सू श सं ५ सवेरे साढ्ढे अठ्ठ वजे)

नारद कहे फेर चिठ्ठी खोल्ही मैं, उसे नूं लिआ उलटाईआ। मैं लेखा पढ़या मेरे अंदरों निकली हैं, हैरान हो के वेख वखाईआ। जां तक्कया पढ़या समझ आई एथे हो के पैगम्बर गुरू अवतार गए कै, काइम मुकाम नज़र कोई ना आईआ। सदा जुग चौकड़ी बिना प्रभू तों भंडारा कोई ना दए, राजे बल नूं बावन एहो आया समझाईआ। प्रभू दी किरपा बिना

कदे उपजे कोई ना शै, शहनशाह आपणी दया कमाईआ। नारद कहे एसे कर के उस चिठीआं दे अधार उत्ते हरि संगत नूं हुक्म दित्ता लंगर वरताउण तों पैहलां ते लंगर वरताउण तों बाद सदा बोलणी सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, जै जै जैकार सुणाईआ। एह लेखा हरि भगत दवार ते भगतां दे गृह गृह, बचया रहण कोई ना पाईआ। नारद कहे मेरा साहिब स्वामी जिस असथान बहे, सो थान थनंतर वज्जे वधाईआ। जो सदा सदा सृष्टी नूं करदा लैअ, उतपत आपणे हुक्म विच्च कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। (३ सावण श सं ८)

नारद कहे जन भगतो सभ तों पैहलां मंगीए दाल रोटी, दर ठांढे मंग मंगाईआ। जिस खाधिआं अंदरों नीत रहे ना खोटी, दुरमत मैल धवाईआ। झट्ट आपणी मंज़ल चढ़ा लै चोटी, चोटे मन दा डेरा ढाहीआ। फेर दर्शन करा दे आपणी जोती, जोती दा जाता नज़री आईआ। भगत कहण प्रभ असीं तेरे गोती, गौतम दा लिखया देण वखाईआ। जिस ने किहा सी नर निरँकारा जदों चाहवे मिटी खाक तों बणा देवे माणक मोती, अनमुलड़े हीरे आपणे विच्चों प्रगटाईआ। बेशक उस नूं याद करदे कोटन कोटी, अणगिणत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप खिलाईआ। (२७ पोह श सं १०)

लंगर कहे मैं सभ नूं करना ख़बरदार, बेख़बरां देणा जणाईआ। छब्बी पोह नूं कहणा पुकार, उच्ची कूक कूक जणाईआ। जिस मेरे विच्च बह के लंगर छक के परम पुरख जाणा विसार, उह इक्को वार हुणे पल्लू जाओ छुडाईआ। जिनां रसना लाउणा मदिरा मास फेर करना अहार, उह पल्लू जाउ छुडाईआ। जिनां चाह नाल करना प्यार, उह चारे कूट भज्जो वाहो दाहीआ। मैं भगत सुहेले करने होर त्यार, जो धर्म दी धार विच्च समाईआ। सच दा हुक्म ते सच होवे सिकदार, सच दी सच सेव कमाईआ। (२३-२७५)

**लंगर (सतिगुर धार : सतिजुग धार : धर्म धार) :**

नारद कहे जन भगतो की तुहाड्ढा इक्को पिओ दादा, यद इक्को इक्क सुहाईआ। की तुहाड्ढा मेल सीता राम किशन राधा, निव निव लागे पाईंआ। किस डोर नाल चोर हो के तुहानूं बांधा, बंधन आपणा रिहा पाईआ। तुहानूं माण दित्ता वध सन्तन साधा, सति आपणा रंग रंगाईआ। पर याद कर लउ आपणे अंदरों कढ्ढु दिउ हउमे वाली आगा, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। वेखो खेल कन्त सुहागा, की करनी कार कमाईआ। याद रक्खणा हाढ़ सतारां सभ ने इक्को पंगत विच्च बह के खाणा प्रशादा, वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ। हत्थां उत्ते उस दा लैणा सवादा, बरतन जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। अंदर प्रेम दा होवे लाडा, मुहब्बत विच्च तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। तुहाड्ढे अन्तश्करन विच्च होवे वाधा, मनसा मन दी मन विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

नारद कहे सभ ने प्यार विच्च जाणा टिक, आपणा आसण लाईआ । पंगत बहेगी गुरसिख इक्क सौ इक्क, जीरो इक्क नाल वडयाईआ। सभ दे हत्थां उत्ते पूरन नाम दी पैहलों रक्खी जाएगी चिट, ख़ाली नज़र कोई ना आईआ। फेर हत्थ लाएगा उत्ते तुहाढ्ढी पिट्ठ, पुशत पुनांह आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

नारद कहे **सतिगुर धार** दा लंगर वरते, ख़ुशीआं नाल वरताईआ । निमस्कार करे धरती धरते, धवल सीस झुकाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू करन चरचे, चारों कुण्ट मता पकाईआ। सानूं लालच दित्ता दीनां मज़हबां विच्च रहे परचे, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। छोटे छोटे नाम दे दे के खरचे, जगत रहबर दित्ता दृढ़ाईआ। साथों लथ्थे मूल ना कज़े, मकरूज़ हो के वेखीए थाउँ थाईंआ। अन्त इक्क अरदास बेनन्ती अर्ज़े, आरज़ू इक्क सुणाईआ। प्रभू जे तेरा भगत थोड़ा जिहा समां होर ज़र जाए, फेर जग्ग जग्ग तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। तेरा दरस कीत्यां दीन दुनी सभ तर जाए, माला मणके दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दी याद विच्च कोटन कोट याद करदे मर गए, मृगशाला देण दुहाईआ। कई धूणीआं उत्ते सड़ गए, खल्लां खल्ल लुहाईआ। कई सिर कदमां उत्ते धर गए, निउँ निउँ लागण पाईंआ। पर मैं हैरान हो गिआ कई तेरे भगत तेरे हुक्म अग्गे अड़ गए, अड़िका तेरे प्रेम वाला जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ।

नारद कहे जन भगतो तुहाढ्ढा की इरादा, मन मनसा दिउ जणाईआ । सच दस्सओ तत्त गुरू मन्नणा कि शब्द गुरू वाला बाजा, जो बाजी दो जहान आपणे हत्थ रखवाईआ। जिस ने लहणा देणा पूरा करना तख़त ताजा, तख़त निवासी जग फ़ासी दए कटाईआ। ग़रीब निमाणयां रक्खे लाजा, कोझयां कमलयां सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। हँस बणाए कागा, सोहँ धुर दी चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

हाढ़ कहे जन भगतो मेरा प्रविश्टा पैहला, पहली वालयो तुहानूं अख़ीर दी लोड़ रहे ना राईआ। तुसां जाणा उस प्रभू दिआं विच्च महलां, जिस महल नूं सचखण्ड कह के सारे गाईआ। मैं वी उस दे दवारे उत्ते टहला, बिनां कदमां चलां चाईं चाईंआ। पर याद कर लओ, तुहानूं मार्ग मिल गिआ सहला, कोटन कोट मर मर के आपणा आप गए गवाईआ। उह वेखो राए धर्म सभ दे लेखे दा चुक्की फिरदा थैला, गुरमुखां नूं निउँ निउँ सीस निवाईआ। राए धर्म कहे मेरी रही कोई ना जेहला, चुरासी बंधन ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ। (१ हाढ़ शहनशाही सम्मत ८)

हाढ़ कहे मेरा लेखा इक्क हकीकी, हुक्मां तों बाहर जणाईआ। मेरा मालक लाशरीकी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दे विच्च हक़ तौफीकी, ताकतवर बेपरवाहीआ। उस ने बदल दिती नीती, नीतीवान वेख वखाईआ। वेखो कलिजुग धार रही चीकी, चीक चिहाढ़ा रही

पाईआ। मेरी प्रेम धार होणी फीकी, रस अगम्म ना कोई चवाईआ। सृष्टी जाए मूल ना जीती, मैं रो रो के दिआं दुहाईआ । इक्को प्रभू दी सच प्रीती, जो प्रीतम हो के वेख विखाईआ । जन भगतो पिछली याद ना करयो बीती, अग्गे अगला कदम उठाईआ। सभ ने बदल लैणी नीती, नीतीवान वेख वखाईआ। तुहाढ्ढी प्रफूलत होवे निक्की, जेही बग़ीची, बाग़ धुर दा दए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

सतारां हाढ़ कहे जन भगतो मैं सभ नूं देवां वधाई, वाधा प्रभ दे नाल वधाईआ। जिस ने दित्ती जगत वड्डिआई, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। काया रंग रिहा चढ़ाई, दूसर संग ना कोई बणाईआ। अन्तर पर्दा रिहा उठाई, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म ने बदल देणी शाही, शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। चारों कुण्ट तक्कणी दुहाई, दोहरी धर्म दी धार प्रगटाईआ। जिस तुहाढ्ढी कूड़ दी मेटणी शाही, शहनशाह आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

हाढ़ कहे मैं तुहानूं दस्सां तुहाढ्ढी बीती, बिन पर्दा पर्दा चुकाईआ । तुहाढ्ढे अंदर आवे सति दी रीती, रीतीवान वेख वखाईआ। तुहाढ्ढी आत्मा रहे अतीती, त्रैगुण विच्च ना कोई बंधाईआ। पुरख अकाल करे बख्शीशी, रहमत नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

हाढ़ सतारां कहे तुसां **धर्म दी धार** खाधा प्रशादा, खाणा जगत वाला समझाईआ। एह वर दित्ता सी कृष्न नूं राधा, कृष्न हस्स के फिर राधा दी झोली पाईआ। कलिजुग माण रहणा नहीं सन्तन साधा, सच साधना विच्च नज़र कोई ना आईआ। उस वेले पूरा कौल करावांगा वाअदा, अभुल्ल भुल्ल विच्च कदे ना आईआ। तेरा लेखा मुकावांगा बकाइदा, काइदगी धुर दी नाल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मन्दर इक्क सुहाईआ।

हाढ़ कहे जन भगतो मेरा तुहानूं सजदा, निउँ निउँ लागाँ पाईंआ । कलिजुग खेल वेखो कूड़ कुड़िआरी अग्ग दा, तत्तव तत्त रही जलाईआ । कपट विकार वेखो जग दा, दीन दुनी रोवे मारे धाहींआ। तुहानूं परम पुरख परमात्म आप सद्द दा, सद्दा नाम वाला जणाईआ। तुहाढ्ढा बंस हुण अग्गे जाणा वधदा, जगत जहान ना कोई अटकाईआ । तुहाढ्ढा प्यार तुहाढ्ढे विच्च सजदा, जो सज्जण नूर अलाहीआ। तुहाढ्ढा पन्ध मुकाया शाह रग दा, नौं दवारे डेरा ढाहीआ । तुसां शब्द राग सुनणा अनहद दा, अनरागी आप सुणाईआ। तुहानूं घर घर फिरे लभ्भदा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

हाढ़ सतारां कहे जन भगतो तुसां **सतिजुग दी धार** खाधा लंगर, कलिजुग रोवे मारे धाहीआ। जिस लेखा मुकाउणा ढोरां डंगर, पशूआं होए सहाईआ। उह मालक तुहाढ्ढे वड़ना अंदर, आपणा रंग रंगाईआ। बज़र कपाटी तोड़े जंदर, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। मनुआ मन ना दौड़े बन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। तुहानूं प्रकाश देवे बिनां सूर्या चन्दर, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। तुसां किसे दवारे नहीं जाणा मंगण, मांगत हो ना झोली डाहीआ। किरपा करे सूरा सर्बगण, सिर सिर आपणा हत्थ रखाईआ। सभ दी परवान करे बन्दन, हरिजन

आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जन्म दे विछड़यां टुट्टी आया गंढण, गंढ आपणा नाम पवाईआ। (१७ हाढ़ शहनशाही सम्मत ८)

**लांगरी सत्त :** अस्सू कहे प्रभू लांगरी सत्त कर त्यार, मैं आपणी मंग मंगाईआ। गिरधारा सिँघ होवे सरदार, बख्शीश सिँघ नाल मिलाईआ। पाल सिँघ लैणा वंगार, मस्सा सिँघ जोड़ जुड़ाईआ। काशी राम देणा प्यार, प्रीती प्रीतम नाल बंधाईआ। चरनी सुरत लैणी संभाल, सम्बल मेलणा सहज सुभाईआ। वरयाम कौर रहे नाल, जोड़ जोड़ना सहज सुभाईआ। सत्तां दा इक्को मालक इक्को करे प्रितपाल, प्रितपालक इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवार इक्क रखवाईआ। कलिजुग कहे इन्नां दा हकीकी होवे लबास, तेरे शब्द नाल जणाईआ। गुरमुखां दे सिर ते पगढ़ी काली होया करे खास, बीबीआं काले लीड़े रंग रंगाईआ। जिस वेले तेरा हुक्म होवे खास, उस वेले लैण बदलाईआ । एह मेरी आसा मेरे निकले विच्चों स्वास, साह साह सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। (१ अस्सू शहनशाही सम्मत ६)

**वड्डा दुःख :** संगत वछोड़ा वड्डा दुःख, दुःख सके ना कोई मिटाईआ । उह जाणे जेहड़ा वेखे लुक लुक, घट घट डेरा लाईआ । प्रेम प्यार दा पैंडा कदे ना जाए मुक्क, जुग चौकड़ी चल चल थक्के पान्धी राहीआ। गुरमुखां गुर उजल करे मुख, मुख आपणे ना कोई वडयाईआ । सुफल कराए जन जननी कुख, धन्न धन्न कहे जणेंदी माईआ। आदि जुगादि जुगो जुग सतिगुर पूरे नूं इक्को दुःख, बिन गुरमुखां दुःख ना कोई मिटाईआ । सच्चा दुःख गुरसिख विछोड़ा, विछड़यां सुख कोई ना आईआ। सतिगुरू गुरसिख जुगा जुगन्तर जोड़ा, जोड़ी इक्को घर सुहाईआ। इक्क दूजे दी सदा लोड़ा, बिन गुरसिखां सतिगुरू कम्म किसे ना आईआ। प्रेम प्यार अंदर बझीआं डोरां, ना कोई तोड़े ना तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुःख रिहा समझाईआ।

गुरसिख दर्द तिखी कानी, अणयाला तीर जणाइंदा। सृष्ट सबाई दिसे फ़ानी, अन्त रहण कोई ना पाइंदा। गुरसिख सतिगुर दी दो जहान निशानी, एथे ओथे झण्डा नाम झुलाइंदा। जीव जंत गाथा गा पढ़े कहाणी, कलम शाही काग़ज़ बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख आपणा आप जणाइंदा। गुरसिख वड्डा वड वड्डा, वड्डी वडयाईआ ।

गुर सतिगुर सदा सदा बाला निक्का नढ्ढा, शब्द रूप नज़र ना आईआ। बण सेवक गुरमुखां फड़ फड़ बाहों राह पाए सिध्धा, दिवस रैण सेव कमाईआ। आप गुरसिखां पिच्छे करौंदा रहे निंदा, वड्डिआई विच्च कदे ना आईआ। जुग जन्म मेलण दी आपणे हत्थ रक्खे बिधा, पुछण किसे कोलों ना जाईआ। जे कोई सतिगुर कोलों पुछे तेरा गुरसिख किड्डा, सतिगुर कहे महिमा अकथ्थ कथी ना जाईआ। एसे कर के कलिजुग विच्च वंडाया हिस्सा, हिस्सा इक्को झोली पाईआ। दूजे नैण ना गोबिन्द दिसा, शब्द गुर ना कोई कुड़माईआ। घर

दा बिखड़िआ खेल आप नजिठा, बण विचोला फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे घर घर, घर गुरसिख इक्क वडयाईआ। गुरसिख सोए पैर पसार, सतिगुर गूड़ी नींद सुआईआ।

सतिगुर पूरा पहरा देवे आपणी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। गुरसिख दुःख अंदर जे होए बेदार, आत्म सुख दे सांतक सति कर सुआईआ। सति सरूपी तन पहना प्रेम हार, लड़ी आपणे नाल बंधाईआ। निर्मल जोत कर उजिआर, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। अनहद सुणा सच्ची धुनकार, रागी राग अलाईआ। अमृत आत्म जाम प्याल, तृष्ना भुक्ख गवाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, दूर नेड़े चले नाल नाल, सगला संग निभाईआ। गुरसिख आपणी गोदी विच्च बठाल, काल महांकाल धक्का देवे लाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला गुरू गुर चेला चेला गुरू करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। सतिगुर पूरा सदा गुरसिखां पिच्छे घाले घाल, गुरसिख हौले भार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरसिख गुरसिख रूप आप वटाईआ।

गुरसिख अंदर सतिगुर वड़या, नज़र किसे ना आइंदा। बिन पौड़ीउँ डण्डे आपे चढ़या, महल्ल अट्टल वेख वखाइंदा। बिन विद्या अक्खर पढ़या, निशअक्खर आप जणाइंदा। निरभौ हो कदे ना डरया, भय अवर ना कोई मनाइंदा। कर किरपा सतिगुर गुरसिख आपणे जिहा करया जिस जन आपणा रंग रंगाइंदा। गुरसिख गुर ना जन्मे ना कदे मरया, जन्म मरन दोहां विच्च रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन फड़ाए आपणा लड़या, पल्लू इक्को गंढ वखाइंदा। (१ पोह २०१६ बि)

**वासना :** ब्रह्म वासना खेल अपारा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। मन वासना जगत संसारा, नौं दर आप नचाइंदा। मन वासना ठग्ग चोर यारा, मन वासना कूड़ कुकर्म कमाइंदा। मन वासना होए हत्यारा, हत्या जगत वखाइंदा। मन वासना वधे हँकारा, मन वासना काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाइंदा। मन वासना होए दुराचारा, दुष्ट रूप वटाइंदा। ब्रह्म वासना मिले मीत मुरारा, घर आ के दरस दिखाइंदा। दोहां विचोला सिरजणहारा, भेव कोई ना पाइंदा। नेत्र पेख सरवण सुण जो भुल्ल जाए गवारा, तिस थाउँ नज़र कोई ना आइंदा। एथे ओथे ना कोई सहारा, फड़ बांहों गले ना कोई लगाइंदा। जिस भुल्लया नर निरँकारा, गुर अवतार पीर पैगम्बर वेले अन्त ना कोई छुडाइंदा। (२५ माघ २०१६ बि)

मन वासना दह दिशा उठ ना जाए बन्दर, बन्दगी आपणी इक्क दृढ़ाईआ। (२३ हाढ़ २०२१ बि)

मन वासना मेट के बन्दर, दह दिशा रंग रंगाईआ। (१८ सावण २०२१ बि )

**विद्या :** विद्या कहे मैं कलमां नाल गई विधी, सच विद्याला नज़र कोई ना आइंदा। अक्खरां विच्चों लभ्भदे तेरे मिलण दी बिधी, सति तेरा ध्यान ना कोई लगाइंदा। लेखां विच्चों लेख प्रभू तेरी कहाणी वड्डी किड्डी, जे खोजां ते निक्यों निक्का तेरा रूप नज़री आइंदा। इलमां वाले बण गए ज़िदी, नेत्र नाल अक्ख ना कोई मिलाइंदा। मज़हब पगडण्डी तेरी धार मिले ना सिधी, बिन कदमां पन्ध ना कोई मुकाइंदा। किसे समझ ना आए मुनी रिखी, जोग अभिआस

अंदर सर्ब कुरलाइंदा। तेरे प्रेम प्यार दी कोई ना पावे इकी, दूआ हो के एका रूप समाइंदा। की दस्सां कहाणी बीती, पिछला लेखा समझ कोई ना पाइंदा। रसना पढ़ के तैनूं लभ्भदे मन्दर मसीती, साचा मन्दर खोज ना कोई खोजाइंदा। शरअ वाले मैनूं रहे घसीटी, मीत प्यारा मेल ना कोई मिलाइंदा। बेशक मैं लिखदी रही दस्सदी रही वस्त मिले पूरब कीती, करनी तेरी समझ कोई ना पाइंदा। ऐहो जेही मैं कदे ना वेखी रीती, जो बिन पढ़यां बिन गाया बिन अक्खरां आपणे लेखे पाइंदा। हैरानी विच्चों होई ठंडी सीती, अगनी विच्चों अमृत नज़री आइंदा। सच फुलवाड़ी तेरी धर्म बाग़ीची, गुरमुख सज्जण सोभा पाइंदा। किरपा कर के अग्गे सभ नूं दस्स एहो सच्ची रीती, जिस रीती दा लेख लिखत विच्च ना कोई बणाइंदा। मैं बख्शावां पिछली भुल्ल कीती, अभुल्ल इक्क तू ही नज़री आइंदा। सज्जण बण के साहिब हो के सतिगुर अखवा के क्यों अंदर बाहर खेडणी लुकण मीटी, लुकयां तेरे हत्थ की आइंदा। बिन उंगली चीची अग्गों हट्टा दे परां गीटी, जिस गीटी पिच्छे आपणा आप छुपाइंदा। ओथे कलम शाही ना कोई रीती, लेखा लेख ना कोई बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक्क वर, जिस वर विच्चों अक्खर नज़र कोई ना आइंदा।

विद्या कहे मेरे विधाते, विध सोहणी दिती बणाईआ। मैं जुग जुग गई जगत समझा के, काग़ज़ शाही मेल मिलाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों लिखवा के, शहादत गवाही दिती भुगताईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गुरू ग्रन्थ वड्डिआ के, सोहणा सोहणा सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। कलिजुग अन्तम आपणे नैण बैठी शरमा के, अक्ख सकां ना कोई उठाईआ। विद्या पढ़न वाले बैठे आपणा आप गुआ के, तेरी सार किसे ना पाईआ। मन्दर मसजद शिवदवाले मद्ध बाहरों बहण नहा धो के, अंदर करे ना कोई सफ़ाईआ। मैं सारयां दुआरयां विच्चों निकली अन्तम रो के, उच्ची कूकां कूक कूक सुणाईआ। दाता साहिब मिले प्रभ उह आ के, जिस मेरी बणत बणाईआ। किसे अनपढ़ गुरसिख किहा कमलीए चरनी डिग उहदी जा के, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। तेरा लेखा बणावे फेर मिटा के, मिटी ख़ाक नाल रला के दए वडयाईआ। जो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा हिसाब मुका के, मुकम्मल आपणा हुक्म मनाईआ। उह दयावान आपणी दया कमा के, दर्दीआं दर्द दुःख वंडाईआ । इक्क वेरां वेख बिन लिखिआं सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गा के, गाहक तेरा इक्को नज़री आईआ । एह थोड़ी जेरी रमज़ चल्लया आप सुणा के, अग्गे चौदां विद्या लेखा सारा दए खुलाईआ । (१३ जेठ २०२१ बि)

**वेसवा :** मन इछया वेसवा नार चले नाल नाल, ना कोई सके पलू छुडाईआ। (६ चेत २०१६ बि)

पूरन मेला कृष्ना काहन, रूप आप अखवाइंदा। साची गोपी कर परवान, आपणे अंग लगाइंदा। अठ्ठे पहर वेखे मार ध्यान, आलस निंदरा विच्च ना आइंदा। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। पूरन पूरा देवे माण, दर घर साचे माण आपणा आप रखाइंदा। शब्द जणाई धुर फ़रमाण, लोकमात डंक वजाइंदा । साध सन्त जीव जंत पंडत पांधे ग्रन्थी

पन्थी मुल्लां शेख़ मुसाइक कोई ना सके पछाण, नेत्र दिस किसे ना आइंदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान पा पा दस्सण करवाण, हत्थ ना कोई फड़ाइंदा। उच्ची कूकण वड विदवान, हरि का रूप नज़र ना आइंदा। लक्ख चुरासी कलिजुग अन्तम घटा रही छाण, नाम अनमुलड़ा साचा लाल हत्थ किसे ना आइंदा। जगत प्रीती पीण खाण, आत्म तृप्त ना कोई कराइंदा। घर घर मनमत वेसवा नार दुकान, कूड़ कुड़िआरी सेज हंढाइंदा। पीर फकीरां भुलया हरि मेहरवान, जगत पनाह ना कोई सुणाइंदा। दीन मज़हब ईमान आपणा आप रहे वखाण, साचा कलमा अमाम ना कोई पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, पूरन पूरन मेल मिलाइंदा। (१ फग्गण २०१५ बि)

**ड़ :** ड़ाड़ा अक्खर राह रिहा तका, दर दवारे वेखे नेत्र नैण उठा, दोवें मुख पारब्रह्म दी बैठ कुक्ख, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। (१८ हाढ़ २०१४ बि)

* * * * *

जो सिख सवाली आवे। थिर घर तों ना ख़ाली जावे। इस तों परे नहीं कोई धाम। हाज़र हां मैं विष्नूं भगवान। अनन्त जुग में मैं हां रहिंदा। वाह वाह कहन्दयां सभ दुःख लहिंदा। सोहँ नाम मेरा सतिजुग जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान । (११ भादरों २००६ बि)

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋